

নির্বাচিত প্রস্থাবলী—প্রথম খণ্ড

নাট্য-বত্রাট গিরিশচন্দ্র ঘোষ প্রণীত

উপেন্দ্রোই সূথোপাল্যার প্রকাশিত বক্ষমভীলাহিত্য-সন্দিল হইতে শ্রীশ**টক মুখোপা**ল্যার প্রকাশিত

কলিকাতা, ১৬৬ নং বহুবাজার খ্রীট, 'বসুমতী-বৈহ্যতিক-রোটারী-মেনিনে' শ্রীপূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায় মুদ্রিত।

| मृता ३॥० (तुड़ है।क।

শঙ্করাচার্য্য

(धक्रमक नाउक)

গিরিশচন্দ্র ঘোষ প্রাণীত

(১৩১৬ বালু, হরা নাগ, শনিকার, মিনার্ভী পিছেটারে প্রথম এতিনীত)

উৎসহা

जानसम्बद्ध महाइत जानसभागदानी--

काली भन खार।

ভাই,

আমরা উভয়ে একত্রে বহুতার জীদক্ষিণেথরে মৃতিমান বেদান্ত দর্শন করেছি। তুমি এখন আনন্দধামে, কিন্তু আমার আকেণ—কৃমি নরদেহে আমার "প্রকাচার্য্য" সেখ্লে না। আমার এ পুস্তক ভোমায় উৎস্থ কর্লেন, তুমি গ্রহণ কর। अशांतर । গোবিন্দনাথ

শঙ্করাচার্য্যের শুরু।

भवदार्शामाः । नेपाराण -

ল্মুন্নন (পত্নে প্রপাদ), পান্তিরাম, প্রশতি, মঙনমিল্ল (প্রের প্রবেশ্র) হাবা (পরে হড়াগুলক), আলক্ষািরি, চিৎক্ষক, ভোটকাচার্য্য।

প্রকাচার্কার প্রতিকাদী । बामानीय के स्थापाप ক্র শর্বান্তন কুপ্তা। संगात अर्थकार धर धार्यक । क्याचित् हैं। श्विष्ठर । থাত বিব কাপালিক-গুরু। 5.4b কাপালিক। উত্যেটভরক 6124 MISI অভিনয় প্রপ্ত

* 6 3

हेक्क्सि हमात्रम्, क्रीम - बांदे, विकासत्त्रम्, उधानायनी है जनम्म, एक वोधकामाणिक छ ভাজিনাল চ্ডুটোলক, মধ্যা হাজাৰ জোপাঁচ ও হৈয়াণা, তুমারিল ভাউৰ जिमाला, उट्यान, मिटिनि वात्रमान, मध्यमिया यह सामारिक, सम्बद ব্যাল র মন্ত্রী, প্রাহ্মণ ও বেভান্থা, প্রভাবার (ক্রাবার পিছা) ও জংপ্রতিবাদী, কাপাদিকারণ, হতপ্রেভাণ, ভৈত্র,

क्यांतिव श्रायंत नियाः क मन्न वर्गातः, ्रांच्यापः वास्तीत मात्रमानीएए।

> में पर उपन हैं है। मि E sting !

> > 3

इ विशि

farent मध्याहार्याच बाजा। ঐ প্ৰতিধে ধনী। इस्ते ५ ४७३। क्रिड्ड इ. ५ है। मध्यपिध्यत्र औ (भाषत्रहे निस्त्रजी) भवता श्र काशालिका अमराम राष्ट्रांत संगीवर क्रकारा दे जिल्ली। कारका न्य देशकी ।

अस्ति। कि विका ७ अतिकामिकारीयर्थः । दशासदीवर्थः हकाविनीदवनी रेजनवीवर्थः परेका श्रीरमांक, इंगाजी, नईकीना, प्रांत्निकरांडा, निडिमिनीक अखिरपनिभी, अव्यक्त नाकात जन्नाल संगीतन, बलाविकातन, ः केशकर्भशै, चगकमात्र **मनि**नीन् त्रिकेशन् कामानातः । द्वतिष्ठि देखापि।

चरात्म, अका, रेस ७ अग्रांक त्नवरीं ব্ৰহ্ম হৈ সৰ্বজ্ঞ কিবা ওব অজ্ঞাত ভবনে 🗦 उथानि हदनानुद्ध कवि निर्देशन, द्विद्य (बोक्फ्यान क्यां नोन्द्र মাতার সমতা হয় যেন্তি বন্ধিত, তেমতি একান্ত আত দৈবতাম ওপ আসিরাছে মনস্তাপ করিতে জাপন, জগৎ-জনক, তব মেহ-বৃদ্ধি হেতু। নিষ্ঠরতা-বারণ-কারণ নারাবণ ব্রাহ্মণের বিস্থাদর্শ করিতে দমন— হুইলেন বুজ অবভাব; मुक्तिवरल भन्ना जिस्स द्वास्त्रमञ्जू শুভারার প্রেচারিলা রমেশ সংসারে। হীনমতি নরে, দেব-মারা ব্যাতে না পারে, বেদবিশি যাগ-বন্ধ রহিত ধরার ৷ - নিরীখর স্বেচ্ছাচার শুক্তবাদ মতে, পাপভাব বৃদ্ধি দিন দিন,---रक्क छात्र विसा गठ म्बन्डा मिनित । कत संव. डेशांत हेशांत. নেদ্বিধি করছ উন্ধার, সংসারে কল্যাণ পুনং হউক স্থাপন। कता। हिन्दा क्या कर करानिश्न, ধরার রোদন নিত্য স্পর্ণে কর্ণে নোর, ए। एवं यानि गतन मतन करियाहि दिन, भवि अत् गहरूत्र आकार, ক্ষতি ওছ তথ আমি করিব প্রচার मानग कनार्ग दर्ज ; तारे अक उन मन जानात वज्ञभ-প্রিয় গোরী গণপতি-কার্তিকের হ'তে -निएक महिन्द अग्रेम सामित मध्यादा । বাবে কার্ভিকের ভবে, रवेक्शरा प्रवित्रा शिकार কর্মকাও করিবে উদ্ধার। शति नरवर्त्र व्यक्तिक, नियात्रत्थ होत भगरपानि, कर्यकाथ करार क्षेत्रहरू ক্ষণ্ডন' দামেতে গালে হয় কৰাৰ

নিক্ষ থাতিবলৈ ধর জনে জনে,
বিদ্ধান থাতবলে, জালা প্রাণান,
বৈদিক নিয়ম কর পুনা সংখাপন।
ব্রহ্ম বে নিয়ম কর পুনা সংখাপন।
ব্রহ্ম বে বার্থির করিতে প্রচার
লইলাম ভার।
পিরায়ই হবে মম ধরার বিহার।
ব্রিকাসে বৌদ্ধাত করিব হওন,
দমিব হক্তগর্পে আছে যে বগার।
বাঙ্ ইন্দ্র, ধর নর-কাম—
রাজ্যের হরে রহ মম প্রতীকার,
ব্রহ্মের মাধার প্রভাগ ধর নর-কার।
বাঙ্ সবে মাধার প্রভাগ ধর নর-কার।
বেলগ্য প্রচারিতে প্রতিপ্রান্ত হর।
বিদ্যুত্বর প্রচারিতে প্রতিপ্রান্ত হর।

।। এৰ মহামানা, নীনাৰ আশ্ৰয় কর দান

(পট পরিবর্ত্তন)

मिलनी भाग मह महायायात वाचिकावन

(গীড়) *

প্রপন-গঠিত সমন বহিলে স্থান-গঠিত ছানে আই বরণ পৌক হরধ জাগাও মানর-জাগণ স্থানখোৱে আগন পাসরে কনম-মর্বে ঘূর্নিত নবে, বোচ ভ্যমা থামিনী খোল জড়িত স্থান-ভোৱে;

সহিয়ে যাজনা, থাজনা কামনা, অনুসদি নাহি
মানব বেদুনা অৱণে, স্থপন গোর হলতে

জ্ঞান কিবুণ গানে — , , নৱ শক্ষরে হেন গলগনে, জ্যাবিজে যোহ-নিজিত নরে, বিম্ল বৈদগানে॥

শ নৰীওকালীন দৃষ্ঠপটে প্রোচার্যার আ শীলা, ব্যান মাজুলোড়ে শ্বর মাতৃম্ব প্রত অবশ নিভাগ নিজ্ঞ শ্বরের পারপাঠ? তক্সতে মুক্ত ক্ষেত্রার্থ প্রিজ্ঞানন।

গিরিশ-এম্বারনী

প্রাম হাত্র

প্রথম গভার শক্ষাভারেত্র বাটা । # (भक्त)

ব্যোম সম্প্রিকেপন স্থিত ধ্যা, क्तरा हेक मध्यक्त भूव ग्रमध्य । নিয়ে তান কর্বে মোর আতে, कार कर का जनगैती सगर--"অলনে আগাদে কিলা হতু : াহীকাৰ বন্ধাও ভোষার।" ए दि (गोर मित्रक-निकाद) rated with the उद्देश कर मेर अन्ता अप द्रश्ति। भ मां, १९ मर पश्चिम विकास, शिष्ट्र मह विकि की वह অম্বর্থা করে, ল'ক্য আন দিলীকা, त्यत् विका रेन्छन्यतम् कृषि । 不能的 经利托 經濟 機構。 मंड । ग्रेपंस पुनः साध्य अवस्त ।"

(निक्लिके त आदम्)

लिलिश नावा, काम क्षत्र हाम का का का बाब रोत থাকার প্রাথার শারিকার স্থাত ক্রারের भाव तहामाद एरियम वक्ताम मा अप्रात्ता आरोपे । जामान निताहर केत्राम कार्युस्म । क्या दिएककारण महमहाराती ५०। किस १३ नाम करेरा बद्धानातव निकृष्टि शूच काममा करा-ब्रिंगन कार्र कृति एसि अहेबल शहरे कता শ্ৰহা কাৰ্ছ : তাৰ মুদ্ৰাৰ সময় ভূমি লান্ড ছিলে, तिस वर्ष धिकिक्य कर गि, भागांद ६१७ माद्र छिनि 'यद्रातीम कार्राहिसाम, नहें बाहार अ'रक वामान गमाः छेष्ट्रम सन्, निक्रशन्त्राचे सम हिन-व्यवस्थित १८६० कृति ८६३ स्टब्स् लायाम-भानम করোন বাবা আমি ভো তার সে আজা "शानन इस्ट भारति द्वा

 विशेष्ट्र अस्तिमके असर्गक किल्ली से असम अक्रास्तिक । ।शनः। अकरन बहै औरमा नाम् कार्याति ।

नेवर । दर्ग में -दर्ग के जना निवास के विदेश अमीम सद्भ जामि এक वरमंत्र तक्षकाम अभि উক্তায়ণ কর্তে শিখেনি, স্থিতীয় কর্মে ডোমারে विवाद शहान संवन के दि शहान कार्य के विवास रामि क भीत्र राज अनातात्र वानकतंत्रकी सामि र'त अनिर्कामी। भारमना । करहे हैं। उन्होंदे লাল্ম প্রাক্তর, ডোমার শিক্ষার প্রকর্মের সেবা गडारेन करविष्ठ, एकवं कुलानीएंड मार्थ इसकि शह जान बहनीर करणांत छिनि जानेश दंगीदेखा ानन करताहर । पूर्वि चामन जनमी, गुक्तह তেমোর শিকাপ্রভাবে। মা গো, বই ত্রীভার ट्यामान शांत्र करतीत शर्क अमाध्यक्त करत्रि । विभिन्ने। वाना पूर्वि से निनंतिके अध्यक्त शास्त्री, Cefula वांश्वामण्या स्मिश्च त्यामे विकास-तांत, नियदास्त्रांश लक्ष्म नाहै, वार्ड बानाव

गड़रे का नक्षा भाग इम । नंकत्र। या लां, कियां क्या नामान विवत्र-

क्षत्राह्म ३ र्रीह लहिन विचयत अङ्कोश किया है नियमक्रिक कित्र हिन्दिक माधाम ত্রমান সভার মৃতির। জনমা বিকো মধ লোব সানুসাৰ কলিলভিবেন ভা সভূপে স্প্ৰা— भीषा । विक अति। प्रता बार्टी कर्रावेस संस्थेत सीविपने. कि कोरान कोवा विवयन्त्र राष्ट्राधमा ह हर्द्धा कांश्रम माने मान्य क शहाते: ংকৰ ব মৃতিকাল মতুৰ্থ আশ্ৰম। हिहि सा द्वान राजान अहर । माब मता मारा, নেই নামি করমানি, জম্মি, কুপান--বানি চলে ছা দান্ত সাক্ষা

निर्मित्री । १२५। नादवा तकात -का ७/३ विरुद्ध वस । श्रीण । राष्ट्रभिन, अरबाद नदम कृति कृतिभनी हे धन भाउरीना सना भेनी कार्य -**एत** इंग्लिपूर एक्टि अभिने गरून दाली , माक्षा करा प्

किन क्षेत्र अपे ८ के अधिक **भवत्व ?** शक्त । अनक मर्गाट, याचा अमीएक सुनि केकिनिका भागित स्थादन ।

- জন্ম ভাষা

পাধ সন্ আছিল সৈতাৰ। বাহে কুমান উছিলে, ইন্ন উচি বংশনা বন্ধনে সন্ধন । ইন্দি পথা নাড কেই যদি, উচ্চগতি ইন সে বংশেন, সেই শহা-প্রাথী পুত্র তব, তাহে তুমি বিশ্বদান করো না জন্মি! (জনগাণের প্রবেশী)

জীগ। ইয়া মা, জুই নেন চিমজে মজা মাগী, বাবা-ঠাকুর মরা থেকে কিনেতেটা খেরেছিন, কটি ছেলেটালেও সেই ধারা শিপুঞ্জিন, এখানে গ্লান বিজ্ঞা বিজ্ঞা ক্ষিয়া, এখনো থেতে দিন নি।

विनिष्ठे। यानी कश्याधः, मक्का कि नत्य त्यादः,— क्या। कि नत्य त्यादः,—कि छ्ला है अक्षेत्रं वाग्रेगा त्यांन निष्ठ व्यापता अमित्य थानाने त्यां। शेल हैं।जोन निष्ठ हैं।जी त्यां करता हो कुन्। विभिन्ने। बाना त्यान्—नत्य मिन्नाम जाता।

প্রধান বিধান বিধান বিধান বিধান করে। প্রধান বিধান বিধান করিছে, বলু না কেনে স্ক্রাপ কিনে প্রধান করিছে, বলু না কেনে স্ক্রাপ কিনে পেবো। (শক্তরের প্রভি) আর বে ভাল, হাটে নাবো, ভাল ভাল স্ক্রাপ কিনে এনে পেবো। নে রে, থাবি আয়, চলু মাগী, দিবি আয়। ওঠ পঠ—শাবি চলু।

শক্ষর। জগ দাদা, এখনো সন্ধাবিক্ষনা শেষ হয় নাই।

কগ । নে-তথন থেরেদেরে সারবি। আমরা সূড়ো

মিক্ষে, নাহার বেলা হ'লো, বিদের পেট চুইচুই কচেচ, আর ডুই নাস্নি। তা ছেলের দোষ

কি বল, এ মাগা সব শিথোয়।

শকর। না জগা দাদা, বলে, ব্রাজনের না সন্ধান সেকে থেতে নাই। মা'র এখনো দান হয় নাই, মাজান ক'রে এসে অর দেখেন।

ঘণা। এখন ছ'কোন শব চান্কে যাবি না কি পূ
তা যা মর গা! এই ছেনেটাকে শিকের টাজিরে
উকো। স্থাত যাবে যে, নইলে দেবজুল-কেনন উপোনী রাখিন, আমি তিনবার এড়া ভাত তেতুল লকার চাটনি জিলে পাওরাভুন। দেবজি সাাজালা বারবি নার, নে নারী
প্রেম্বার এই মুরে ছ'ণ্টি জল হাডার দে

বিশিষ্টা। না বাবা, নদীতে অবগানন করবো।
কর্মা থাক যাবি, রোলে পুড়ে মরবি, তা আমার
কি বি আর, ছেপেটার বেগে ভাল চানা দিরে
যাবি আরি।

বিশিক্তা। আমি উদ ক'রে রেখে দিরেছি, 'চুমি বাবা থাইও। অংকার বাবা দিবের মাধার জন তেনে আদতে দেৱী হবে।

দ্ব । ব্ৰেছি – ব্ৰেছি, আজ বৃথি কি পাল-পাৰ্কণের দিন দাঁত ছিরকুটে খাক্বি কিছু খাবি মি ! ছেলেটাকেও ভাই বৃধি শিখুছিল ?

বিশিষ্টার প্রস্থান।
নে বে বে, কি ল্যাখার্গড়া সাহ কর্তি কর,
তিনরে থাইছে তবে নাওয়া থাওয়া কর্ত্তা।
শীণ্ডির শীণ্ডির সেরে নে, থেছে দেন্তে ইত্তিছে
হাটে থাব। তুই সন্যাস চাডিস্ তো, শৌর্
জিন্তে গ্রাথ ভাল সহ্যাস কিনে আনবা।

শকর। এনেছি কি কাজে - কিব। বাংক বার দিন, ভীগণ তরক রাজে থেলে মহামারা, জীবকুল ভাসমান মহা অন্ধকগরে, ঘোর ফেবে জল-মজুল খুবিপাক মাবো। লম-বলে রাহ ভূলে কলাণ না চায় পার বার ঠেকে পান প্রনা দেখে, শিবেও না শিজে হার!
মহালম অভিক্রম করিবাবে নারে, জেনে ভানে আছি বন্ধ আগমান পামরি।
অন্ধকারে কও দিন র'ব— কও দিন সব — ভামে লম গাড়তর ক্রামে
বাই—বাই, বেথা কার ভিল নাই রব, হাইাকার ধানি হার কঠেই শুনিব, গ্রেপিশ—ছোম্বিধ মায়ান বকন গৃচ,
ভীবকুল ব্যাকুক সংসারে।

্শিখাৰ প্ৰথমি শাল-পুতে হড়ুতে ইচছা হচছে প্ৰথ বাদ্যমি বুড়োকে বলৈছিলুন, জা ভন্তে গ্ৰহ কচি হচ্চেকে ল্যাখাৰ্থ্য নিবিভ নি, মাধ্য বিদ পাক্তৰ নি

भ (तमात अवने) म तम्। । कृत्रमान् विलित कि प्रत्य । या । व्यक्ति स्त्र मन्त्र क्रास्त्र । १००० । মানী, ত্রের ছেলেটা বন্তেছে কি জানো, "গাই
আয়ায় ভাত্তেছেনু" আমি গাণী মিলেন মাণা পুঁছে বন্ধুম, তা জন্তে নি। ায়ু--০০ নি
গাণাপাড়া শিষিও নি, এখন মাঠে গামারে নিয়ে
কাই, লাচুক কুঁছক, ভ্রের ছেলে লাগিপাড়া লিখিও নি,—তা মাণীও বুড় ড্রাড ক'বে পুরণে বলে
আর মিজেও বুঁথি নিখে নলে। এখন জেনেব
বে মাণা বিশুড়েলে, সামান বের কে প

त्रमा । ति इस्स्ट द्व - कि शतह

ৰগ। ওগো মাসী, বৃদ্ধি প্ৰথকে কো জান্তে।
প্ৰাটী তৃটো হোৱা কপাৰে না ছুলে বলে
পিলাম দ স্পৰ্যভাৱ --তাৰ্কেছে, আনি ধাই।"
এই ওেলেন্সনে লেলে কানে মানী, স্মামাৰ মাৰাম্ভ শ্ৰিলে ইণ্ডে কচেন

্রেমা । 'ও রে বাছা থাগগে লি বে গাংশেনি । জাব শুন্দি ৮-- ঠাক্রগো তথা বিদেশে, বিশিষ্টা শুন্দির মানা লবসুম দে, দ্ব বন্ধাবেলা শিরের মন্দির বাল্নিন লালাগুলী প্রের বন্তে কি জানিন্- লালাগুলী প্রের বালন, ভাই ক্রি--- লাল্ড ও দিনি, আমার গাই হমেছে।' শুনে, আমার মাস্লান গোন, লমুম্-- "ববা তো লে গোলাগুলা ক্রান্থী বলো কি আনিম্--ক্রিন লি গোলাগুলী বলো কি আনিম্--ব্রে ও দিনি মানাবে আমার পেঠে হাওলা দেনিবেছে।' বলিবন্দি ব্রুগেণা ক্রিবে এলা---

उन्तर कार्यक मनी, हार्यन

রা। পুই ছোঁড়া আবিংর আবো, —রামী করে নাই, চি ং'বো, গাঁচ জা কি আর মুধ বেগালো কেং।

भन । इस १९६३ हो इस १५ ते हैं । जो कि मामी १

সান্তি প্রতি গ্রান্ত্র করেছিল। মাণী পুরারে প্রারে নি এই পিকের ফ্রান্ত্রে গ্রান্ত কোল প্রতিক্রিক্তা আজের করেছে তা আদি এত প্রতিক্রিক্তা প্রতিক্রপোঁ, শর্পিন চুনিন প্রতিক্রিক্তা (১৯৯৫ক (১৯৮৬), ব্যাহানিক ক্রান্ত করেছ বিশ্বেপ্

यात्र । जो मांसी माँ एक्ट्रेगात है। १८०**०, छे**लेक्ट्र**ास ्षि अंदर काएन** १ বয়া। তুইও ও ছাউড়ো তাদুদের উত্তিবের হাউড়ো হরেছিল্ কি না।

জগ । কানি গো, সামি কি কন্দ । আমার তেত-পাষ্ট্রির কাজে যদি একটু এনিক এনিক পার তা হ'লে আমার কনেগুটা দিবে দিও।

রমা; ত্ট আর কি কর্ননি ? তোর তো ধন মনে রাছে। ছেলে যে দিন হলো,—হলে। কুনো থিকে, হলো হলো মাণী ম: ছেলে দেখতে এলো না গ বাত প্রাথে কেট চেনে বে, কাথেকে ভারা এলো ? আর এক মাণী একেছিল—ভা ধেবেছিনি ? ভার দকে পাটা আইনি ইটীন

ক্রণ। রা হাং— এই মাণীরেক কান্দ্র যাত্রেক দিকে। প্রানুষ

বা । বটো গোজনকণে মণ্টি যাত দিন বেশে গাৰে, ছেলেগুলো সান্ধানে বাথবো, বেৰুছে তথা লা। কুইও বাজা মাজে খাটে বেশী রাজ করিব নি

লগ। ও গো—তই 🙌 নে মানী কাসছে।

কা। তক পাঞ্জে দাড়া—এক পানে গাড়া, মাণীটা বেবিয়ে যাক, কি তালকৰ হয়— কে জানে, ঠাকু গো মৱবার দিনও গুমেদি, খাশানে মাণীরা প্রস্থিতিব। (জাবে দুষ্টিনিকেপ করিয়া) ভোগের বাড়ীর ভেতর দিকে চলোঁ যে রে!

ছণ। দিহোও, তামি দেখে নিচি। [#] হই
ত্যান্ত্ৰে মাণী বে হই ! শ্ব বিগে যে চলেছিদ্ ?
তোৱা কে ্টিন বল তো? ছানিল বেটীরা,
জগা এখনো মনে নাই, তোদের ভিরক্টি চল্বে
নি। ছেনেটার মাধা বিজ্ঞাতে এগেছিন ?

भग । ज्ञान हो। एथे अभाने त्यस्क यो, महेत्से कान्छ निदंद रजांत्र मोक त्करहे रतस्ती।

। रवामात्रा अमिनीनात्वत बिछ)

বেল।তি নিয় মাগা পেজে গাল বাজালে হর বুৰী। মান-অপ্যান নমান তো তার, তার কাছে ২৪ কেট দোষী।

এত তো ভূবে গাকে, তেতে আদে বা জান ভাবে, বিষয় ভোলা' ব কে কম, নাও মা বেচে না খুনী মা কেলে দেছে, াৰ বেচে, ভাল মন্দ নাই চঁ স ৰা। হই আমাকেও লাচাৰ গো। বোম ভোলা বোম ভোলা— (১২ লের প্রস্থান।

विजीय गर्भाष्ट

মনীতে সাম কাঠার বাইমার প্রা 🗸 (ब्रमा, प्रका ७ पन्धार विनिष्ठोत्र छार्च ।) अयो । करमा मां की - भरमां मा, अमम शास्त्र शास्त्र लाख रहा मा उतिहान समीत बाद व वर्गा ह्या वर्गा ना रे বিশিষ্টা। ভোষরা খাও বিটি আমার **পরীর** ক্রেমন ক্রডের। 👵 (পাস্মধ্যে উপবেশন) क्यों। तरा मिनि, दलायात्र विष्ट्र आवनी जाता. वार्ति ल । जाने पहात्व हाल क्लेशांव योद्य १ वह आगामत हर ३१ १ १५०० वक्छी वाप्रना तम मां १ और ८१ इंग्डा । जिस भग तथा (श्रुष्ठ ग्राह्मिक) - आमि श्रुष्ठ श्रुष्ठ (जेल अस्म धूम भाषान्य-एटन श्रम । महामी १६५ भर्चत्र वाली कि मां, इत्यत् रहत्व तत्राणी स्टब त्वितिष्ठ वात्य, क्रिन ट्टाच दीष्ठकन या । असा - वामा त्वना न'रइ लाम माहेरन मा कि ? বিশিষ্টা: না দিদি, জোমারা এগোঙ, জামি আর हमहरू भोड़ि मि। (17x4) शका। 'भ कारे, अथ लाभ-मिछा मिछा जिल्ली लाला नाकि? र्ड--र्डे : ७ मा, कि कहाना ली, कि श्रा विभिन्ने। नारा, मिलासब निवि मिए। किन इ'रब 'मिट हाप्ट ? आमि अ अन्यक्षिती, जामात षासात निष्ठ दिन दिए निष्ठ १ सामि कि ক'নে প্ৰাণ খববো! স্মামি যে বাছাকে এক

রশান ইয়াগা—এ কি সম্ভ স্থা বিকার ক'লো নাকি? নাণী কি ব'ক্চে লো। (জভাবেগে শৃত্যবের প্রবেশ)

থেট্ৰ – ছোৱা কোনা থেৰ–---

मध्य मो प्रन्थरण जिल्लाम अञ्चलात्र त्वि । ज

कि। अकि। शाना, व्याधान (हाम काना

गुक्त । सा, मा - अठी मा। गिनिहा। यात्री, भागा - यामात्र भूद्ध ए।८ - अभाव भूकानाय।

শ্ৰুৱ দ এই বে না—জানি তোমার কাছে এরতি : বিশিষ্টা। কে বে, শক্ষা বাবা বল জানায়

লার। মাত্রেমি না সম্মতি পিল জামি কেম্ব্রির স্বাধ্যে প্

क्रमा। प्रथ प्राचि शाँचा कारकन ! ताल ५४० . जिमादा में मारत अव्युव कार कान बनाव प्रत्याक हिन्द मां । अवन क्यल प्रविक्त, दार्च प्रकृत में ने क अधि । अवन्त्र अम्बर्क हिन्द मा पावा।

শক্ত। অপেনরো আগিপার বক্তন, আপেনাদের আগীকাদেখা প্রোতস্থতী আনত উপত গৃষ্ঠী জন্তে, আম্পনত বাড়ীর নিকট নিয়ে আর্.— অনাধানেত আ আগার অব্যাহন থান কিয়েও প্রিরিব।

र्शिक्षा । तम्बिक्ष्मं त्यां क्ष्मंत्रिय न्यदे क्यां का कि मन्नामः निष्य वर्णद्वाः यादा । व्यक्तिः व्यक्तिः व्यक्तिः क्ष्मं व्यक्तिः कि त्या, यादि व्यक्तिः वर्णद्वाः क्ष्मंत्रः व्यक्तिः व्यक्तिः वर्णद्वाः निर्मेषः वर्णद्वाः

ল্লমা। ইয়া বানা, ভাই কলো। তেখিন্দ্র গাড়ীন দোলের কাড দিলে দদী দিলে থেও, দাঁ হ'লে আমাদেরও ভাটে হবে, নাইতে পাল্যো।

(জগলাপের প্রান্ত্রী)

জণ। এখন যদি ই্যাভালি, তোর কান্ বাব' বাথে। অপথাতে না ম'লে ভোর চুলনে নি, লয় গ্রাহে দাদা আয়, আমি মাকে বীরে ধীবে কিন্তে ধাই। শিস্তব ব্যতীত সুকলের অস্থান। শক্তব। এস দেনি স্থিতিক পিটি শস্ত্রকারিনি,

कीव श्राण मुक्काणवाति।,

श्राण हुणक-मिनिन, गाणक गाणिकी,

श्राणी श्राक्षणी करेगा करणा व्यापान--
श्राण श्राणी करेगा करणा व्यापान---
श्राण श्राणी हिंद का का विज्ञी ।

वत्राण श्राणी श्राणी श्राणी विज्ञाली ।

श्राण श्राणी श्राणी श्राणी हिंदा के व्यापान ।

श्राण श्राणी श्राणी श्राणी श्राणी ।

श्राण श्राण स्वापान श्राणी ।

श्राण श्राण श्राण श्राणी ।

श्राण श्राण श्राणी ।

श्राण श्राण श्राणी ।

श्राण श्राण श्राणी ।

श्राण श्राण श्राण श्राणी ।

গিরিশ-এরারলী

को र एक अन्तर महोई श्रम् क्व। ध्यमा मग्रामित्रं भी हि भारत, ভূমিনীর সন্ধাপ বারিতে, ছেদি শাল ভাল তমাল কানন, রকা করি দেবতা ভবন — পিঞ্গণ-স্থাপিত দাসের; এন মুক্তা কবি তথ্যক তথ্যক প্রকামা ! भ पाड़ी,--मध्याति विना शंभ त्रय क्यूडाले ! 'छरे ा- - ७३ त - - न्यवस्त व्यक्त--क्रशास्त्री जलातम नाहिश सातम সার্থক ীবন মম, नाज्याया--क्रमणीय म्याधक कारवामिनी वादि। (करका कि विशे) ना गां समः (गांत्र गन्ति भिन्न भन्नि, ছবল-চংলিণি, সাগ্রগামিনি। পুরুষ্টিলে, মহাপদারিনি, भामको असिमी १६ विकातिन । 西南西河 图图-月代报·安约(开) नभाष्ट्र १तिन, अव्हर वर्गान् । কিন্তালি দিয়া আলো আলো শস্করের গমন এবং পত ৷ এতিখিনী ভাষাহিতা হওন 🗀

কৃতীয় গৰ্ভান্ধ

শক্ষরাচাশ্যের বাতীর সভ্য : মহানারা উপার্থই (বিশিধার প্রয়েশ)

विनिहा। मा. १६भि तर १ पृषि शकाकिनी दशा व'रम बरसङ स्वर मा १

ুমছা। মা, কামি জাল্ডগৌনা, পতি-পবিহ্যকা, ি, স্থামাৰ আৰু এখান দেখান কি ;

বিশিষ্টা। ক্রেমার স্থলার মত বেশ দেগটি।

্যাশ্যা। তেগাব প্ৰবাব শত বেশ দেখাত।

নহা। আফাৰ স্বৰা বিহুৰা কি ৮ সামার বা ব'লে
ভাবেল। তাই। হখন যে অবস্থায় পড়ি-ভাবেল। কাই আৰুপ্তার পাকি। আমি সংস্থারে এক বক্ষ

करें नगीत जाहीन नाम पूर्वा वा हूवी, अकटव 'मारनाज़ादे' मारम श्रीविक।

- বিশিষ্টা। স্থা, তুনি এই বুন্তী, তোমাই তো পুৰে।
 গথে বেড়ান ভাগ নম মা, লোকে যে ত্যোমার
 িন্দা করবে।
- प्रश्नी आभाव आदि कि आहि भा, आभाव निकी विच १६ १६ मा । आमि काछि तम आहि, ना आहि ५० ना आछि। आभाव भक्त अवशाहें महेर्ड १८।
- বিশিষ্টা। এটি তোমার ক্ষাপ্রচ কা ক্রকে, হচি ইঞ্চা করো, আমার গৃহে খালতে পারো।
- মহা । কথা ক'বে গুল লাকু পাকু বো। কিছা গা, সামি বজুই চক্ষা, কথন কি ভাবে থাকি, আমিই জানি না। পতি রমনীন এক্লাজ গান্য, সে আশ্রু ধার নাই, ভার দুশা কি, তা তো ভূমি জানে। না!
- নির্নিষ্টা। জাজা মা, ভোষার যত দিন ইচ্ছা হর, এইথানে গাকো।
- মহা। মা, তুনি আমান হাল দেবে ? আমি আহর-হীন। হয়ে বেড়াই। আমান হাত নাই, কুল লাই, মান নাই, অপমান লাই, আমান্ত স্বান হারছে, গামান্ত হান দিলে লোকে মে ভোমান নিলা করবে মা।
- বিশিষ্টা। নিশা ২ম জ্বে, অনাথাকে আশ্রহ দিছে শাস নিশা-ভর করি না। এমন কি, দামার প্রের অল নিয়ে অনাথাকে দিতে আমার পতির আজা।
- নহা। আমি যদি কোণাও চ'লে যাই, ছার পর একে আমায় আগ্রহ দেবে গ
- বিশিষ্টা। হাঁ। মা, তুমি কাল কোপাও না আলার পাবে, এনো।
- নহা। তবে মা, অন্তি এখন দুট, আবার জামুরো। (জগদাণের প্রবেশ)
- লগ। হাঁ। হাঁ—ছুই যা, তোর **শার আন্তে**. হলে নি।
- িশিষ্টা। বাবা জগনাণ, ও অনাথিনী, ওকে কেন কড় কণা বশ্চ ?
- ছগ হা হা । এ সই ২টে। বেটা ব্যক্তপী, কা ন এনেছিল—অমনি গেল্ডা প'লে আটি। ইড়ী নিৰে। আৰু নাবাৰ চহুক'ৰে শাপা প'ৰে গেৱছেৰ নউ হৰেছে।
- यहा। बावाः दूर्व ा कायात्र क्रांमा ना कामाव

চিন্তে কি আৰি স্থতের বউ, স্মান থাক-ত্ম। তে আমাধ চেনে, তাৰ াছ তে। আমি থাকি না।

ইগ। শেলে শোনো—বেটার চংগ্র কথা শোনো বেটা হাই গোবে, আর বলে চিন্দে নামনে লাড়ার না। কা'ল কৌ কি ক্রাণ— আমার ধেই ধেই নাচা গ।

বিশিষ্টা: মা, তুমি কিছু মনে করে: না, ও কেলাল গোলা মানুষ, কারে কি বলতে কি এলা! তুমি এলো বাছা, তোমোর কলা ইচ্ছা ১৪, সামার কাছে এদে পেকো!!

মহা। মা, যদি বাধা থাকি, তোমার কাটেই পাক্ষো।

महामांशिव अहान।

লগ। মা, খুৰে ৰাণা ভো যে তে প্ৰয়। ভাশ্চি, ননীটে নাকি টেনে ফ্ৰিছে লিয়ে এলো গো!

(শঙ্করের প্রবেশ)

শক্ষর । নাজগালাদা, মাইছে। ক'বে এসেছেন।
জগ । উত তোরে চিন্তে কারপুন, তা আমার
চনাচিনিতে ক'জ নেই, তোদের থেয়ে মাজ্য,
বভ জিন প্রতি, তোকে ছোট ভাইরের মতনই
দেশবো ।

শক্ষর ৷ ইটা পদা— তাই দেখো ৷ জ্যা : জানি গামারে গাই ৷

ু সুৰুজেই জ্বন্থায় ৷

চতুর্থ গর্ভাক্ত

শ্বরভারের বাটার সমুখ্য নরী। শ্বর ।

শক্ষা সংগার-বাসনা,
আজি দৈরাগ্য এভাবে এ শরীর জ্যক্তি
শীম হও শ্বভন্তর।
ধরি গোৰ কুন্তীর আকাত, স্বরূপ ভোষার,
ভটিনী সন্জিমধ্যে কর অবস্থান।
বন্ধপি আমারে হের এ সংসারে—
করি আজমণ, সন্ধিনে করিছ নিমগ্রন,
পাল প্রে প্রাণীশৈক্যাহ নিভা ক্রান।
কিন্তুপ্রি পার্লি করিছে নিয়াই আল্লান,

हाकि को ग्रह्मानि चित्रिक न्यान ।

पूर्व-मुश्रांक्ट्रद —

व्यक्त स्मार्ट केन्न चित्रिक न्यामार्टिक,

स्मार्थ क्ट्रिक क्ट्रमान । (मनीरिक क्ट्रम्बर्थ)

(सुन्न स्मार्थ क्ट्रमा क्ट्रमा क्ट्रमा

রম। । লোকে তে বংগ — নলিওত হেলার মুক্টে কার পাগদের মুগে দৈববাদি হয়, দেখছি তো তাই, জাতের সভিয়া ছোলটা ক'ল বংল কেন নদীটা আমার বাছীত পার-গোড়ায় তেনে— নিমে বাবে।, ভাতেন তিক।

গন্ধ। আমালের কর্তা ক্রে—আমন হয়। ক্ষমন আনেক নদীর প্র কেরে। নদীর মূরে নাকি চ্ছা পড়েছে, কাল্কের লোর বৃষ্টিতে এই দিকে অস ভেম্থেত।

রনা। তিক ওদের লোক বিজে লগ ভাওলো ওলের প্রদীনার বিগ সাত্তরের মন্তিরের পান বিজে থেকে এলো, প্রাছা আনে মন্তিরতৈ ভূবে বেজো। এলের ভাই তিক বৈবহটনা মনে হয়।

গঙ্গা। (সহগা নদীগার্জ শঙ্করফে কেনিয়া) ও শুশ্ব - ৬ শঙ্কর ৷ জলে নামিস্ নে কুনীর দেখা দিহেছে, ও বে উঠে আয়— উঠে আয়—

শন্ধর। (জল হটতে) ওলো আমান বৃদ্ধি কুনীরে: ধরেতে, আমার মাকে ডাকে!—

রম: ও কে সর্বনাশ হলে। রে—সর্বনাশ ক্রানা) শকরফে কুমীরে গরেছে।

(विसिष्ठोत्र (तर्ग अस्तम)

বিশিষ্টা। বাবা নহাদের— রক্ষা করো—রক্ষা করে। শবর । মা, সোমায় কালে ধরেছে, সামার কেউ রক্ষা করতে পারবে না, তবে যদি আমার ব্যান্তাহণে অনুমতি দাও, তা হ'লে আমার রক্ষা হয়।

বিশিষ্টা। ও গো, নামার দর্কার নাও, কেউ রক্ষা করে।

শক্ষর। মা, রক্ষা নাই, অনুযতি দাও, বৃধ্য কো জ্বলে অবতরণ কচ্ছ ? এই দেখ, বানাই চুক্ জ্বলে নির্মে বার্ক্ত। যা, অফ্টেন্টি নাও, স্কুল কুজীর এইবার গভীর মধ্যে নিসা কুমোল

तिनिर्देश कामि महमार्थ विश्व कार्य प्रकृति । विश्व स्थाप भाव -

THE CONTRACT STATE AND A PARTY

भाभात श्रीकेटरोत करंबरह । मा छा, श्रीड श्रान দিয়ে অশেষ মন্ত্রণা ভোগ করেছ, আন্য ক্রেণে गालम-शामन करत्व, बाक बायात केवन गांत ক্রলেন শা, যে মহাপ্রন্ধর স্মন্ত জন্ম পত্রিকা দেপেছিলেন, তাঁরা লেসার সম্মরে আমি অসায়, তইমার প্রকাশ কলাছারে। কিছ ঠারা প্রশান বলাবলি বজাহতেন, ष्यामात डीएम्ब वाह्य कर्नाभाष्ट्र ३१ । ३३५ আমরে অষ্টবর্মান ব্রাল ব্যুক্তিলেন, चांच उमरे अहेबर्व श्रुव ; किंद्र संस्टान स्टार्ट्स क्रिन, पनि प्रहेपपदि आमि समामाध्य करे. আনাৰ প্ৰমায় বুলি হলে। আদি এ সং দ अवग्र श्राहे श्रमः श्रमः द्यारात निवं সন্ত্যসন্তাহণের অনুস্তি প্রতিদা কভেছিলেম। পুল্মেরে ডুমি দে অধ্যাত দিতে কল্পেন। ছিলে; কিছ মা, মাত প্রত্যে লেলে, মন্ত্র কাল কন্ত্ৰীন্দ্ৰণে আন্তঃ নৰ অন্তঃ উপাধিত ইয়েছিল। স্থামায় ভূমি সমুম্ভি দান ক'র

বিশিষ্টা। বংগা, বাত হাম চুল্লেন যে, কাননা আগেলা হান কালা হান ব্যালি বিশ্বিত নাই। ব্যালি প্রকাশনা করে আনা ব্যালিলার করেছি। হালে কালা করেছি। হালে কালা হালে করেছি। হালে করেছে সকলেব প্রকাশ প্রালিলার করেছে হালে করেছে হালে করেছে হালার করেছে হালার করেছে হালা ব্যালিলার করেছে হালার করেছে। বালার করেছে করাছেন বিশ্বিত হালা হালার করেছেন বিশ্বিত হালা হালা করেছেন বিশ্বিত হালা হালা করেছেন বিশ্বিত হালা হালা করেছেন বিশ্বিত হালা

िल्हावत अञ्चल ।

পশা। ইটা লো, কিছু তো বুমতে পারবুল না, মানা । অথমতি দিলে আর ক্রীর ছেডে দিলে।

ন্ধা। বোন, সকলই সাশ্চগ্য। আজ আমান বিশ্বাস ২চেচ, শিবের মন্দিবে যে বিশিষ্টার পুরুত প্রকৃটা জ্যোতিঃ প্লানের করেছিল, এ কথা সভা। শন্ধবের সকলই আশ্চায়।

প্রজা। হা ভাই, দব আশ্চর্যা আশ্চর্যা কথা গুনাত পাই। বর্ষন জ্বন্যুহে ভিন্দা করতো, এক ফুনিনী আন্ধান কাছে ভিন্দা করতে হায়, বাদ্দী তিনটি আমগনী লিমে কাঁন্টে কান্টি গণেছিল, "নাবা, বিগাডা আমাদের দীন ছংগী। করেছেন, গছে মুষ্টিমাতা আন নাই,—কি পিরে তোমার সেবা করবো?" ভন্ত পাই, ছয়। বছরের তেলে ধলন ক'বে মা লগ্নীকে বৈকৃষ্ঠ

কো। তাৰ না নেখি, গুৱা মা**হে পোছে কি কচ্চে।**তাল । না তাল, আমি দেখতে পারবো না। আট ভাবে ছেনে দল্লাদ নিয়ে দেশত্যাগ করবে, দুখে বক ফেটে যানে;

বনা। সন্তিঃ পাত্য কি ওর মা মাগা ছেতে দেবে । প্রা। শ্রুমের মা প্রিয়াগ ক'রেও কথন মিপ্রা-কর বলে না, ব্যন সন্তম্ভি দিয়েছে বারণ কর্মের না।

বন। আমর। ভাই প্রাণ ধারে পারচুন না। মিব।কেপায় সমক হয় হ'তো, ঐ ছেলেকে বিধাব দিয়ে কি স্থিত্ন থাকা যায় গ

े डेडरपद अशान।

পঞ্চম গর্ভান্ধ শংকচার্ট্যের থাটা। শংক ও বিশিষ্টা।

শংক। মা, সোমার অর্থনতি পেরে মনে মনে সাল্যাস্থান্থ করাছ, কালরূপী কুঞ্জীরের ক্রণ হ'তে পরিত্রাণ পেয়েছি। সন্তাসীর একদিনও গুড়ে নাস অবৈধ ; বিদায় দাও।

বিশিষ্টা , ৰাখা, শুনেছি, তুমি স্বৰণ লাপ পড়েছ, নলতে পাৰো, কি উপাদানে বিবাতা রম্পী প্রন্ন করেন ? যানান্ত স্ত্রিকার প্রেষ্ঠ ইংগ্রেকি এড সন্থ হব ? সে কি তোমার মত পুরুষ্ঠ বলাদের অনুষ্ঠি দিয়ে প্রাণ ধরতে পারে ? পান হ'বে বাবে, ভাতেও কি মৃত্যু হবে ? মামি নি বাবা, কেন রম্পী এড কঠিনা হয় !

শকর। কব শোক ববিধার জননী আমার, ভগ্ন বরীরে, ক্ষরতাতা দাস্থি সম্ ক্ষর্থায়ী প্রভাষাত্র মান্ত ভীবন ; ভূত তবিধাং অধীন জনস্ক মেদ্বরত্ত শোক জ্বা আনন্দ বৈক্তব

কানীয় ক্রমন্ত গ্রিঘ্র। क्रमण्डाभी वा की रात अभितान अक् खिलिकिया दिनिशार जासन शाला, हमें ने खि जो विभागी जिल्हा शहात ! যাব গুড় তালি किंत लिए मा उन्त नामन शर्मा 四日期 伊日前一日中前西上了四面的事物之一 महाराम डांबर-१ यस १ শুমি ভাগাণ নী. मन्त्रामीरत्र शब्द शर्ष श्रीम । किन वालक महान भाग देशव एकामाय त्टरव भेड़ी 'अलिटम्'। तरन, দেব ৬, মণ্ডাল নিয়ন্ত রুশ্রেম সত্র রুক্তে তেন্সার। क्ष गढि गग, চেব সেলা কি সম্ভব আমা হ'লে চ শত গুণে মেবা গ্ৰাপ্ত হাৰ গৌ কমনী, ---ক্ষনা আপুনি भगशास्त्र शर श्रेन क्षारिकार उत्त । ত্ত্ত ত্ৰি সভিথি দেৱাছ চিত্ৰদিন, **अंडिशि में।** विभूग हहेरब आहे शुरहा। मान-भएषे পृक्षा १८७ वह बा निर्देख । ्रयहेक्द्रन कविएद अहन कार्य अव --राष्ट्रे करण सानित मा एलामांत महाता। বিশিষ্টা। প্রকল বাধা, কেন অবার সুচিনী जनगरक श्रीकृषा रहता है जाति (०१) । পুৰুৰ নিকট জনেছিলেয়, জুমি জোলালে ८८१५. स्वतं कार्या छ्यम संघप के छ जीरतव डिकातगायाय नियुक्त धाकरत। आणि हारिनी আয়াল তি ভোষাৰ ব্যৱণ থাকুৰে ৷ শুলং प्रान्तरहाउ द्वामीय मस्त्राप्त कि के वित्रहारण हा. क्रीं आगार मिका जामूल करकाहि তিবার জন্ম मक्राम क्यामा करहे, उल्लामान देल ब्रम्हमान्य है। तका उत्तर्गत भिराष्ट्र, डेंग्ड च्यापात अविम्हिल्ला छात अश्व करेताकर लाइ जागि विक्ष अस्ति, लागाई में विना-कामर कि, जिलाद जानांतरण जीवम निसीर ইকৈ পাৰে! বিশ্ব বাৰ্বা, তোমার টাম্পুর वार्यात सामित स्टब्सिन ता, वार्डिनन

প্রান্তের হলে এবি এনের কার্যান বেচাইকার্যা कांड किलेंग गान्य **শহ**র : ১৮৪৪ক জে এক মৃতি ধরতে তেওক। বিক্ষার জালি মাজার, ছেম কি সম্ভৱ নিত দেৱখালে ও ও এখাত হ গতা কহি দেবতার নামে, श्राव विवास करिएव अवन क्रमण्ड्य प्राथामा भार जानि चला ঘণা বৃত্তি তথ্যি আনিত্ত, विद्यान मा विवय करिक-राष्ट्रकाक अधिकिहा कहित मिन्डर । দিপ্তা দৰ কৰা গোডেফালি : অফারেটে ডিয়ে কেন্দ্র বিদাস আফার। विभिन्ने । रिक्रा एत करित एकमारण, डिप्यांच व शनमात्वा *कार्याह* जासाहः । য়ার এক ভিতেশক মার্গ ছেকি। भगवित्रा ५०% मुन साहस द्वीपानु । ्यार सा स्वित् শ্বশান সমান পুত্রে এফালিনী বন, নিজ হয়ে কহ ভাগ চিন্তা ভালেনাৰে গ আদীবন চিছা তথ মাতার প্রিনী ! মতাকালে ডিঙা মনে বিক্লেম আনার চ শহর ৷ জননী ভামবি--- म अभित्मीकला त्मित्, कड अधिर्देख् নয়ে ভার্ বিশাসুক্তা ছেন প্রস্তালালা প

ন চলিবলীকলা দেখি, কর পরিষ্ঠার,
নার তথা বিশেষ্ক হেন একলিল।
বাহেত্বলাক মা লা প্রান্ত কথাল।
পূর্ব মার্কার হা একামান লাবান।
প্রাক্তির কথাল কথাল
কালি নার্কার কথাল
কালি নার্কার কথাল
কালি নার্কার কথাল
কালি কালি কথাল
কালি কালি কালি
কালি কিছিল বিশ্বের
কিলেন আশ্বের
কালি কালি প্রান্ত
কালি কালি কালি কালি কালি কালি
কালি কালি বালিকার কালি কলি
কালিকার কালিকার কালি স্থানিক
কালিকার কালিকার প্রান্ত
কালিকার কালিকা

পানারিক নিজেন আপানা করে। দ্রা।
আনচাক নেহারি জননি,
আন জানি বিশ্ব অবিছেন,
থেই তৃতি আনি—নাহি ভেলাভো,
অনম্ভ ন্রফাণ্ড ব্যাপি আছি এক হলে।
অন্ত ন্রফাণ্ড ব্যাপি আছি এক হলে।
অন্ত ন্রফাণ্ড ব্যাপি আছি এক হলে।
আন্ত ন্রফাণ্ড কারি গণ্ডে—
নিলান্ত তন্তে, গনে প্রশান জননি।

िर्मास्यक व्यक्ति।

বিশিষ্টা। চল চল - নামার্ক বা কিনের গৃহ, জানি ভোমার সঙ্গে যাই!

i waste on it

ষষ্ঠ গড়ান্ত

वागमा अंग वांनी

ागन्ति **२** नन्तिस्य ।

্নিক্সে । তেওঁ ট্রেড বাপ্লাবাজী ভাবে স্থানার কণ্টবাজি কারে নিয়েছে, কারেই ওর গালৈ প্রাক্তিক্সন কার্যান ব্যোগাতি হবে। নিয়া যে প্রাক্তি লাচ্ছে, স্থানার জিবে গ্রেন স্থাপান মার শৈক্ত বিহন্ত কোনোবাল

त्याहारा । अपि स्वतः ५०००

জানা) ্নি কাবান স্থান কান্ত রাগ্রেছার পর সংক্রে, ভারা কার বুলীনে নার চেন্দা চুনার ব্যাজন

সথা। তাল নি নি নি লি জিলাইন লা বলেইন কানা হং ক'বে ফিলিয়ে দিলেইন। পালা কেনে প্রেল—ন্ত লালু, একেল্ডে পোনান কৰে বলি নিবা লো ছলবেশে বাজার কোন এপে ভালে ভাবে ভর সাড়ীতে গামগ্রী নিয়ে মার। ওর মা রাইনানির মত ভলতে বিলাহি। এ দেন দেন— ও বাল্ডিন নিয়ে ফাজে। ওা—বিশ্বর সান্দ্রী। দেশ ভরমারি পোলালনের সার নিয়ে বড় ব্রিন কাজই বংকছি। আমার বালীতে সভিতে নিয়ে আদ্বো, বা জিনিস্পান আম্বন্ ভা আন্থি আদ্বো, বা জিনিস্পান আম্বন্ ভা আন্থি আদ্বো, বা জিনিস্পান আম্বন্ ভা আন্থি সাবো। মাগীর একবেলা এব সুটো আ্রাঞ্জা আর্ ন্বেক্থানা কাপ্যন্ত, সেনি রম্ব গালে আগরে নাও কিন্তু দোড়া লিকে আর্থ বিষয়টা কিন্তু ফিন্তিকে নেগে।

না। মেজে খুড়ো, ডুমি নিষ্কান আমাকে দাত াৰ্থি, কঠ কে নিজিয়ে মেন্ত্ৰণ দাও ভুমি আন্তঃ বাব।

্ত না বে জিড়া—লোভ ত্রিদ নি—**লোজ** করেস নি, কিলিয়ে নেয় নেবে —কিলিয়ে **নেয়** নেবে , তোরে বর্ম ব'লে কি গলবির **আমি** তিন্দ্রশাষি। জাতির বট, বদি কিছু না-ই থাক্তো, আমি প্রতিধান্য কর্তুম না ?

(বিশিষ্টাৰ প্ৰেলে)

বিশিষ্টা। ও গো, বাছা স্থায়ার কোন্ পথে গৈল।

সামি যে তাব পিছু পিছু এনে ভারে দেখতে
পাছিলা। কোগার গেল। সামি আর একটিবাব দেখবো। সামি বিদায় দেবো ভো বংগছি,
নার একটিবার দেখে বিদায় দেবো। জ বে

—জ দে—জ ব্লি যাছে—জ বৃদ্ধি যাছে——

্দ্রা। মেরো খুড়ো, তোনার বরাং ভাল, মার্গী বৃদ্ধি এইখানেই অকা পার।

কাম। আরে দুর পোড়াকপালে, তা হ'লে সর্বনাশ গ্রে, গ্রোড়া এপনি ফিরে একে মুখাটি করংব গ্রেন বিষয়-আশ্ব বেচে কিনে চ'লে যাবে; নুন্তে উপর ব'লে আর গ্রেক বেটা ভোগ ক্যাব।

(মহানায়ার প্রবেশ)

মহা । ও মা, স্থামি বে জোমার বাড়ী থাক্তে অবেতি । ওঠো না মা, ওঠো না চ

त्राण । व **कास्मानी जि**ने व्यक्तित क्व^र दर—का १८८ (व्यक्ता)

মলা। পর্যো ওঠো--খ্যও না। (অন প্রেক্তরণ) বিশিন্তা: (উপিত হঠা।)

ल कि । कि कि ! लाकि कि विकासिता। विशेष विकार -कामि व्यक्ति-निश्चिक् लेखात. विशेष विकार -कामि व्यक्ति व्यक्ति -ही

ব্যা হা, এই নেতি শহরতে আমি সেই এসুমার ভাগতে, মতে নিয়ে বাড়ীতে পাক্ প্রে । আমি শাব্তি, জামি নেম শশ্বৈ।

বিশিস্তা। তে ে তে তে নে এই বে আমার শহর, এনেছে। তেল মা দেখা, আমার এক শ্যার ছিল-কত শহর হয়েছ সামার শহরমার নুষ্ঠ হে আমার কোলে শগন, আন্তর জন, পান কাচে শগন, এই মামান আচল পারে শগন, এই যে আমার শগন বেচ পার্চ কচেও। এই । ইয়া মা, এসো এসো, গরে এসো—ভোমার শগন ভোমার দতে, আমি ভাইতে ভোমার পেথতে এসেছি।

া বিশ্বিকে লইনা ঘটামানাৰ গ্ৰেষ্টান।
সংগা। মেজো খুড়ো, এ নাগী চোর। এ গ্রেপোটার
পাগন হয়েছে, নাজা আছে সন্ধান পোনতে,
হাতাবে, ভাই মা। ব'লে এসেছে। গ্রেডা, ও
মাগীন্ত গড়াও।

রাম। তুই বা তো বাবা, দেখতো —,
স্থা। গুড়ো, ডুমিও এলো, —ও ভাকাতনী, সামি
একলা ওর কাছে বেতে পশ্চবো না। জ দেখ,
পালাকোলে ক'রে কুলে লিয়ে ফেন! বেটি
ভাকাতনী, বৈটার সঙ্গে লোক আছে।
রাম। চল তো—চল্ ব্যা কৰি।

जिल्हात शक्ता

সপ্তম পর্ভাস্ক

নগদা তীর—গোবিদ্দনাথের পার্রম। থানমগ্ন গোবিদ্দনাথ। (একনে প্রবেশ

भेकत। द्वि एडे विश्वमान खक्दनत सम्, স্ব-স্বরূপে অবহিত সন্মুখে আন্তাই. প্রত্যক্ষ জনসংকর নর-কলেবত (हिन शंद न्ह्य त्रमन वामिक रहेन कमेंगा, छोई भरि मानक-ध्युक्ति ভণবান পাত্রদানণে বিশিক্তেশ প্রতিভূমিম পাতাল ভূবনে ৷ थार या कल्डांग-मांधान কতিবর উদর গুহায় ্গৌবিনান্ত্রিণন কলেবরে 🖟 😘 ्रिम वस्ति दूसि दिक्न जूमि गाउण्य अवक मानव मनीहर, क्रिनियदाद ने७ हड्न बन्द्रक, जानाम-जिसिद्ध अक गदन जागांद, का नांबर मिना हकू महिन्द अवान,

্ত্রসাঠীর্ন ভূতি ভারনান্ কল স্কৃত্য কালে কিছার।

्र (क्षेत्रक श्रीमन १५००)

রাজ। বাধে, কার সালস্কান করে।
শহর । গুণার্ম মজিনত : আনার নিজিতি
শার্মন করেছি, বিভিন্ন আর্থান করে আর্কাণ্
শব্দ করেছে । বানা আর্থান করে অর্কাণ্
শবিদ করেছিল হিনিবার

िस अवाका

सक्राप्त । विकास माजिस्सार होना ANA 古西南部 新门草饰 क्षांत्रं कार अस्तान, ভালিত প্রশ্নম একতে তে সাঞ্চিতি ৮ . ইৰ্ণিচেক্ বা প্ৰক্ৰ প্ৰায়েশ, इष्ट्रिक स्थानम् । स्वरूप सन्स्यातः ४ उत्के । अकडार माह कन्मीम जनस्ति मध्य समि। ५ ६६ कालांतिनि, 有可用作的 (图)对合一个 ভদ হবে নমাণি প্রভুৱ । 💮 🤭 भाव इ.अ. भाष्ठ इत्यान वाल-विसार्तिने ! ও কি 'উচ্চতন কলেল উপিত, কন বাবী, শাস্ত ছও নশ্মদা জননি, ागांधिक विश्व नादि करता । रुश रु उ डेक्टमात ামা বর অপরাধ - -रक तद कम अनू मोरवा कार्या प्रमाधिक क्षित्र अञ्च (मर्जनात नकरवंत कम धन्-मध्य करवन)

গোবিশা। (চফু উত্থীনন করিয়া) বংশ, মুক্ত কর নর্মনায়, হের লাচর বায়কুল কর্মনা, জল বিনা জাজিবে জীব্য।

্শহরের নর্ত্রনাক মুক্তকরণ
কর বংগ, কেবা ভূমি, কি নাম তোমার ?
প্রায় নাহি কাপ, নাহি নাম, বং বা উপাধি,
চিনানন্দ শিংমর স্থাপ আমার।
গাবিনা প্রভাক হইন মম ব্যাদেন বচন।
স্বাধিক ইইয়াছি জীনুনে ভাষান

शिविभार श्रीवनी

সেবিধি উদ্বাধের জরে, ধর্মীমানাবে বিধনতে আসিনেত নর-কলেবরে। হ'লে শিল অবতার, দদশ তাহান— কমগুলু মারে হবে আবন্ধ ভাটনী। বাজহিতে তৌরব আবার গাগানত তব এ আগ্রয়ে। সে কহি ভাই কথা বিশ্বলে ভোডাই।

(बहर अक्षारण तह जनाह रे

নিল্ল ৷ এক শালের প্রস্কার বিভাশত চ্বা বিক্সিক বিজ্ঞান নামন— শানমন্ত্র প্রতিরূপ ছেবি ৷ বিজ্ঞানী সমীর ধরান চাক্রবিরে নামা প্রস্থাইল ৷ নাবি শাভ কাবি কাবিবের প্রেটি

াকামি অংকার জ্বাদ্ধীয়ের ভেষ্ক প্রেছনিকা কাত্যর স্থীয় স্বাকার গড়ে। এই মোর প্রহেলিকা আরো

रुपाञ्चलक कीत नांदि (१८७) प्रधा क्यां कृष्यिनियात्त

মালা লোৱে টোলো মাদিল। জীম-নে লোক নান গোলাল কৰে,

ভাতে ক্ষর হন্ত্রা ভাগ । অসকন ক্ষেত্র ব্যানী ।

कार्किति क्षिक्त स्थापन ।

कारमञ्जून को जिस नहीं,

কে: ভ্ৰাৰ চাৰি মাত কান্সং

र न जिल्हा आसम् **प्रता**र ।

ক্ষাবিদ্যাল বংসা, বিধার করিব ভয়ু বার আবরবা।

ন্দ্ৰ্য থাংক পূৰ্ব ভব । ব্যাপ্তিম সংখ্যান ক একে নিজ পূৰ্বন ক্ৰিব প্ৰাণ । নাও ক্ৰি ক্ৰোন্তিনিক্স,

তাই গণ্ড বংগত গ্ৰন্থে -শিবদাৰ **দও ব্যান্সীর।** ফল্ডেল ক্ষেত্রের জেন্টে এই এক **ক্ষা**

्रिक्षांम बाह्यात् एकं वर्षे कर करत,

ন্বৰ ফোগন কেইডাগ্ড (দণ্ড প্ৰদান)

वैक्षेत्रक प्रता समि स्वयं

क्रियित्व हरूक करण । व्यवस्थ वृक्तम, त्रश्य, तिवार १ ,७१० । .

माबा कर बादायनीमारम ।

শক্ষর। পাঁড়া তব ধ্বন্ধা অধিকার ক্ষ্ণুন প্রধান :
ক্ষ্ণুদিন বহি এই স্থানে
গুরিব রাজীবপদ্যুদ্দি
অভিসাধ অধ্যের দাদের

নালিক । ইইয়াছে গুকুদেৰা দম্পূৰ্ণ ভোষার। ক্ষাত্তিৰ বিল্ল কল্পোজনী

ক্ষণগুনুগঠে বন্ধ করিবাই উুমি, তাহে তব পূর্ব গুক্সেবা।

वन वदन, योजा वाहि छुटै छतन,

ভাগ **হর মাহেশ-প্রেন্ত**র- ~

ভারতের করিব দরশন। খন, শল্পিক চরচির,

গুড়াল্ বৈশ্বর ---

প্র জন হরে, সম্ভাসিতে জোসল সৌনিকে :

য়েৰ স্মানী, **বিষয়ী, বিষ্ণাধ**ৱী আদি । ভূতা কৰে পিৰ মং**কীৰ্ত্ত**ৰে—

किश्वदर्ग क्या क्या जन ।

(चित्राक्षत । विकासनी शासना । एक्ट्या । अने गा निक्रमाय !

१ तसराहर शिक्ष

বিষয় নার্চি বিজ্ঞান গারি, সেহার বর শর্ম।

্বন্ধন করেন করে, **স্থ্যু**টি ওলার।

ক্ষার্ডন লেই প্রতন স্নান্ধন-স্কল,

ক্লোলাক র**ম্ন**, —

উল্লোক—-বেল্ডান -পূর্ব স্বানী স্বান্ধ।

স্ক্রান্ধর রাধ স্বান্ধন স্থাতি, ব্রীধ ব্যোগ্রা

দ্বিভীয় শঙ্ক

.......

প্রথম গভাস্ক

বারাণদী—মশিকার ঘাট।
(গঙ্গামানার্থে শঙ্করের প্রবেশ)

শ্বর ! জগনাতা জগৎপিতা বিরাক্ষিত ধামে ; — বিখেনর বিষেশ্বরী আদি ধরাসন্দী বিশ্বপ্রেমে, নাহে জগজন লাভ দরশন মাজননে হর অধিকারী: নিব-নিরোজটারিহারিনী প্রশ্নী উত্তরগাহিনী বেভি শুরী মেথনা বেমতি। ব্যতার্থ—কুতার্থ সর-জনম জামার।

(मनत्म ठ्रणाणस्थी भशापत्यत्र तपत्रशी हुक्य हातिष्ठि भश्यास्था

(মকলের গাঁও)

ভরপুর নেশা কেন করবি কিকে ।
এটা নেটা গুটো বিকে গেবে ॥
মজা তো মজা আর বিকে কেলক্ল,
পুরা মজা নিয়ে থাক্ না মক্তরত,
ভাকা ভেকা পারা চাদ্ নে জুল্ ভূল্ ,
আপনা মজাতে দেল পুরা এবে ।
বে-মজা আদ্বে তো দিবি কিকে ॥

শক্ষর ৷ এ কি বিষ ! স্থরাণানোমন্ত চণ্ডাল-চণ্ডালিনী কুকুর মুমভিনাছারে পথ রোধ করেছে, (প্রকাঞ্চো আরে চণ্ডাল, এ কিরুপ তোমান আচকণ গদ মানের পণ রোধ কানে নিমতের গাছ লাভা-গাঁতে মুম্ন আছে ৷ তুনি অশ্বেস্ক, প্রধানতির প্রায়ে প্রকা লাক্সাল কনো !

5ওাল। (কুকুয়কে শৃশ্বেম করিলা) হুবিদ কেলোর এটা বে **শাট** বৈ প্

শ্ৰীণান। আহে কে বটে রে- কে বটে!

শংক। অংশ্বে মর্জন, ডুখি মুপার বংগ্রান্থ করে না

সভাব। (অন্ত কুকুরকে সংখ্যাবন করিনা) কি নগ্ডের বার্থনা, বি নগ্ছের্ম করতে পা**চিচ্চ** আমি ভ পার্ডি। জ্যা মদ পেয়ে কি মাংকা কাবন মধ্যে ধ

সীগণ। আৰু কি বৰে ৱে—**কি বকে**?

* শিক্ষর: (অ-৩) এ হ্বরাপানী ত গ্রাপানী বড় বিন্ন করলে। (অকা**ডে) রে চড়াল, গ্র**ন্ন প্র শুক্ত কর-দুরে ধা।

তথাল। আরে এটা খ্যাপা পারা। থেপছ কেনে প ভোষার বাতটা ত বুঝতে লাব্চি।

श्रीभा। जारद कि बंदन दिन- कि दुरन 🥍

শহর। উদ্মন্ত। পরিহার কর-পুর হা।

চণ্ডাগ। দেখছি তো সন্মাসী, শেকেন কোনার আকেলটা ত দেখি না। সান্ধাগোলা ক'রে গ্রেকিকে ভোগা দিয়ে সেট চালাক। কিকুরের প্রতি নির্দেশ করিয়া) এই কেলো ধনোৰ প্রত্তি বা মাছে, তোষার তা মার্থ নেই। তুলি বি নেলাবেলা বাং বন্দ বটে গ

जीशन। जाला एक नार्क छ - दक नार्क । ।

শ্বর। (থগড) ও বর্মারের আচরতে ক্রোম সংবরণ করা কঠিন। (প্রকাঞ্চে) দ্বন স্মানার নিন্দি ৮'তে দুয়ে অবস্থান করো।

চন্তাল। আহে কেমন ধারা বাং বলে রে ই। রে
ক্রেনা, তোর জাতের কথা জাতে না, নগানী।
হলেছে। কে কাকে কোথান সরতে বলাহ
লেই ইা কেলো, ইা রে নলো, অন্তন্ন কেনি
হলে বেনাগার ধাবে বেলু ডারে চৈত্তহকৈ ছুলা
করে বে। মহানিং অব ও আননা রূপটা চেলে
লা, জজুসাকে জুলা কলাত চালা টৈচত্তহকে
হাবাল কলাব। এ কেলন লাভনটা রেই বেন
আক্রেটা ত লেখিনা।

जीवन । बाद्य व्यन्तरं वन्त्रं बन्दं बर्ते !

শক্ষণ। (কল্ড) কে এ চগুলে, এ বে বেদ নির্দাধি বারা প্রয়োগ কল্ডে! চগুলে, মুন্দ এ কি বার্তা। সভ্য -অসস, ৮৭, অধিতায় স্থারূপ প্রসংখ্যাত তেপ নাই।

চ্ছাল , খারে এছো খোড়া আন্ধেল বুকি আন্ত্র রে কেলে। আনে বলো, তোর ফারের বাচটা সমজ করিবে নে। বল জো—সমাজীতে বুরু আর ইাড়িয়ার সরাপ মে প্রতি লেকে, এ কি ভূদা পূর্ব ৮ এ বাজ্টা রুচে না। বুলে লা, মোনার কল্মীর বিজে খার কাজির হাড়ীর বিজে আকাশ্টা ভূদা জ্বশা নতে। ও জেমন সামানী রে ৮

हर्सा । कि श्रव्मिन बार्य कि । के इस्ता, के महारमी के कि नदम कि आधादि अकरक नामान् उन्दर, अकिदक क्षण उन्दर्भ मोदिन भाष उन्दर्भ जाक कारत से, इस मृक्ष कारत । - पूर्व उक्तमन माध्य दि ?

न्नीतन । व्यास्त्र (क यस्ति स्त- स्क वस्ति । नक्ति । व्यवस्थान, कि स्ट्यू इसली अस्त्र स्टिंग :

तम् श्रीकृष्कः (कृत्व नशानकः चित्रके नेस्यारः संस्था

শত কোট প্রশাস চয়তে अकासर केमून के ग्रेगा ठव । পূর্ব না সাশ, কর তেব বারপে প্রকার, रश मन (शक प्रजारन) प्यकिषान करता ना तकना, প্রান্ধার্ম প্রথমে তেই অধিকার। ট্ডার ১ বহুল মুম অজল জ্যাকা**ত শক্তি-মুম্**থি**ত,** प्रति एक क्षेत्रेक्ट प्रत्ये । েন্তন্য হওাবের মহাদেবনুত্তি ধ্যেষ্ এবং উগুলেন ত প্রতিপ্রাধান বিভাগে বিভাগে প্রাকৃত্য লান্টির জানি ব্যাদাপ জগাড়াবত শ্বন চ मिरु के । प्रदेश सम्बद्ध किसानन्त्र भारत गरहरू स्मा भागास्त्रम् । जन्म प्रमुद्रः (1) 對於了(1) 動語。可可問則的 ক্টিলেজ কিনেশ্ৰ কৈল Bearing Parail to a solution 有其無要用官 明海 五日 পোয়েল্য হাড়ব্য িটি ভিক্তাকে পাক, 李海州 医闭门室 经明 有學一人 मार्कित मह यह रूप व १००० भाग्यक यहा, जाग्यक व हिन्द्र विभावको १ जो साउ । ४ कि न १११ छ विश्वलीके प्रशासकार परा-門内部類 阿利 さかいぼう · 有情 有 的一切实际。1750 274 4-40美元 भारतिक अन्तर भूष स्टास्ट न् सरमा भगः उत्तर हा लोगा, प्रदेशिक विशेष अवस्थित অংশ শীৰ সোলে (等)(等)(中 等)。 বিধানাৰ ক্ৰিয়ায় ১৮ জান _সুত नार नारिकासी हो विश्विमारह. 2000 AND A 2000 PRINTED TO ভালপাল (১৮৮৮) চালপাল ক্ষর (১ তি । প্রতিক্রমার প্রতিষ্ঠানির <u>।</u> THE REPORT OF THE CANAGE TO LEADING कार्य अवस्थित । १० ०० व्यक्ति इन और इन्साई <u>रिक्तिकार पानित्र सम्बद्धाः ।</u>

বেদনিশি বিশুখা কে ধরাতনে, कानशैन नाजनाथाकात বেদমশ্ব করেছে ছানন : ১ * (बारवर्खा (वस्वात्र) अजारिक योगोरम्! निर्माटन करमञ्ज्ञ भाष्यापि चष्टमा ভ্ৰান্ত বাহিন্দ আবরণে বুলানে সকল : সৰ্পজ্ঞ ব্যত্তীত, সাধ্যাগ্ৰন্ত নহে ত কাইবি সকা হতের মধ্য ক্রিডে প্রকাশ 🔏 ভূমি মুনে, সর্জণকি সর্বজ্ঞতা আধার্থ মূপ অবনীতে অবক্তীণ নরদেছে। ব্ৰদ্যতন্ত্ৰ ক্ৰডি হানিলীয়ে, অকৈতপরতা ভাষ্য করিরা গ্রন্থত 🕽 🕈 জাহিত কর্ম সাধন, क अभिका क्दई श्रमन, विराह करिक्ट पश्चा तस्यां ५ मोनत्व । 🕆 ভাষা তব ভারন্থরণ (साइ-उम की तरह विनान । শৃষ্ শিষ্য করিবে ভাষ্য লাপ্তার বঙ্গ কবর প্রিয়ভ্য ।

भगा पर्वापत्र अवसीन।

শক্ষর। সমা বিধেয়র শক্তি এন হল, তথ রাগ্যজার বাহিব সিহার প**র্শক্তিতে তোমার শক্তি**ময়।

[শङ्काठोर्यात लक्षान ।

। शतमारम् त अर्चमा)

মনকার। এ তাপপুর্ব সংসার-করেন্য জার কতালি এলাফী অনল করবোঁ। তেলান অনল করে-লেম, বৈবাবছকার সজনলাভ লো হ'লো নাল ৩০। লো রুখা মানব-রেন্য, ভুলিলাসনা কৈ পুর্ব কলার ৮ মত্বাত, মুন্তুর, নজনগলের্ন,—— ভিনের মোগালোগ ব্যতীত তে। মুন্তিলাভ হর না। হার, মহাধানের তেন কুপা হলে, না, দশর্ম তেলাকা মান্

(শ্রুরাচার্য্যের প্রাংশ্রমেশ)

শ্বন্ধ । এনো কে কোপায়, নক্ষাকার্ত্য নে আছে সহায়, । , প্রব্যা কর্মা কাব কমে বায়।

महाकाकाजात - वर्ष भवशादः জানজ্যোতি বি হাপ ধরণীতলে ; বার্ধপরতার কপট ব্যাখ্যার भाजमर्थ आध्य श्राप्त I তম তৰ কবিলে প্ৰচাৰ, জীবের উদ্ধাৰ বেছার সে মহাভার করেছি গ্রহণ ১ উচ্চ প্রব্যেজনে আবাহন করি ভোষা সবে, এম, এম, বিশ্ব না সহে আর, অনাচার ব্যভিচারে কল্বিভ ধরা ! দনন্দন। এই বে হতীশার দর্মক্ত তেজাপুঞ गर्भाष्ट्रक खेळात्व जानात मण्डल । व्यक्तिमान हो शब् क्यान-मन्त्रम । मायन्य म्मारकाद खांय ज्या । श्रदांष শান্তিহীন ত্রিতাগ-পাজিত; विधाल्याएर भीन माम--कारवती जावमां उत्ते हो तरमनवाती. আগ্রিচ শরণাগ্যত কর কুপা দান। পদৰ। বংস, তৰ দৰ্শন-আপান প্রতীকার বহুদিন আছি কাশীবামে। শান্তিপতা বৈরাগা তোমার, विद्वक विद्वादा छव मासी বিরক্ত নাগদী ভূমি; শাহায়ে জৌমান, वंदकारी मंत्रिय नेकाता।

নরর ত্যজিরে নারারণ তুমি আজি।
বগার অমিনে তান মহাবার প্রশমে
শীব মিশ্র হবে;
রুপার ভোলার,
অজ্ঞানতা-অক্কান হবে বিদ্রিত;
জানচকুরসো—
অনত ব্রহাণ্ডে বন্ধ করিবে দর্শন।

'जक्यनि' मश्तिका कर्ड श्रश्,

शनमन । श्वन्यान-श्वन्यात्र-शिक्षात्र मग्रामण, शिक्ष श्राम, नदीन श्रीतन मान स्वत्रह स्थापः। मनद । এग वरम, श्रहे तत्रक्षम्या श्रीमन स्थाप्त, गानम्य कृतिक स्वत्रह गान श्रीमाह्याः।

ि छत्यत शासाम ।

বিতীম গঠান্ধ

শক্ষাচার্য্যের বাটার প্রায়ণ।
(ক্ষমন্ত্র্যের প্রবেশ)

পা বাস্পঞ্চার আছেল দেখ দেখি, বার্নিত পাতিথ-পতিত দেরে না, তাইতে লাবছে, মার্মীর পোতা টাকা পাছে। মার্মীনে তাড়িরে ছাই লিবে। মার্মীনে তাড়ারে এলে ইনাতাল আছ্রো নি—বা থাকে বরাতে পেযে। সর্বাহ্ন দিয়ে গেল, তাতে মন উঠ্ছে নি।

(বিশিষ্টার আবেশ)

বিশিঠ। কে বে, কে আমার মা ব'লে ছাক্ল।
শঙ্ক এলি ?

জগ। (বগত) ইন্, মাগীর আর-বীচবার বানা নেই। ব্রহ্মটিও মাগী এলে যে ছটি থাওয়াভো। গে বেশ ভূতের ভূত, আমি তাকে ধুব ভালবাসি — তবে এনাটু ভরও লাগে।

বিশিষ্টা। বাবা, বসো--তুৰি যে আনেকঙৰ মা ব'লে ভাকো ডি, ডোমার চানম্পে মা বল। যে আনেক-শল ধান মা

হগ। না মা তুই বাড়ীর বার্কে আদ্বি । চার কব্বি ? আর কেন্না, একটু সাকার বারি, ভার ব'মে কি কর্বি ? চান্ কর্বি আম, আর,

নিশিষ্টা। বাবা, আমার শারে এ বাড়ী ছেড়ে বাবে
না। সে এখানটি না ছ'লে বমেনা, ঐ খনটি
নইলে তার পড়া হব না, ঐথানে, সে ততে ভাল্
নালে,—এগানে ব'লে লটি খার। লোকে বলে,
বিশু। শিধেছে কিন্তু ব'ছা কেতে জানে না
আমি না থাইছে নিগে খোত গাবে না। আটি
আবার্গী খানে গিলেছিল্ম — ইলোল দেশুবে
এলো না, বেয়ন খাহ, তম্নি গ'তে মাহত, বাছা
থেতে পান্ত নাই।

करें। याः, मानी यत्रकी छाट नैति कर्तते । पूर रहात्र गांशांत्रका सूर्य कृष्टि । व्यान देव प्रद बद्ध गांशांत्रका त्यांत्र का नित्य व्यान देव भागांक्रक त्य नाहे, को कृष्टि क्षित व्यान देव विश्वा क्षांत्रक न्यू श्रिम्ता कृष्टि व्यान देव ছোলকে শিখেষ, আৰু হাসৰ পামতে .

(सहामात्राद शहरत)

খ্ৰী গা, তুমি বেম্প শ্ৰৱ: পো—কেম্প বেঞ্চাভিত ंबरत्रव स्मरक्ष लगा ? मांनी के ज़िन बाब रिन, छ। **लंब नि,—'ब्यांत्र 'बा' व'**च्या हाटा स्था अट्या ! লাও-পারো ছটি খাজাও; কার দেখ- 🕾 জাত গুলোন মাগাকে বাড়ী খেকে খো अंदोत्र (राजाएक किंद्र्रह) । इत्यत हामी निर्ध मन डेर्क नि, इस्टी एएड हिला ही । ता रहा । जा ताई क्लिएक, त्यां भारति कुछ दशह थाक्। অভিগ-পতিত নাগা-দ্বী কেই ভোলের গই ভা দেশে পাড়ার লোক বুল কোটা মনছে। সার্চ ্যা, নানীকে তালাৰ, বলিছে 4765 क्षेत्रहरू ।

्रेक्ट्री आयुक्त, काङ्ग साल बाहर उद्यान (अ) ह ভালাৰ 💡

अता दान न्यां, जायात्र तदा छटा हिर्देश वार्याः प्रामित्रक अनम् प्रकृति सर्वे अवन भागे, স্বামার হাতে চেপে (ন) পাও আজ একটি বাইন ्षाना कडांच, इंडि ब्रामादाव कवा ३ व

মহা। তুলি বা**ও, আমি** বাঙালিটা।

জাগ। ই। বেখ বাছা, তুমি ভাল কেমাণ্ট্যের বেরল মেয়েট বাই, বিশ্ব হোমার ভুতুড়ে ভারতী গোনো : . . নি । ও বেটার পোকে প্রাণ ছাডাব, ারে বুল ं द्वारणा १

भिद्यो । जुनि खार्थ नी, कामि शोधगाताः জন। শেস—এই । পরামর্শ করি।

्मश्री। कि १

ৰুৱা। ু**তু**মি আমাৰ হা**ডে চাপতে পাৰে** প্ৰচাহালে मामिल लभूनोञ्चलारमा कलरज किए। थाहे। আৰু দেখা ভোমার দক্ষে আনার এই কলা,--अधात कड़े काषां नहें ता, तहा अन ঝাড়ান-ঝোড়ান করবে ৷ তুনি আপুনি তেড়ে मित्र त्रेड।

मध्य भूगमाथ, कृषि भीनाव ७३ रद्र कर ? जुवि मारक अम्बुति - मानि लामात्र के वह तह मही, भागि द्यापात्र वर्ष जानवागिः

भाषांत्रव समेशान्ति निर्वाप ता । ानानक निर्वा हा तथ - जनवागाः काष तके पूर्व गाविष শোষ্ট্রপরিটা রেপো, আমি পাসপার্কবে এক हारम आंगाड करत शांडग्राची !

> বিশিষ্টা! বাবা, বাবা—আমাত গদা ছেতে কোথাই ্গেলি
>
> শামি বে ভোকে না দেখে থাকৃতে পার্বি নি। তামি বে চারদিক্ অন্ধকার দেখ্ছি, আর दावा आधा

া মা-মা-কেন কাদছ? ভোমার শ্বৰ আন্তা ্ শিষ্ট পড়াকে দেখে এলুম।

ि परे। जा-कवन मान्तव ? त्य स अप नि। ভাবে ছেকে স্বানো।

पर'। रामा, हा अथन नियासक **पाठ निरम्ह**-दर्ग কি এখন আসৰে ১ জাব কৈ এক আৰু ধন শৈল্ নে, পড়ান শেশ কৰি আন্তে ? তে ভোমার (१८७ वरमारू, अपनेत जामान निरंप्र गाँको, **७८व** সে খাবে।

अस् । (२११७) ई -- १६०० तिथा। ७३ व वाली থেকে লোক এরেছে, তার মুখে জন্লুম, খুনে বাৰাৰ শেষ ধৌৰ শিষ্টা দেবক হয়েছে। (প্রকাঞ্ছে) হা। ধা**–ভূমি কি ক'ে**। হাস্ত্রে গু

🛪 िमहा । 🕒 भागि (य और आर्थ धनुम ।

হল। (স্থাত) ই-- ্রছ চেলে যাওয়া-আসা করে। ् अकारण , जा देश भी, धकमिन भारह हालिए एक लेग्डिस अस्त भी, मानी हो हलांन करत,--দেখিছে নিজে এও দা।

নহা। সে জন্ম মা, তামি জো ভাষ থকে আমে (कांक किंहा।

न्या कामे काथ गाँक या अग आता करता नांकि १] × খহা। আমি যে তার কাছে নিয়ত আছি। আমঞা ধে অভেন, শামি বে লার শক্তি, জাকে ছেড়ে তো यानि धकत ५ शांकि मां।

গণ। 🕮 ় ার কাছে আর **ভোমার** গৌস্তে হর। नि । अ-अ वांन्यक यामून वय, वांनिही बाष्ट्रा कांडेंग्ट अंत केंक्ट शत नि।

শহী। সেপি । নামি যে লারে হ'লে নুভা ক'রে (स्पृष्टि।

स्त्र। व महन्द्रीवन क्यांट- दा हिष्टिशाहार शक्ता दिशत वाया वाया छोत कारक तम्मा गाव्य ।

महा। चाकि दक कारता ?

কা। তুই বার কাই গুআমি তো এওতে এওতে তোর গাই-গোল জান্তে চেরেছিল্ম, আমি বার গমার পিনে তোর পিতি দিতে চেরেছিল্ম, তা তুই বারী কই ? তা না বলেছিদ্ নেই নেই, তুই বে এই মাগীকে দেখিন্ শুনিন্, এইতে মনে করি, তুই বাপের ঠাকুর পেলী। তা দেখ, ছেলের শোকে যা দেখছি, মাগী আর দিন কতক টেকবে, তার ার ভোর ধুনা হয় আমায় বালিন্ন নামি কোর গিতি দেখে।।

মহা। যে হাতে পড়েছি, আমার কোটিকছেও নিস্তার নেই। চকল হরে বেড়িছেছি, বেড়াছি, বেড়াবো।

জগ। আছে।, হুই কে ?] *

নধা। আমান চিন্ব; আমি তেনুগার পরিচর
দিরেছি--বুরতে পারো নি। গ্রথন বুরুবে-ভগন চিন্বে।

(4)(8)

থে জানায় তেনে, স্থামায় জেনে জাপনি থকে না।
নকাই জানে, স্থেন স্থান মনে মানে না।

আমায় জান্তে পাতে, ভার কাছে কাজি সারে,
কই ধরে ধরে ধরতে নালে, দেখে কেনে নালা
ভালবাসি খেল্ডে আদি, খেলাব ভালে কালা-ছাসি,
কত দেখে কভ ঠেকে, ধেলা কেনে নাল

वाता कृष्टा इ श्रीमार कान विष्टि!

বিশিষ্ট। মা, দেখ দেখ-ছেলে-বৃদ্ধি কি না,
দুধৰ আমান দিব সেলে এসেছে। আহা, দেখ
দেশ আতুতি বিভূতিতে বাছাল থেন কণোর
শরীর হরেছে। মা মরি গনি-বি ভটাপুট্রারী,
কি স্থলর ললাটে শশিলো একেছে! কি
উক্ষল চোথের দীয়ি! সহ ক'রে কপালে আর
একটি স্থলর চোথ একেছে। ও মা, ও মা—
কি করে গো—বুড়ো মিজেগুলোর আক্রেল
নেই গা, ত্রিকেলে মিজেরা আমার বাছার
সকলাণি হবে বোনো না। খেখ মা কেথ মা—
বারণ করো, আমার বাছার পারে যেন বিবপত্র
দেয় না। কই রে কই, আমার শকর
কোখার গেলি! বাছা, দেখে যা, সে আমার
ব্যাক্তিক হছে, কেনে কেনে চল্লু ক্সাহ হয়েছে

হয় বিনা আমার দশনিক শৃক্ত। আৰু সঞ্চ আমার অঞ্চলর নিধি খনে আর। এই আমার বাহা এসেছে - এই বে – এই বে আন। মা ব'লে ডাফ্ছে।

্বৈলে বিশিটার প্রহান, ভংগশ্চাং মহানারা

ভূতীয় গভান্ধ

বারাণ্মী--গ্রহাতীর্ম শ্রুবাচার্য্যর আল্ম-শন্ধ। গ্রহাত ও শান্তিরম।

গণপতি: সনন্দনের প্রতি প্রতুর সন্থাপেকা প্রতঃ
তা উনি ইচ্ছামর, উনি সব কাতে পারেন। এ
দিকে অনাচারী দেখতে পারেন না বিশ্ব সন্
ন্ম যে অন্তাব্যই, তা দেখেও দেখন না।
শীতের ভয়ে বংগদিন ও গ্রাকান করে না।

শান্তি। বড় কিকিও লিপেছে, বলে কি জানো, জননেশ বলেছে, পিকা জাব আৰি এক।" স্থোপক এক –তা আমনাও নানি, তা আমা-দের অত নিন্ন নাড়; তামহা গান্তান লা ব'বে ছো বিশেষৰ দেশিন নেডে পানি ন।

(भक्षतां अर्गात अर्गन्)

শঙ্কর : সমক্ষম কোনা জোল গ

গণতি। (জনজিশা) প্রকে এবছ নেখুছেন।
শাস্থি। আজে, জাগনি যে, গণার কি কার্যার পাঠিকেছিন। ঐ যে—পানে আমে সদক্ষ দাঙ্গিছে পাল শাস্তে গাসে মণ

नकत्र। स्थानसम्बद्धाः शिष्यः शास्त्रसम्बद्धाः । व्यक्ताः स्थानः

সমলন। বিশার ব্যাসত হয়তে স্থাসত থার কংশ্যে ভবসিত কার স্থাস, তিনি আইবার কংজ্যন আমি লগতে মধ্য গাল ব্যার বিজ্ ক'লি:

महत्र । अवस्त्रम् (प्रति) —

मन्त्रन । पर्दि अस् धर्म - १५८ ध्रमः १८० ।

(বক্ষায় অন্ভবণপুৰুক সংগ্ৰহ ১০ ১০০০ ১ জিলাল

मननारमंत्र अवस्थित स्थान निर्मित स्थीवरः श्रेष पुण्डि श्रक

गनना (निकर्णे व्हेब्रा ध्यामभूर्सक) अन् माराह क्षेत्रि कि चान्ही रह १

গণ্যতি। প্রাভূ, অঞ্জানের অপরাধ মার্কনা করন। (मननरमंत्र अंजि) छहि ग्रम्मन, देवारणंडः **ट्यान कडरे निन**्न कटाई, थाउ इकलावन নিকট অপবাধী হয়েছি, তোমার রূপা না হ'লে যে অপবাধ মার্জনা হবে না।

শেলন ৷ কেন ভাই--কেন ভাই--মিনতি কচ্চ*ং* ভাই ভাইয়ে তো প্রেমের কলত্ অনেক হছ। रश्कराहर यथन रहामारम्य मोद्रशास्त्रां करवन जानात गतन केश है। अङ् यूदि आभाव अतथ িব্যাখ্যা ক'ছে আন না। কিছ পুত্রের প্রতি পিতার স্থান ক্লা, আহরা সজ্ঞানতা বশতঃ বুৰতে পারি না। মাতা গেচণ কোন পুতের কিক্স আহাত্র-বিহাত্তে আন্ত্র-বর্জন হবে, তার া ব্যবহা করেন, গুরুদের সন্ত্রপ অধিকাবিতেনে জান-স্থা বিভবণ করেন। ভাই, এবো--আমরা 'अक्टानावन जाशानि व वि।

भुकरद्या वस अन्याद्यव क्रि

र्थता वरन नगमन, अंक कंटर हनागर महाभाष ৰ'লে কলৈলে, - ভেমিকে কি ভাতালি মহিনা, বি আন্তর্যা প্রফলনিং নে ৮ ব ওক্তভিতে আমান স্থা হয় 💎 - ক্টিডে লগম্বে ম্লেণ্ শে এছণ কংবে, ভন করে ।

(ENTRY APPLIES 1 CO.)

ক্ষাসান **অহে, তথানে কে** আতাকি ভাতান, ভানছি না 🤊 ভিন্নি না বেৰাজহাত্ত ভণ্ কলেছৰ 🤋 জিনি কোখাই ৮

अक्षा अपू, साम आध्या र सङ्ग्य ।

图图1 第一零用一要用书目的作 到不可以包 শ্রুত বেরান্তপরের দারা প্রচ, র কলার পরা आया भा कि प

नित्र का भारति—नित्र कि कार्य करता भद्दां नुक्राक कि जासीन मुख्यक अफ़्राम १

राशि। जोन जोन-शक्क गाँउ हो जोग लाक्ष द - अनुराज शहे ?

1। १६न, त्राच एव - इं जाकरा! - नेवन। अर्थ त्र मकन ४१नमण पर्यास्त्रात्र বতার্থ অবগর আছেন, ওাঁছের আমি আগাম করি। আমি তাঁদের করুগামী, আমি ভাষা-কায় ব'বে স্পন্ধী করি না, মহা কি গাৰী আৰু গ্রহ ক'রে প্রশ্ন করেন, আমি যবাসাধ্য উত্তর मिए अञ्चल।

> ভাল-ভাদ,- আমি জোনার ভাষ্যদর্শনে উৎস্ক। আৰাঃ অনেক প্ৰশ্ন আছে। এই স্থানেই কি আমাদের প্রশ্নোত্তর হবে ?

> শন্তর। রুপানিধে, যদি পদার্পণে আয়ার আত্রম পবিত্র করেন, দাস ক্বতার্থ হয়।

> বাবে। ভাল ভাল, ভোমার আশ্রমই উত্তম স্থান। িশ্ৰুৱাচাৰ্য্য ও ব্যাসের প্ৰস্থাৰ ৷

> সমন্দ। ভাই, এ বৃদ্ধ ত্রাহ্মণ কে ? কোন জনা-भाक कार्कि मिक्त्रः नरहर छक्षकावर राजान থাতি কগহিখাত, কোন মহাপুরুষ ব্যক্তীত এঁর পহিত তর্কে অগ্রনর হ'তে সাল্য কর সম্বর্ণর নয়।

> প্রপতি। তোমার ওই কেমন,--চারিদিকে বহা-পুরুষ দেখছ। ইদানী কিছু বাড়ারাড়ি— থাগিনী দেখছ, সিশ্ব5।বণ দেখছ, গঞ্জনো দেখন, জোমার সমুধ দিটেই দ্ব বিৰেশ্বর দুর্লুমে यात्र, जांद्र एडां जाएनद निर्देशहंदन मनिए बोचान পথ नाई।

प्रमन्त्रम । छाँहे, जायात नामान्न पृष्टि, महानुबुद्धता यंगिठ व्यामारमञ्ज्ञ विভार्य व्यामारमञ्ज्ञ निक्छे नर्वामा আগমন করেন, আমাদের কুদ্র বৃদ্ধিতে আমরা र्भएक भावि मा। हक मा---भामा वाक--কিন্নপ পূৰ্ব্বপক সিদ্ধান্ত হয়।

माण्डि। जात्र कि उन्तर, इंक्शाम्न अक्टार ध বালিতে দেবেন।

श्राल्य मा महि, जापि नेज़रे डेट्यून रहि । शर्पक्षित पाद ताव वान-लागरे मी-कि প্রক্রিটে কবলে, বল ভো । নগীর জলে পদ্ম किंगित कि केंग्र १

क्ष्मणन। कार्र, कांत्रि **किंद्र्रे आ**सि ता अक्राप्तन বাঞ্জা করনেন, সামি চ'লে এলেম। ...

[मननारनंत्र अक्ता

मन्त्राक । को प्रथ-बुद्धार-बुन्द्व मा । अन्तरमन

িবিবিনি প্রকে ভোজবিষ্ণা দেন। আমি তাই তে। ভাবি, এত গুণত্তি কিসের ? ক্ষেত্রই ভানেবার থাকেন, ওর অর্থ মাছে মর্থ আছে।

শাসি। সাভাই, গ্রগাদ অক্তরত মহাব্রের ওর শ্রমায় নদীবক্ষে পর প্রাণ, টিত হরেছে।

গণ। ইমৃ ইমৃ -ছুমি যে একেবারে ভালে গদগদ হয়ে গেলে। আজ থেকে উনি পদ্মপাদ হলেন মা কি ৮ পদ্মপাদ কারে বলে জামোঁ ? এক নারামেই প্রাণাদ, আদ্ধ প্রাণাদ কে ৮

শান্তি: কেন, তুমিও ত তথন প্রপাণের নিক্ট মাজনা আর্থনা করণে ?

শার্থ আবার প্রথান—কানে যেন থোঁচার

মত বাজে: এতে নারায়ণের প্রতি কার্থনি

থোকাশ হয়—জানো ? সে কথা নাক্—এই বে,

এত দিন পাঠ নিচিং, কিছু বুর তে প্রজাত পাচ্চ ।
ভানি তা ভাই, কিছুই বুর তে পারি নাই।
ভিনি আন্ধ এক কথা বংলেন, কাল এক কথা

বলেন। আমার এখানে পোরাবে না। শাই

কথা বণ্চি, অন্ন একটা অধ্যাপক দেখে নেলা।
শাস্তি। ছি: ছি:—কি বল্ছ—এতে যে অপরাধী

হবে। এর চরণাশ্রয় প্রিত্যাগ ক'রে কোবার

যাবে ৪

গণ। ভাই, আমার শগুই কথা,—ভেবেছিলুম, হ'
একটা বিভালাভ করবো। গুনেছিলাম, ওঁর
কথায় কোন দরিল ব্রাহ্মণের গুহে লগ্নী অনুনা
হয়েছেন, নদীর গতি ওঁর আজার পরিবৃত্তিত
হয়েছে, নদ্মদা দলিল কমগুলুম্ করেছেন,—
ভাই লোভে লোভে এলে পড়েছিলুম; তা কৈ,
এফটাও ভো বিশ্বে দিলেন না। হুটো একটা
যদি ভ্রমণালা শেষাভেন, ভা হলেও না হোক,
একরবম ক'রে-কর্দ্ধে থেতেম। বিদল পারিশ্রম
করবেম।

লান্তি। কি হে—ত্মি কি আমার পরীকা করা ? বন্ধবিভালাতের প্রবাস না ক'ছর সামাত ভিকিৎসা-বিভার প্রয়াসী ? কুড় ভোজবিতা সিকা করা ভোমার ইচ্ছা ?

গণ। ভোগবিজাটা কৃত হ'ব ব্রি ? ওই বনন্দম একটা বিজের চোটে ওর কাভ ভারতে নিগে; পশুগাদ বাস বাসিয়ে নিগেছ। তেনা স্থাদন বাবে তার সক্ষান কত ? কার একবিক্তা নিক্তা বিক্তা করে, সে আর আনান বাগুণ্ড কি তা বলো না ? "তথ্যান"—"লোগ্ড" - পাঠ নিক্তা গোলে, এই নিগে গাঠালাহি হানাবেলি। এই মধ্য আস্ত্রে, আশ্রমে ছিল, লানাব এইবানে এস কিটিমিটি বাবাবে, আনি চন্ত্রন।

িগণান্তির প্রাহান ৷

(भवतार्गार्ग, वाल अ यनमास्त्र श्रेनः व्यातम्)

বাস। ভাল ভাল, মধ্যাত্ সন্ধান সন্নাথে জানাব জামাদের তর্ক হবে। তুমি ভুগণ্ডিত বটে, ভোমার তর্কশক্তি অভি প্রধর। আমি ডোমার প্রতি পরম দক্তই হয়েছি। তোমার সহিত তর্ক ক'রে পানন আনন্দলাত হরেছে; এইবার দেখনো—ভূমি কিন্নপ উত্তর প্রধান কলো।

শকর। প্রত্ব, আপনি আনদলাও কলেছেন, এ অপেকা বাবের ভাগা-কামতার অধিক পরিচন আব নাই। জামার ভাষো ঘট দেখি থাকে, আপনার ধারাই সে দোষ নংশোধিত হ্যার ম্ভাবনা।

ব্যাস। ইন ইন, তুমি পুৰ সাবধানী ভালিক, এইবার তর্কে তোমার সতর্কতা বুল বো

সননন। তাগনাদের জীচরলে প্রণাম পূর্মক
দানের নিবেদন, চরিংহরে বাদাছবাদ ভো
কোটকরে অবসান হবে না। ওলনেব,
যদিচ আমি সভান, আপনার কপায় আদি
কেরপ দৃষ্টিলাভ করেছি, তাতে আনার কর্
মানি ইনি বরং বাানদেব নালগং নারাহণ
আর শহরাচাগ্য নালগং শকর। শভরঃ শকরঃ
সাজাং আনো নারাহণ বহদ, আমি উভরে
চর্মে শ্রীদে প্রণাম করি। আপনাদের
উভরের বিবাদ, এ খনে আনাদের কি কর্ত্তন,
আঞ্জা করন।

শকর। বংস প্রশাপ, তৃসিই গ্রন্থ। আনি অজ্ঞ,
বুঝ্তে পারি নাই, ইনি ব্যাসকণী স্মান্ত
নারায়ণ নিশ্চয়। হে লোকপান্তর, হে িতি
কর্তা নারায়ণ, আপনি অমিক্রণ গ্রন্থন ক'রে
আন্তাশ প্রাণ প্রশানশ করেছেন, বেলবিভাগ
ব্যাসকন, ভাগভবাগ্র নির্বাণ করেছেন, প্রশান

ानप्रवाह साम् कहरण जामि नांदमी हरे िश्वाप भारतव शक्ति कृता अवर्गप्रकर प्रशित जारबाद मध्यात करूर : ব্যাস। ভাষ্যের সংবাদ তব পাই শির্ভ াক। হজে ব হতের ভাষা খাছে ১৮৭৪. **डिमिटिंडरे मध्य** (करदाः ्तमभूमा अहातास्य छव याजनग प्यक्तिश्व भून त्रा एरे ११८७ वया कृष्टक र एर्डिन सारा कार्य रहना . া শুক্রা থাকু, काश्य गति भूर्व मन क्लीमखाला. পর্বা, জানদান হয়েছে নিশ্চর : क्यांत्र कवनं गांधी वालकः कातंत्र, 🔩 জাহবাঁ দলিলে আমি করি ভন্ন ত্যাগ। **বাদি। অষ্টবর্গ** গুলেগ্রে ক্রিয়ে গ্রহণ এসেহিলে বর্গ হতে: ক্ষেত্রর্য বৃদ্ধি ক্ষায়ু ন্মান্স গ্রহণে ;---বোড়শ ধংসর পুর ব্যবহৃত তেরামার, ६४ नाष्ट्रे कार्या व्यवनाम । मास् स्वांतरम् यति छेट्याहरः --स्तिनीला एवं स्ट्रम्ब, কেবা ভূমি, গ্ৰাক্ত চি কাজে, মন্ত্যাতিক বেশিখায় কে বলে দেনগ্ৰণ। শিষ্ত গ্ৰহণ চৰ খেলান মৰাব, কিবিশ্বে হবে মৰে মহাৰ ছোমার। হৈছে ব্ৰাহ্ম ব্ৰেল্ল दोक्शन विन्तृत कात्रन, ্ৰাপ্তিৰ প্ৰক্ৰিকে প্ৰচাৰ, कें। हिंदकर यव और ने इन जाएता में, विशां । धन्याकाण कुमातिस मारम । यद्य जुनि (५८) भन्ननन, क्विदिन यहानम् अशास्य अन्न, শক্তিবৰ বমেদেন তথ প্ৰকীলায়: ख्या वका निग् छोड़ संदर सामाइ, कियिक्तीमाय लेडे काडाडी क्षेत्र स গার্হার এব্রুক --निवृद्धिक क्रिमात कार ! প্ৰকাৰণ কৰি উত্তৰ, তদ সহ 'ত ক্মসি' জ্ঞান করি নান, হাত্ৰণত **মাহাথ্য ঐকাশ' গঠীৰৱ** !

শ্বনিশতে কর্মকাও আপ্রর কেবল,

মৃত্তিপ্রদ কর্ম কতু নহে,
করহ প্রমাণ—

শিশ্রে করি 'তর্মসি' দিরাজান দলে।

শারীরূপে সবসতী গৃহিনী তাহান,
শরাধামে রন্ধ দেবী দল প্রতীক্ষার।
ভাষ্ট্র দ্বি মম বরে হউক তোমার,
মোড়শ বংসর রহ অধিক দংগারে।
নাস্তিকতা পুশাভূমে হোক বিদ্রিত,
নার বেদকাপা হোক নাশ,
ভাত দমন, পাপাচার-নিবারণ
ভাবংগ প্রতাবে তোমার;
ভাল গা হোক প্রকৃতির,
ভাবত উজ্জন হোক গোরাক-প্রভাষ্ট্র

বাস। তথান্ত।

(अवसाम

শাধর। ক্বতার্থোহম্ — ক্বতার্থোহম্ ! — (শিষাগণে আছি) বংল, তোমধা পাস্তত হও, অভই স্থামণ প্রজাগণাম ধার্থ করবো।

শকর। প্রভু, বর প্রারান করুন, আসনাব শক্তি

আমাৰ ভাষ্য হেন **লোকসমীপে পৃথীত হয়।**

পান্ত। প্রভুৱ ফেরপ মাজা।

বন্ধন । বাদ **মহুমতি হয়, একবার নগর-প্রান্ত** ব্যাহ করি। আ**তি মনোহৰ স্থান, বে** ভাগোৰন।

শকা। বংল, ওরপ ক্লান্তিম তপোবন একণে ভারত নর্ধে অসংখ্যা, এই সকল প্রাক্তর বৌদ্ধানিগে আনাস। ব্যাহিচার, মনাচাবের বিনাসভূমি ভূমি অগ্রসর হও, আমরা ঐ পথেই গ্রাহ্ম

সনলন : প্রেন্থ, বদি এক্লপ কৃৎসিত ক্রান, ওং আমারে একক অগ্রসর হ'তে আজা কডেই - কেন ?

শকর। বংশ, কি বিরাট্ অভ্যাচান্ত-দিমনে
নিমিত্র দেশনের আমানের উপর ভারাপ করেছেন, তা একাকী গমনে ভূমি প্রভা করেব। আমি গাঁচবে ভোমার শশ্চাৎ প্রব ক্রিছে।

্ৰেৰণেৰ অহান

প্রজন্ম বাহার্ডম। প

नद (बोह्य-कालाहिक व विवासना

বিষ্যা আপনাৰ বি কছা কিন্দা। এ ঘুনাৰী মে অপিনার করগত হবে, জ আমতা দছবপর नियन्त्रमा क्षांत नाहे। मान पार्याणाया, चालिक मामान्य का किस्टल कराया ?

্**কার্গ** । ভাগু, আকেল-আনেই, জনে ও **দক্র** শক্তি তে।মানেরে পরি প্রদান করবো। ক্রেম্বার কাম প্র গ্রেম্ব্রীকে বশীভূত क्लट्ड शहित्य ।

िया। अञ्च अस्यादादिमी सकती, ति आंका जन, দূৰশ্ৰ্য প্ৰস্তুত আছে, ভুমা**ৰীকে লবে** প্ৰেছু वाषरे विश्व करण

কাপা। আমার অধীভিত্তর জ্ঞান্ত্র অতীত হয়েছে: মেই সকল বালকের হংগিজে শে সমক হুল প্রস্তুত হরেছে, সে হুরা উপস্থিরি একপক্ষ পান কারেও আমি গ্রহত যৌনন লাভ করতে পারি নাই। আজ যে খমল শিশু ভাদের মাতার গহিত আনীত হয়েছে, তাদের বন্দের উষ্ণ শোণিতে কুরা প্রস্তুত ক'লে পান करि, जिथि-यमि मदम इटे।

শিশ্। কেন ভান্ত, চত্তালের হংপিতে বে নতন ইরা প্রস্তুত করেছিলেন, ভার ডো আশ্চর্যা শক্তি মাজা করেছেন। অশ্ব সেই সুরা গান करून, आमर्श अभिनात अविमाराजी, कुमाबीत व्यानिजनव्या मिन मिन वष्ट्रे अवन स्ट्राप्ट ।

কাপা। বুমারীকে আত্বও আমাদের কার্য্যতংপরতা করা হর নাই। যদি ভোমরা নিভান্ত শাগ্র হয়ে থাক, দেখি খুৱা ও সঙ্গীতপ্রভাবে আমান व्याणियान कूमात्री मुख्या इस कि मा। मर्खर-नर्डकी ७ डेकी नक्ष खत्रा गरंब धरमा, कात्र क्या ब्रीटक अन्तरम कवाक वृत्ती

निया । टोक्, सार्व, तकर हरूवन कार्यमध्य गास्त्र भारत्याः

(शंबरीन पाना मामज्यातेन

। সুই জন স্ত্রীলোবের এক কুলারীকে বছরা প্রবেশ 🕒] मुर्वक **६ मर्वकी**शालंब यशाल ५%०० कालगर }

प्रशासी। (कुमातीत अति) नता, धरेना वरमा, अवनके क्रिनेन्महीय नव्ह कराई। ভোমার প্রতি প্রদূর ব্য ্লো তে মার প্রধান, ধঙ্গিনী করবেন।

कुमाती। कि वनह १ आपि इंडेमर्का व निविद्ध আদ্দি। খাল পূর্বিনা, সাল ইর্মার্শন কবাবেন-বেগি**বার আ**মার নিকট প্রতিশত। দ্বিনী করবেন, একণ অন্তচিত ২খ। কি कर অপদ্ধ জামি চিরকুমারী এত অবলম্বন করেছি, ইষ্টগানে চির্বীনন অভিবাহিত করবো।

्या श्री। शानिका ! श्रृकांत विषि ज्ञात्म मा, अन्द नात्न त्रमन भूको इत्र, त्मवर्भ कि व्यभुद्र भूकाः इ'ए॰ भारत । होने राजामात्र हो अवनर व्याद्व ता, होने भएक गम, महाहाँ तावका उत्राप्त भाग करा।

কুমালী। না, আমি ইইলেনি ব্যতীত চলান্ भीन दब्राता ना ।

काशा। याख रहा ना, व्यामीत अलान शान केंबर (নপ্তক-নৰ্ভকীগণের নৃত্যুদীত)

> क्ष्वकान्त--क्रांच्य क्रांच्य भूत्य भूत्य शक्ति क्रेंबरः । ংবরি আদির ক'রে, কড রাখি আদরে, তারই নোহাগে নাতি হাদরবাপে --कड आम-शिवान कार्यः लारइ लोहा हाहि कर शोध मत्म । ্র ব্যাবদ ত্রাক্তিত ভার্ট প্রের ৮

কাপাদিক। ((কুমানীর প্রতি) প্রদাস পান করে। कुमात्री। व कि कुश्तिज भन्नी । १ कि कुश्ति নৃত্য! সামি এ কোন স্থানে এসেছি ?

निवा। (अमाजिएक) अन्, गहाल का न त्रहरू बर्द मां। विश्वीपिक लिक्स कहा एक । कीर्या । बांडाव शक्ति रमन वालकार विषय यां वालाक रहा निर्मा कर

জারতে বেহিগর্জের অংশভির সায়য়, এইয়প কুংসিত-প্রকৃতি অনেক কণ্টটোরী বেছি ভারতের নামারানে একর णाद्य कार्यान कतियः कार्यान्यः करमानिकत् भावनात नियुक्त 41 FF 1

सत्तर्ज ८% **मिनिस्जित स्थिति।** नतार्थ क्रिक्ट स्वीप्रदेश **ज्यांत स्वर्ट क्रिक्ट**न-क्रिक्टन स्वत्तर स्वान मञ्जूरभे वह स्वरंत्तर ।

िरादेनक मिल्लांड जीवा ल

(কুতা গীত চলিতেছে, ত্ৰন সমান্ন মাত্রাং সাহিত থ**মগশিত ও চ**ভাল-বাল্যব্ৰ সহয় ু শিৰো**র প্**মঃ গ্ৰেশ)

ত। সভি, চরগারত পান করো।

(ব্যক্তশিক্ষ-নাতার চার্লাচ্চ পার্ডক্র)

চওলে। নালিং আমাই জেলে লাভ জনী পুরু ভুরি মাধ্যত পরিধে মাধ্

भिया। अध्यक्ति। वद कत्रवे ।

कोलो । मः विष्ठः राज ध्ये काला स्मापा है। हूं।

শিলা: (বছর নিজ্যাত্তি আঠ) **নাও না**ও, সভান বলি জন্ম জলা:

কানা। যুৱতীকে মত্রে অন্তর্গ কোলে জানন ি করে। নচের মৃত্রে জীতা ধরে।

क्यांती। कि विश्वीतिकार व टा कारहाती पाकितानी कालाविका

শিষ্য । (ধনর শিক্তমংতার প্রচিত) নে বানি দেও শার্তা। না বংগা আমার সভাগ না বাহে না বাহুক, আমি সন্তান বনি নিতে পার্বোনা।

চণ্ডাল। ও ৰাজা মেরো মা—মেরে না— ভ্যায়ী। (আক্রিন হার) কাট কাটা, ভাষার পশ্ববিদ্বেত

्**काला । ६०**५वर्षि, जीए-८८४४ साम्यः —ेर्लोलका व्यातः । - **क्षेत्रकी । सरास्त**ः प्रशास्त्रमः दश्यासः ((वर्ष मगमस्त्रा खराम) ..

সন্দৰ্শ। ভাল নাই---- নাই। কোপালিকের অতি সৈটার ছবাটার কাপালিক---

ক্ষেপা। এক ওপ সন্ধানী !--তোধার **মন্তকে**শ্ব প্রক্রেজন। (শিবাগণের প্রতি) বৃদ্ধ**ন ক'রে** বৃদ্ধ করে।

সনজন। আমার বন তব্বে করে।, এনের পরিবাশ লক্ষ্য

(নকলের উচ্চ ধা প্রকরণ)

কাপ। । এনন কাবে সজে সন্মান্তিক ব্যাসার। ভিন্তাসক্ষর বছরালারেক **প্রতেশ**।

লভার । বন্ধার্থীকো ব্যাভারী নির্মিষ্ট শহলস্থার। নর নার্থাকিল (ক্যাল্ড এইটেক জ্লাল নিজেপ্র প্রস্থাক ১৮৮৪টিকার জিলালাছ্য ।

(অন্যান্ত্র ও তথালিকের জন্**থাপ্তার হওন)** বিশৈষ্ট্র স্থান্ত প্রায় প্রায় ব্যানাগতির প্রবেশ)

প্রেপ্তি । এই জে, স্চান্তর ু জ্যান্যা **মহারাজ্ঞ** শ্বন স্পান্তর, সংখিত স্থান ব**হির্মণ হরে**। জেন করামে জানাল ক্রেক্তি।

শহর। বাংবার মহাজেবার কামার রক্ষাক টা।
নানাপকে আসার আশিবিদে জানান কর্বে,
বাহ আমার অন্তবোধ আগন কর্বে রে; এই
ব্যক্তিরালিসকে যেন ভারতবর্ম হ'তে বহিষ্কৃত
কলেন। এলেব ভ্না ফ'বে বারে যাও।

(গ্রাঙ্গনৈত্যন কর্তুদ করে, নিক ও **তৎশিদ্যগণকে** নক্ষাকরণ)

বনল শিও-মাতার প্রতি) মা, তোমার প্রবৃষ্
শতবংবর পরনাধ্ লাভ লঙ্বে। (কুমারীর
প্রতি) কুবারা ভানতি, প্রচিবে তোমার ইউদর্শন
ইবে। (চঙাবের প্রতি) ব্বক, ভূমি কারমনে
রাজ্য বেবার রত হও, তোমার চঙাল্য দ্ব
হরে যোগি-গৃহে কর হবে।

नंबरण । अत्र वृज्ञीका शक्तां।द्वांत्र कर !

শহর। দেনাপতি, এদের নিজ নিজ স্থানে সারে যাও।

সিশিষ্য শঙ্করাসাধ্য ব্যক্তীত সকলের প্রহান।

ত্যা, স্বচকে অব্নোকন কর্লে, কির্নণ সভাচার! শক্তির ক্যারিলভট্ট বৌদ্ধানের দল্প বিনাশনাধন কর্তে পারেন নাই। আরেকেই কৃত্রিম তপোবন নির্দাণ ক'রে প্রজ্বভাবে
অবস্থান কচে। এদের প্রক্রিনা বারা দানবীর
শক্তিলাভ কর, দেই জল আনেক ত্রাক জীব এই
ক্রাচারদিগের জন্তুগামী। এই হ্রাচার-দননভার
মহাদেব ডোমাদের উপর স্থাপন করেছেন।
তোমরা সকলে মহাবাক্য গ্রহণ করো, বলো,
শিবোহহং—-শিবোহহম্।

(मकरनंद्र नैंडि)

मत्मार्कारकां बिडिडा नि नार्क, ग भाजः न त्रिस्ता न इ ज्ञांगरनजम्। न ह त्याम वृधिन जिल्ला न राह-क्तिनाननज्ञणः निर्वाश्हः निर्वाश्हम् ॥ भारत शानमध्या नह शक वाकू ন্বা সপ্তধাতু ন'বা পঞ্কোষাঃ। भ वाकानि शाला न कांगवर्गक् किमानस्याभः नित्वारहः नित्वारहम् ॥ न भूगार न भाभर न सोधार न इस्वर न गढ़ा न जीर्र न तम न क्याः। थरः (ए इनः नित (छादाः न छाउः), हिरानमञ्जाः निर्वार्ट्श निर्वार्ट्स् ॥ न त्य द्ववतार्शी न त्य द्वाल्यारही, मान देलव तम देनव माध्यर्गाजीवः। न श्रुणी न हार्थी न कारमा न भाक-किमानगत्रमः निर्वाश्यः निर्वाश्यम् ॥ ন মুখ্যুন শিলান মে স্বাভিজেই পিতা নৈব মে নৈব মাতা ন জানা ! न वकुन भित्रः अकरेन व निया-क्तितानकञ्जभः निर्वादशः निरवादश्मः অহং নির্দ্দিকারা নিরাকারসাপে। जिल्द्रीं निर्मात नर्त्स विस्नाम्। न यो पक्षनर देन पुक्रिन जैकि क्लिनम्बन्नभः निर्वाद्यः निर्वाद्यम् ॥

পক্ষ গ্রাহ

कूमारिव बरोद भागम

তুষানলে তহুতাগিভিলাবী ভ্ৰন-কাপৰি উপৰিষ্ট কুমাৰিগভঃ, সন্মৰ প্ৰভাৰত প্ৰভৃতি শিশুগণ।

क्यांत्रित । बारे पर्यं त्लामा नत्व कडिन कनानि । পূর্বকৃত মহাপাপ-প্রাকৃতিভ কারণ, जूगामल तर्जां विधान कवन। লোক প্রিহর, কর্তবো না হও পরামুধ। প্রভাকর। প্রভু অকৃতী এ অভাজনগণে, বঞ্চনা করিছ কি কারণে !--পাপ কি পরশে করু এ দেব-পরীরে ? তবে কেন সময় ধাকণু--তুষানলৈ ভন্ন সমর্পণ ? হেন কঠিন ত্রত কোন্ প্রয়োজনে গ भरमात्र आधात श्रद उक अन्निर्द । গ্রান্থ, তব আঞ্চীবন কঠোর পাধনে কর্মকাণ্ড বেদের হবেছে এ'বৃত্তিত ; রোগ্যব্রত সংস্থাপিত পুনন্দ ভাগতে। বিহনে তোমার-क्षका ७ जूश (मन, इर्द धनकी व । শিষা প্রতি তব মেহ জননীর প্রায় भूवशन-पूजनीरन हार करानीर, भारत इत्रामशाचन्, श्राञ्जन गांद्रोद ! কুমারিল। চিন্তা দূর কর বংগগদ.! ছিল যেবা **প্রবেজ**ন শহীরধারণে, (त्र कांबा रूप्याप्ट नमाधान। यसमाज किता व नहीत ; क्रोदी क्रथमीरन किन्। शक्त क्राप्त ? क्षेत्रीक निनुष्ठ मा श्रंट वहाइम । বেশবিধি উদ্ধান্ত কারণ, হরবাতে মংলা উদ্দ বলিষ্টা প্রাধ্ ঠাও জির্গম লায় भनाविक् अवगेमिकः मधाक्यार्डक-उदाापि भाग विक्षितः ভাত্তি-তম কোথাও বা হবে---্ভারতে হইবে পুন্ত উচ্চ বেশগদি : व्यक्ति। वार्, त्वन अम् श्वास व रीताः নিশ্বল শরীরে বেব, প্রাচ্চিত্র কিবা -

कुमाहित । आत्मा मां कात्मा मां प्रथम,
शारमंत्र प्रोकांच !
जिकमां मित्रका निर्माण व्यावन,
मम्म मंदित प्रमान निर्माण व्यावन,
व्याव मंदित प्रमान ।
जिम नदम, व्योवन प्रथम,
दो कर्याल किंद्रक हमानी,
कर्यालाम सिव्यव बीकांच ।
सिग्रंप मां कर्याला ध्रम्म छह द्योवन्य मां स्थान ।
कर्यालाम सिव्यव बीकांच ।
सिग्रंप मां कर्याला ध्रम्म छह द्योवन्य मां स्थान ।
कर्याला क्राइत । हेत अब प्रमान ।
कर्याला क्राइत । स्थान स्थान ।
स्थान क्राइत । स्थान स्थान ।

२म निष्य । दिलाशिए ४४०० बाउनती द्वीकपूरण भाजनभाग एडेट १७२०म १ भूमातिम । द्वादश्य तम दश्य ५१० विकासमार द्वार्थ,

এক বৰ্গ শিক্ষালাল যে জন কৰিছে फंक्शनगाना (नर् शाख्य ।हत्। কৌশ্বনাদেশ ক্ষানিটাছে ৩৮ ব্যুপাপ : क्या बहालगेत भग करते ध्राम---रमा महा क्रिक्ट और है। रक्षा । जो सदान ५ अने ५ ११ । ारतम अक दर्शन धाम आफ्रांत महात, আছিল সে বেতি মম প্ৰানে শিক্তা, कुक्साम् के दिशास मृतात् निकारे 🧸 अल्ला निर लिलि न्य की है, ঝের বারি সার্থ ২৯, রবে ২৯ এবে। **শুস হ'তে লালকানে এছিল ভারম।** কিন্তু সংগ্রহারক বাক্য করি উচ্চাইণ, িবেদ থবি সভা হয়"—হেন বিধা ভাষে शांशकार्न इंदेनांच वक्षकरीत। "विभि" वाका डिक्टोन्स्य मानद्र वृक्षांत्र , त्न महांशालकी, तांत्र त्वत्मः ह मरनत्र । मुख्करन कर भाव रहा धर्य সংশয় সুদ্রায় ঘাঁতে ছেন গাঁকা উত্তল क्याहरू मध्यक रहित करती मा व्यवस्था । ब्रिट रहे । त्यान स्थापि, १८३४ (तम काँत तमक अधि भाषातः)

প্রভাকর। প্রান্ত, মার্জনা কনন্য, সভানগণকে । ব কঠের জ্বাক্তা প্রদান রব্বেন না ! কুমারিল। দেখ বংগ, পাগ-তাপ তীও কি প্রকার। শাপানাল দেই দহে দেখহ স্থামান।

(करुवाद क्यांविक अधिव तराइ व्यक्षि केमीश्व १८म)
तिश्वाद । अनु कि व रालम - हांब्र हांध, कि श्वाद !
पुर्वित । (बादन १९४९) कर्बी, क्यायात देशाहां कि
क्रांदा मा । अनु, क्यायात्र क्र्यां। क्यायात्र क्रांदा का ।
क्रांदा मा । अनु, क्यायात्र क्र्यां। क्या १८५,
क्याव किंक्राण क्यायात्र प्राम्न कन्न्राः। क्या व्यक्ति व महाय, सुन्या क्रांदा क्रांटा मा । अने दा, क्या व्यक्ति व

(শিশুগণার শহরাচাযোগ প্রবেশ)

শবৰ। তথা কৈচি নগথো জেল।
কুমাৰিল। প্ৰান্ত আতে জেল, অন্তৰ দেহ আৰ্ডি
আগ্ৰান কলেচি লুক্চচ্চি হ'লে সোমায় দৰ্শন ক'তে স্বস্থাত গাইন ক'ল।

শমর। ভাকে। খন দ্ব হে পার্যন্ । গ্রিমন্টের হে 😝 🚉 নিজ লেখালে সন্ধি কেমা নেকে জনান, পূৰ্ব কৰ দেহতা ভাষাবিত অৱনি। চিত্র তথ অনুভাগ গঞ্জ '**उद्दर्भानि'** दारका जान ३०१६ जिलाल । हुन। मध्य अधि-भूत्रभूतम्, कार्याक्षण भ शहर स्व शाक्षम् । মহাবাকে: জাং, গাণ না রহিবে আর। (इ शीयान् राह त्याद्व नक्ष्मां जनाम । कुमाजिन । गराजाम, व्यवमान कारी है मन्तरह, তবে যার গঞ্জুত-নির্দিত বিবার मधियोदन यह तनन, दबान् ।श्रीतः ज्ञास 🤫 শাসাধীশ ভূমি প্রভূ তব্রাগীশ্বর মাজাৰ প্ৰভাব কি প্ৰভাৱ (मध (अन् मानव-भनी (ह)) नहांभागं शिक्ष, डाय छात्र नित्स, मुख्य कर्त्र मोकन कप्राम्य । परि निक शतन, कतिशाष्ट्रि आंद्रान माधम গভিতে পরা এং আক্রা দেহ দালে। অভান্য তব জান করিতে প্রচার :

् वाराष्ट्र परिवरणात ज्ञानदेवन क्रायः,

ভাতে নাম্থ হবে কব মেতি গানালন ।
মণ্ডন নামেতে অধী নিজাবনালেব ।
কর্মকাণ্ড মেধ্যমন কবি মম স্থানে,
কর্মশ্রেমিনালেন সেই আচার্যা গ্রহান,
গার্হছোর প্রবর্ত্তক, নির্ভিক্তে অনাদর ভারত ।
প্রাক্তম্ব কর প্রভূ ভারত
ভারতক ভিত্তমনি জান করি দান,
জ্ঞানকাণ্ড-মার্হাল্ডা গ্রহান করি দান,
ক্রানকাণ্ড-মার্হাল্ডা গ্রহান করি দান,
ক্রানকাণ্ড কর্মকাণ্ড আশ্রহ কেবল ।
মুক্তিপ্রদ কর্ম্ম কতু নহে,
কর্ম্য প্রমাণ——

নিশে কৰি 'জন্তমনি' দিবাঞ্জান দান।
শক্ষর। বাহ ধীর, কোথা দেই মিত্রের আলম,
কোন্ মহাশ্য সেই জন,
কিবা কার্যা দির হবে পরাক্ষরি ভারে ?
বম সহ সভে বা কি হেতু পালেশিবে,
বেদ-দশ্দে মন্যন্ত কে হবে ?
জন্ত পরাজয় কেবা করিবে নির্দির ?
কুমারিল। বেবাভটাবিত মাহিজভীপুরবাদী।

মারিল। রেবা চটি থিক মাহিক্সতীপুরণাধী।
পরাজ্যে তার, তবে তব সহকে গ্রোহার,
প্রবান অবৈত পঞ্চা মানিবে দকলে।
শাল্কক্ রব নান বাধিতে হবন,
নান্ত সীকার কারে। পল্লীরে তাহার;
বিধারী শাল্ডান্ডা হতে ব্রহ্মলোকে
টিশ্র-প্রবিনীরূপে আছেন ভূলনে।
দেশতীর পরা হরে মানিবে বিলার;
আনবে অবৈত পঞ্চা করিবে আলার।
কার জন মতানের আবাদ-লক্ষ্য,
আনবে অবৈত পঞ্চা করিবে আলার।
কার জন মতানের আবাদ-লক্ষ্য,
কর্মা হেতু পুনং পুনং বেক উচ্চারণে
বেক্যান্ডা শিক্ষিপ্ত কেই পুরে,
কার্যা দিরু হবে বলে আনি কর্মবীরে।

্ শিষ্যগণের অভি) জন ৰম (ধ্যা শিষ্যগণ, আণকভা হেব, বৰ মাধ্য গ্রহণঃ।

বাৰ্থ এ পাপ ভগ্ন কৰা নাছি হয়;

কুপার এ ছানে ভিঠ দেব দ্যামীয় ।

শকরে। ভট্টবাজ, ব্যাং - বিবেছস্ম -ভূমারিব। বিশ্বালয়ের প্রতি অহারাকা প্রহণ করের, বলে -- শিকোজা বিবেছেন্- -স্কার । শিবেছিছা শিহাক্র্

> (সকলের গীত) । ফলেবুকাইফারটিচানি নাইং ইজানি।

ভৃতীয় অঙ্ক

سد إيتواسد

প্রথম গর্ভান্ধ

বর্গ্য ্

सेंडर भारते छोन, माजिकत ७ सर्ब्यक्स सर्वि । (काङ्काराख जीवक निडेसीर अध्यत्)

শিউলী। (একটি তকর প্রতি হজা করিছা)
এইবার ভোকে দেখছি, তুই খুন দেহালা,
আবার খুন পালা ছেড়েছিস্। আয়, মাথা
নামা। (তক্ষর মন্তক অবন্তক্ষণ ও
শিউলীর পালা কর্মন) কেমন, আরার পালা
হাতবে ? এই কাতান আমার কাছেই রইবোর

(মন্তকভাগে ও ভক্তর পূর্ব্বাবছাপ্রান্তি) পালা কটা গুছিরে মিই, মাগী র্ট্তাধ্বরে। (শুরুবাচার্ব্যের প্রবেশ)

শকর। (প্রনত) কি স্মান্তর্য বিশ্বা এব নিবট বিশ্বা গ্রহণ করি। (প্রকাঞ্চে) প্রভূ, অকি ক্যান্য প্রতি কৃপাকটাক করন।

শিউলী। আরে কে রে ছুই রাকে ধর্তিন্?

এই দড়াগাছটা দেখে বৃথি বামুন ঠাওয়ালি ?
ভোদের গাঁরে বৃথি বামুন নাই, পৈতে চিন্দি
নি চ ভোদের গাঁ-বানি জোঁ পেল, বামুনের
দৌরাজ্যা নাই। আঘাদেও এপানে বামুনের
দৌরাজ্যা নাই। আঘাদেও এপানে বামুনে
হাত আলিরে থায়, লাব বেগুলো জটা বাবে

স্পেওলো ভালান। ছেটিলোকের ব্যন্তি
বিজি বা'র ক্রে জেল্ই-বি বা'র ক্রে।
ভোদের গীমানি বেল, বামুন নেই, গাঁচিলে।

नेवत्। अकु, भागावरणीक कृषा असने।

निष्ठेनी। व्या लिए या, वामि वनहि चानि वाम्म नहे राम्न स्विति एटा , ज्याहे ला। छात्र कांशास्त्र की शा एक जिता। वामि छात्र कांग्रान को सांश्रेष्टि । वामि छात्र के स्वामन वर्ष-श्रि स्वताह छा व्यम्नि स्नाम महमकि हर्ष्ट । वर्ष-श्रिक्ष बाठ के स्व स्व व्यास्त्र कांग्र, नहेल छित्न निस्त्र हर्ष्या। सन भावप्रातन, इता कुल भनात्र, अहे असन वाधाहर पायास अहे नाम्म अला। ॥ ह्यूनि — व्याङ क्या वाल तार्थिन।

শঙ্কর। " আপনার বিগ্রা আমার দান করে।।

শিউনী। তারে ওই—এ নােন্ গাঁচের ছেলেন।
তামার সাত পুল্যে লাগোগড়া কনে নি। বাই
বিষ্ণে চাল, একটা বাদ্ন সেবে ধরগা যা,
তবে জল তুলিয়ে নিয়ে, কাঠ কাটিয়ে লিবে।
তাব নেথ, ডোব গাড়ীতে যদি তোর ব্ন-টুন
বানে, লেনাগ্ নি—দেশাদ্ নি, জবার মালা
কলার দিজান কালে। এই তো ভোকে বল্যু,
বাদ্ন নেনেতি কি টেনি সারিয়েছি। আৰ
ভামবা তো দলে শাহিন চাঁড়ালশকে।
বউরের কাল থাবে, বল্লে হেলেনা হুলের উপর
বান বল বাবে, বল্লে প্রের তার উপর
বান বল বাবে, বল্লে প্রের তার ইবি মর্
থাছে।] + বিজ্ব বেটারা ফল জেলে।ভান্তা
কার স্বোরার চাঁড়াল লাভ ভিত্তে গেণেছে কি
টেলিয়ে মেরেছে।

শাদ্ধ । গৈবে নাগব নাগিব । কি খেতাটার । কে দেশ, শক্তি প্রদান ককন, কই পায়টার দুখন কটি । দেবফোঁ বৌক, যান্দ্ শহিতকর ধুখ-সিত শক্তি-শর্মনের তথ্য গ্রহীরণ কুখনিত শাচাবে প্রত্ত হয়।

শিউনী। তুই কি চাড়ান ; তো স'রে বা। জোমান উড়োন মেরে হাড় নেছে নিয়ে মালা গুমার, আবার মনে বড়িয়ে হালা

শক্ষর। প্রাকৃত্ত করা করন, আরি আপনান্ শবপারত।

শিউলী। তুই রস-টন থাদ্ না কি ? তা আর —
তোরে ঠোঙা ক'বে চেনে দেবো। আর বছই
হতে, হগরান খেন নিন্তা খেবে নিবি।
শঙ্ব। প্রক্ত, আমি এ স্বল প্রার্থী নই;

শিতিলী। তুই কি নিউলীর **হাঁণ আমার কাতে**। খানা নিবিণ

শকর। না, আগনি যে মত্তে বৃষ্ণের মত্তক **জিবনত** কলেন, আবাৰ পূর্বাবং হ'তে আদেশ নির্দেশ, শেই মত প্রদান কর্মন।

শিউলী। ও তুই দেখেছিদ্না কি । মাগ্রী বৃক্তে লাবে, ওই ভরে তো রাভ ক'রে কামাতে আহি। কেউ এদি দেখে তো বৃদ্ধে, পূতুড়ে মন্ত্র শিবেছে। বাষ্নাগুলো ধ'রে বিজ্ঞা প্রিয় বিশ্বে। বাৰ্নাগুলো ধ'রে বিজ্ঞা

শহর। নির প্রাকৃত আমারে হলা কারে মন্ত দিন। শিউবী। তুই কি শিউবীৰ ছাত্

শকর। নাবাবা আপনার গান — আপনার প্র ।
পিউলী। ও রে পরাবাটা ক্রিয়ে দিলি রে। আমার
করে পিবোঁ বল্বাব হাবের, নেটা ক্রিয়ের দিলিরে। আমার
লিয়েরে। লাগ, মধু হোরে শিগুটিচ, বন দিন
এ গারে গাক্রি, এক একবার আমার বাবা
বল্পি, আর তা না বলিদ্— নাগীকে এক
একনার বা বলিদ্। মাগী বাটিটার জ্পার
তার লাকে, জানিদ্। ভার টার্দ্ধে মা বাবিদ ভারত লাক মান একটু সামাই খাবে। জার,
মন্ত্রাবিবা।

ি উভগ্নেৰ প্ৰহান :

ঘিতীয় গৰ্ভক্ষ

মন্তন মিশ্রের বাটা।

मछन मिल ७ फें अपनावली ।

মণ্ডন। বিজয় ক'রে তুগেছে -বিষক্ত ক'রে
কুলেছে। কোথা হ'তে এব সম্প্রদাদ শাস্ত্র
আনহীন পাসংখ্যা এসেছে, পান্ধিচর দে
সম্মাসী, মুড়েরা অবখত নম যে, কলিতে সম্মান্
নিবেদ।

উল্লং। একপ সন্যাদগ্রহণ লে। কলিতে বিচি আছে ?

মণ্ডন। কে বলে বিধি আছে ?—তারা বেলা বোঝে না, সেই কল্ল বলে বিধি আছে। আ সন্যাসপথা, বিধি গাক্লেও সে পছা এছ বদালি উচিত নয়। তারা এক প্রকা বেছের তার কান্তিক, কর্মকাও ও রাগণজেব প্রতি আছাহীন। প্রথম, জান, এই সমস্ত আমাজিক থাকা সর্কদাই আলোচনা করে। ভগবান জৈমিনি মীমাখা শাস্ত্রে দৃত্রুপ প্রতি-পন্ন করেছেন, মন্ত্রণ ইমার বাতীত "ইম্বনো নাভি।"

উভন। কৃমি বৃধি, আন্ধ তর্ক করতে গণ্ডিত পার্ড নি, তাই আমার সলে ভর্ক কর্ডে এনছ ? সংগ্রন। এক প্রকাম ক্রাধই সমুমান করেছ।

শিক্ষ্য কেন-এত লোকের মঙ্গে বক্ করে মন ঠাণা হ'ল না ?

মণ্ডন : আরে নাও, একটা বৃদ্ধি থণ্ডন করণার গ্রিক কারো লাই, তাদেব সঙ্গে তর্ক ক'বে কি ভারি হয় ৪

উত্তর। না, আনার মাজিনা করো, আনি তোনার সঞ্চের'সে সমস্ত রাত বকাবকি কর্তে পাব্দ না। কলা ভোমার শিক্তবাদ্ধ ভোরেই আয়ো-লন করতে হবে।

মন্তন। কি মথেকিক কথা দ্ব ব্যান, শুনে তুনি হাক সংগ্রণ কৰ্তে পানবে না। আরে মূখ্র আইজিক কথা কি মশুন ফিল্লেক গালে চলে। ইক্ম ফলান্তা, এ অলোকিল কথা নিবাকে নোনা গে ।। নিজ্য প্রত্যক্ষ দেখে কর্ম্বন মানে না, একটা ইন্মিল এনে ফলগাতা উপাজিত করে: আরে মূখ্র, অয়িতে হতকেপ কর্মেট দ্য কর্মে। বার্মিক প্রত্যক্ষ, মুক্তিসাসেক মা। যা প্রত্যক্ষ, তাম বৈশ্বীত মুক্তির ছারা প্রমান কর্মার প্রয়ণ পাছ।

উন্দা একটু বির ছও ঠাকুর, জাদি তো আর তথ্য কছিলা যে, তুমি আনার কাছে হাত মুধ্ লাভ্ড

মণ্ডন আং শোনো না—শোনো না—কথাটাই শোনো না, জামি ভগৰান জৈমিনি হ'তে নোক উপ্ত ক'রে একেবারে সকলকে নিরস্ত কর্মুন।

छेडा। आंत्र रहात्र कांक महि -थारम ।

নগুন। তুরি বর্ড স্থার্থণর। এই ড়েমি দ্বন গণনাদি করে, আমি তোনার আনন্দের নিমিত তোমার নিকট গিরে কে'বিকল আলোচনা করি। ক্ষার আমি আয়োধ ক'বে বলুতে

উজ্ঞ । তুমি আমার বীণা না লোম। নেই ভর্রে, আজ আমি ভোমার তর্গ তন্বো না।

মওন। তৰে গাঞ্জ, আমার নলামি হারছে, তার আমি আহার কর্বো না। তানৈ নিত্রামি চঞ্জীমগুলে গিয়ে শুয়ন করি।

फेक्का मां मां, वार्च काता मां, क्यादा दि कि, क्षि क्लायात्र कतात्र कहाल केतात. शीकि क्षमाताः

মন্তম। যান্তি,—ৰাভিছ শোনো না শোনো না-উভয়। ওলো ওলো দৰ প্ৰকৃত, নষ্ট ছবে।

মণ্ডন। উৰৰ এক সহা বিশ্ব, ভগবান জৈমিনি উপরেব কোঁলংখ্যা কেন অভিস্পাত প্রদান কবেন নি, আনি ভাই ভাবি।

फेडब्र। जारा पारा-

মতন। অতি ঘূড়ের হাষ কথা, কথানৰ প্রভাৱ [মতন মিডের হন্তধারণপূর্মক চানিল লইবা উজ্জনারতীয় প্রহান।

তৃতীয় গৰ্ভাক

निरंगी-गहीद जगदाःन ।

শিউলিনী উপবিষ্ঠা ও সমূথে তংগ্রিকে নিটালণ ।
আতিবেশিনী । নানানিনী, পুই উল্লেখ্য ব'লে ব'ল কান্বি ? আহা : কেনে কি কর্মি। ব ধর্কে বা ।

শিউলিনী। স্মানার ধর আর কোন্পন্তে মা আমার ধর যে আধার হয়ে সিয়েছে।

প্রতিবেশিনী। ভাষা, সাত হতে এবা, ইখান্তর ব'সে কি কর্মিণ্ড হা, গদার প্রতে স্মান্তর ভাষ থাজবালাভয়া দেখার নি গ

শিউনিনী। সার মাতিল কৈ মুলে এক চ িত্রশাসিক্তাভার জরে প্রতাত জানি কি ত পালে বেঁশে পারি, ছামাকে ফালতে এপঞ त्म टर्डेंड राष्ट्रेंड के दिल कारम, उन्हें इंगान्दर कांनरक ७२। जाराह म होता शिक्सक व्यापात भन्नागी। दशाना अत्याह । ८३कवाल **গে পালা** কুটিছ হয়কে আন্তো, থাবার নেগে হজুত ক্রটো, বছ বাকেরে ছাটানী, হলতো ঝাল হয় মি, প্লণ জা বি, গোল কৰছে , সামি ভূলিতে ভালিতে নুগে খানার দিকুম। परि सात शाप्रक, परे भागा व ग्राह, परे काली-एष: की छाछ: एके ना भीता प्रवास असंबंध भाषात्र करण तरह विद्यातिः प्ला !-- "दल्द -- द्वा अर्थ क्रांत्र स्टाहरू অনুষ্ঠি গালে ভারে গালেগা, গালৈ গালে স্থ বেছলোটা মোল হাড বেজে গে উনকটি শিক্ত বাজে -িজ্ ন্যানে টি আনিক स्म हेल्। जर्रकेटक यून निहन १५ - सम নিলে : - বি.ৰ সময় পান, এ'চকে জাৰ, গছাচেছ, ব্যার – শিল্প অনুক্রি রাখ্যে ক্রাম্বর ক্রিটে মোর স্থালিক লা-টা দে, আমাৰ গ্ৰাণটা ছুকুক।" বিজের জ্যোন ধরতে পানি ন। -महिला देव में हैं होते होते हम्हर्य है।

क्षाहिलिभी। जा भनिवित्ते, ज्वाम कि सर्वार्थ । লোর পার্যার । যান, জানপর প্রা**লাভে**র । তর पटे --धरात ।, आमान मिला धरा ডুড়ুটের !

लिंडेनिनी। यह या बह एका मध्या, डायांड तह , পারা টেশুনে !

ু (শক্ষরাচাপতে লইয়া শিটকীর জালেশ)

मिन्ने । १८७ मानि, उन्त् ८०१, -कारत १०१० সিমে অসেছি দেব 🗜 ইলে মেনে মেনে লেখ, মেনে श्रवागिहै। खुरु,तन ।

भिद्धिति। याद्याः अवस्थात्र वात्र हो ? প্রতা সা, সামি কোনার ও ব

विदेशियों। ए बोटा । पार । १ ० १७ (हासा १०, ্ৰ শাৰ্ষি গ্ৰহণী আনহাত্ৰ বিভাগৰ বিভাগৰ হাই। প্ৰিত। হেগায় ফোৰাই নীৰ্ কৰা, নথুন বিজ্ঞান ্পুরের বাহা, আমার মা কলে। 🚉

लंबतः क्रमभू, कृषि आरोग गी, क्यांगा क्रम मा यन्द्रवी ना १

निकिन्ती। - ७ ति -पोइम्पि - राह्म्पि - नाग्यम --

आभात हात्तिन, जाय आप पत्रक खात অমোৰ আধাৰ পৰ আলো ক্র্ৰি। भिडेली । माजी माजी -- होता, क्यांन मूर्य व्यक्तिक বংগ্ বলেছে ! निकेतियो। बाह्य, हामा भाव, भ्वत्य यम्बि भाव। প্রতিষেপিনী। (সগত) শাহা, কার বাছা ক্রিন্ত জাহা, বি চাছ পারা ছেলেটি রে: মা বাক্টিডে মাগীৰ প্ৰশ্ৰুতা হুড়ুবো!

শিউলী-বালকগণের প্রেশ) १६ १ मधी अनेत मोहि- अहीत मोहि। ध कि नार जाम नाम प्रामा है सक्दा हैते छाँहे, आधि इत्ताक दल शाले भारी। वानकश्व। यहि वहि, (वर कुछर ५०वे धाना। अस दालक । जिल्ला काली, जुलि अंति ७१ भक्ता इति। হা এলাক। তুমি বাড়াে ? कर्ता श्री অহ বালক। ভূমি মেন্দ্রে সাপর কংলে ? শক্ষা ভোষদা তে সামার ভাই, সাম্ম কর্লো হা ? খানকগণ ৷ বাং বাং বাং ব নিউমিনী। স্বায় আয়, ভোৱাও ভোৱতাল লালার মুগে চল, অনি ফুলকো কানালে, তেনাও এক এক প্রাপ্ত থাবি।

(दाकायक्षात्रीत भी है।

भार बार पार -- मुख्य है। से सीना होरब दर्ध गुजी है াতে লেভে লাটে লাটে চনবো —ছলটো —ছেলবো ।। কেবলো ছুটাছুটি, খেল্লো গ্লান্ট, क्षित्रमा सूम्यानित्, त्रम्ता अंख्याक, होरांक केर्रांश शिव, केर्रांश ठीश्र (वा । াল নাদা বিৰে, গাব ভালি দিয়ে, ংতার লোকাম ব'লে ছল্বো।

> িবালবগণের গান গাহিতে শাহিতে প্রহান। (দনিক পণ্ডিভের প্রবেশ)

বেমন আক্রেন-শিউলীপাড়ায় দীল জ্বা-ত্ল'ভ পূপ ভার তক্ত এখানে কৃটে থাক্ৰে! मात्त्र! अने निख्यो क्षांजाकार कारक त्रहेने क'रव नृजा कराक ? मुख्य मध्यक, शिविक

বস্ত্ৰ পৰিবতিন, ও ভো দেবছি একজন প্ৰয়ানী বালক, বুংছটা কি দেখতে ই'লো।

চতুৰ্য পৰ্ভান্ন

শ্ৰুৱাচাৰ্য্যের আশ্রম। শ্ৰুৱাচাৰ্য্য ও সনন্দন।

गलन्त । जाम यख्यात शिल्लाक, बातवारनेक कनी द्यादन करा एक गा। नशामी महके मुखन शृक्क निरम्त्र भिध निरम् तीन करत, ज निमिष्ठ १८२ मन भाकांत्र ताक्रभ कार्या शुख रक् স্মাসীর আগ্রন দেইরূপ विवकत, शृहरस्त्र ধারণা। সেই হেড় পিতৃতাতে সন্মানীর ধারত হওয়ার প্রতি মণ্ডনের বিশেষ নিবেধ। ভনবেন, মণ্ডন মিল উগ্রহভাব আপনার আগমনে কাৰ্য্য প্ৰত্য হ'লে আপনাকে অপ-মানিত করতে পারেন। **मक्षत्र। 'यदम्, महाद्म्य महाद्मिनी मिद्रोट्हन छोत्र,** दिनकारी कृतिव छेकात, ইথে বিহ কলাচ না হবে। **प्रका**री जननी समाजि রাখেন সম্ভানে খফে করিয়ে ধারণ, সেইমত জগমাতা এ দীন সন্তানে মহাশক্তি আব্রনে রক্ষেন সভত। েৰকাৰ্য্যে বিশ্ব অসম্ভব ! করিষাছি বিদ্যালাভ গুরুর প্রদাদে, (यह विमान्दल নওবের গৃহ-পার্লে নারিকেল-তর করি মেরে মন্তবে ধারণ मधन-श्रीष्ठन-मार्थ कतिरव जानन । চিন্তা ত্যাগ কর মতিমান गहामात्री अन्त नहारन,— পুত্ৰ তাৰ কুনাসিনা পাবে গৰাপ্ত। পর্ম পতিতাগ হ'লে সমুখীমা विना। जात्र महायापी करवन इत्। त्यर रहकू नेति व विका, मन महिन्दरन नह, অত্যে জগতে আমি মারের প্রভারে। शतनान । वृश्विमिकिशीन धरे तीन माम खत्र गालक विका तरेक भारता किए क्षति ।

क्षेत्रकार के देश उन नाम १५० भटने कार्ट गम करमार्छ श्रीत्रणा, রীর্মানো সম্বব নহে তর্ক-বাং করু। শ্রিকান-গাভে তব কিবা প্রয়োজন দ প্রভাক দর্শনশাস্ত্র অধি-বিবৃচিত, क्षित्रभनि विद्यांवी भवलाद ; क विरदार्थ यायुनै अष्टर गम। ম্বন্তিও চরগাভিতে সম্ভান তেনেশ্য **उथा**चि म्लाह मत्न इप्र निवयत. विकास व्यक्ति किकार करा गय. প্রভাক কিরপে হবে সভোগ নবরি। শহর। বংস, স্থিরচিত্তে কর্ছ প্রবর্ণ, ভর্মুক্তি শক্তিহীন সভা-নিপ্রপণ -তকেতাহা হয় নির্দিটিত : **ভর্ক-বৃদ্ধি-মাশ হোড় ত**র্ক প্রভাগন , खन वर्ग, (व काला इरेशाट्ड क्लेन बडना । মানব-কলাণ হেডু মহাখবিগণ, त्व भगंत्र मानत्वत व्यवही त्यमतः করেছেন উপযোগী দর্শন রউনা। বেদ্যার্থ ব্রিজত কুতর্করত জন निहान करिन, पर्नराष्ट्र अरहोजन । निर्मान सुनाम इब गाउउन जैनम् পত্যযুগ্তি নাহি হয় দৰ্শনে দৰ্শন 🖠 गननम । यक्तिष् चुनीबेमान नाम व्यक्ति कर विभव मदेवर्रमश् दुनिएड ना भारित, कारलाजी, करबी होने मान । শহর। কংস। কন্তি, ভার্তি, প্রিয়-এই মহা বাকাঞ্যে,---সমুদ্ধ বেদার্থ স্থাপিত। নিদামান পরব্রদ্ধ নিডা সহায়াশ, প্রির তিনি,--এই সার জান। এই মহা সতোর আন্তাস মে মুহূর্তে পাইবে জনমে, प्रयुक्त-सिन्द्रभ दर्श इस अद्रमानानी रमहेक्ट्रा इंटर एवं मध्यक् रृद्धि । **े जिलाएक श्रम्मधा ६ ल आहरू ॥ गरमहार** হয় বংস জানের প্রভার : विषि, कार्कि, विश्व-महा जात्नाक अन्तित उर्क कि शर्निक योगाओं देवन सान गोहि शोध

क्षा काम वह क्षांत-पर्

যুৱকার। তাড়ু। বন্ধ অন্তি গ্রাকার, প্রিয় বস্তু সেই,——

তিনি মানি বৈচ ৰোগ, সহৈত্য কিৰূপে ? এক জান প্ৰক্লিন কৈমনে —

किनि सामि टिल वर्ष-कान ?

শিক্ষ । গাঁপিনতৈ কর বংগ, নন সহিত্যে, শাঁশ হ'তে প্রিয় আর কি আছে আদার ? প্রত্র পরিবার —প্রিয় বস্তু বা আছে সংগারে, থেয় তাহা আমার বাধ্যম ।

ব্ৰহ্মকন্ত প্ৰিয় মন আমান দ্যান,

স্ববিংশ এ জ্ঞান-আসি ভিনি ভেল নাহি রহে,

প্রিঃ ভানে এক জ্ঞান গলে এক সৈনে। এই পির ভানে ফুল্ল অহন বিনাশ,

कुलंब अस्त्रिया रह जतीम अश्मः।

तकवास विमुख अरम्

উল্ল লোহা-ভাৰ অংং বৰ্জনে ! মনোকৃত্বি অহস্কার লয় সমুন্দ্ৰ,

আহিডানে স্বস্থান জুলাইং ক্ষে।

ाचा गोलिक वह ग्रा छोनोछन,

भागम निवित्ति, -तिहै भक्तांभाजका।

भननाम । शिक्षकि माधन यदि की फानाकीतन डार्च रकन भागः भरत राम यहाँ हिण्य १ विक रहेर्द्र यो कार्य। छात्र करहन राह्य १

শশুনের গনে বাদ কিলা আজান্তম ? শিক্ষু । সেওগারী মাত্র বংস, যাদার অধীন। মারা, কালো নিটালে করিছে নিরন্তর ।

भागाद काही किया कर

্রি**শ্বনাং ক** গ্রেছার জ্ঞান করে আবস্থিত। এ**কার্য্য করে হ**েমধ্য মধ্যমিক ১৮

मुस्तिद्धं र भि विभागन,

মে কাণ্য-প্রভাবে,

अविषा विनात रुव गरा विनात्त्व । अर्थ गरा जोड्युन, ५७.३ व्यामाभ,

क्रिया कर मुद्र-

क्रिक मध्य मम भिग्न शहर।

শুৰুৰ প্ৰতাত্ব

714 1

डेबरेबर के नगणि :

গণপতি। দেশ শাস্ত্রতি তোমার লক্ষে যে প্রাকৃতি নানিমে রেখেছি যদি তুমি হাত কক্ষত্র পাব।

উগ্র। :কাপাস-নেম্বার १

গণ। দেখ শুক্তি, দেশলেই জোমার মুগু বুরে বাবে।

উগ্র। বটে বটে--লোপার বলু দেখি 🎨

গণ। এই সংরেই কেরাতে **দেপেছি, সে এবো**ণ ব'লে।

हें। उदं कान मामका विका

গণ। বা **শু**রুজি—না, পিরীতবাদ—ব্রেগ্রতর জন্মে এরা। মনের মার্থ পাদ না ব'লে কেঁদে বেডায়।

উল। এবে বোগাড় করে: নাবা, মোগাড় কবে। ।

গণ। লাগাড় কি আমান কর্ম গুরুজি ? তা হাল তো আমি বাগিষে নিতুম। বাগিষে তোমাধ নিতে হবে।

ইগা । পার কিছু পাছে টাছে ?

গণ ৷ আছে না আছে, কেমন ক'রে জান্থা গুলুছি ৷ গুটালছার-ভূবিতা ৷ সে দিন পদ-গমনে আমার সাম্নে ঝম্বন ক'রে চ'লে গেল, আমি হুমড়ি ধেনে পড়তে পড়তে সামলে সিরেছি ৷ (অদ্বে মহামানকে দেবিয়া) এ— শ্র—

উপ্ৰ। আহা হা। দেখ শিষ্য, আমি এফটি ছল প'ছে লেৰো, শুমি খোগাড় ক'বে ঐ স্থলট ওর নাকের গোড়ার ধরতে চাও।

গণ। সে পুৰ সোজা, এ দিকে ধুৰ মেলিাথেম মেৰেমায়ং।

321 । पूरे बागान करात्रित ना कि कि बागान

त्रन। ध्य वानानी केंद्रात त्यावनाध्य, कामाव नत्य त्यट व्यानान करवाक।

(भारताकार्ति। महामाशाय आरवता)

वर्षाः कि व्याद्यापता है कि तापक है क्रिकेट प्राथमित व्यापता भी ता वा का

MWSTS ST

মুখা উদি ভোনাৰ কে গুলফা না স্থিপ প্রিক राष्ट्रगं मां।

उञ्चा अधिक साहि मिन्तरे एक जाहि, প্রতামাত **প্রতীকা**র দাঁড়িয়ে আছি।

यहा। आगिष्ठ देशमान करते पूर्व पूर्व दवड़ांकि ভোমার মন্তন বোক পেলে আমি প্রেন ক'বে প্রাণ ঠাঞা করি।

গ্ৰ। তা দেখ মেরেমাহ্ব, আমার ওকলী প্র विषय ।

महा। एक् त्रतिरकत कर्ज नत्र, आयात अकृष्टि काञ्च कब्एड इस्त ।

उद्या कि इकूम करता - कि इकूम करता ;

महा। तथ, मत्नत कथा जामाद चृत्त वित, आमि ি বড় ছখিনী।

উগ্র। তোমার কিলের ছাথাপুরি কর্তে হতে, ভুকুম करहा ?

মহা। আমি শহর জালায় অন্তির হয়েছি, আমার বিপুত বাজা, হঠাৎ শক্ত উপস্থিত হয়ে বুবি আমার রাজ্য কেড়ে নেয়।

उता। यत मा, रल मा, क्लांको कि रल मा १

মল আৰি সভাই বলেছি। আমাৰ শত্ৰু প্ৰবদ ব্য়ে দিন দিন আমায় বাজাচাত কর্চে, ভাই ভোমার আগ্রয় নিতে এনেছি।

উগ্র। কি, ভোষার ধৌধনরাঙ্গা না কি १

महा । हा। - धन-मन-त्योवन-त्रीक्षां - ममख्दे आगात अधिकादि ।

ुद्धा त्या ।

मरा। जूमि मिथरा विद्युहमा करता ना। अहे आयात व्यवहाँ तथ- व वहम्मा, त्लामान मान एक कि ? जात प्रि कि ठाउ, जानाक तरमा निर्मा ना-त्म प्रकृत । जाता त्यम कहरू विह পানি অধনি তোমার দেবোঁ

भी। अनिक्षित) अपनि, कि शैका सामान करती ना ?

बैहा कि - छोका छोड १ सांच - उरे धक शत त्मारेत माठ, आयात या किह आहर, मर তোমাৰ দিয়ে আৰও, বদি তুলি বীকাৰ পাও - भागाव जुनि स्थान नित्व।

भग (असाम्रिक्) कर्मक, विक्र क्रिका-रिव CHENT 1

(सहामात्राह थाउँ) छो, छात्राम मिन्स, दाम: শ্ৰীপ তোমুর দিশুম।

महोगर समम मा-- एक-पूर्वः मास्त्रो कांद्रः वर्ता १३, उमि आमात्र।

डिगा। (अगड़) कि यान वहीं।

গুৰ্ । (क्रनाञ्चित्क) গুলুজ, ধ্ৰেঁ। ক্ষাড় ক্লোড च'रम रकर्ला ना !

भशी। कृमि (शृङ्का), वार्रि हन्त्मः वार्षे प्राह এক জামগায় মনেৰ মতন লোক লেখে তিই

উপ্র। না না-সেছোলে কেন-প্রভেণ্ড কেন, কাৰ্যনোধাক্যে আমি তোমার।

मही रहत व्यक्ति नेश हरन करता। भोगान প্রধান শত্রু শঙ্করাচার্যা:

গণ। কেন-কেন-তিনি ভোগার শত কিলে গ

মহ।। তৃমি ছেলেমায়্র--কুলি কি বৃদ্ধুৰ 🕫 🕫 नक्तार्रार्था-महारव आयात नक माना कारा मिर्प्राष्ट्र, महोन ब्लापा जारन अंक कोरन किएन त्तरथं नित्रिष्टिश्रुमः! अञ्ज मिन मध्याजार्थाः भा হ'লে হয় তো সে মারা পড় দো।

केश। कल्

महो। ति भागात उगी। अक मोद्रब अही ष्यामता स्मन्न महान। ठिक आमात्र नरानर দেখতে লামার এখন আছে, ভার বিন বিশ্বৰ্যাতেই এক্ষা; আনার শক্তি আছে, তাং নিনা শলিবছেই শক্তি, আমার ভোগ আদে তার বিনা ভোগেট আনন্দ।

উগ্র। আছা, তোমার এত ঐপর্যা, ভূমি ভারে एमन कर्टि शरिवा मा १

পারে—দে একজন বোধ হয়, ভুমি।

डेश। किस्स जानार

मरा। बामान अवह जनदी, किंद आमि छातान মা'র কেনে বড়; ভূমি স্থান্ত দাল প্রেল ক্রতে আস্ছু!

उत्ता अन्याद्य भारह, तमनी अनमी अनमी प्राची प्राची। माना क्षेत्र पूर्वि स्रोतात लाला लाकि। क्षित्र विकासिक वर्ष करहा, एउपर १ करे লীৰ কৰিছে প্ৰভাৱ কলো ; তা হ'লেই আন্দে MIN GER

ত্র পাছিত ভা তাই ধু কচি—আবিও তেল पारे पूँकि। नेकताहायातक यानि मिट चागि एक सहिमिक लोक को दा

মহাা দেখ, তুমি হামার প্রিচ সম্ভান ি

গণা (জ্মাছিকে) ও তড়্ছি, এবে বেরাছা वाकि। सारम १

উগ্র। তই কি দুনবি ছোডা ও খুব এদিকা। প্র। এবা ছাঙ্গে খম এম ক'ছে কারা আগছে (511 9

महा ! . ६कः अधात मधी, दृष्कही । वश्य द्वीम आगात হ'লে, তোমার সংক্র নামরা পাকবো।

(অভিনয় সহস্কী ন্মের প্রবেশ)

₹®.

एएम (इ.स. २०१६) वीम मन्याहिनी मन मङ्गाई। रक्षा है। इस इसम् हर इसम् उत्तर स्थापकि ।। কাল এপ্রনিদা মার্কা, কার' কবে দিই ভববারি, यास्यद्र कारम एक है जहां शहीं।

ক্ষেত্ৰ হা ভিছ্পেনে, ভুলিতে আনি প্ৰাণেক টানে, श्रीर सं म। श्रीय मारवत (स्थात.

इस्ली शता ने वा व्यक्ति।

ব্রেন্স বুরুতে পারে, ধরতে স্থানা ধরে ছাল।

্ মাল্ডমায়া ও জংসহ বীল্ডলে প্রস্থান।

िश्च । विभाग भूरत उर्ज शुक्त रा - विन्त भरम ্ চ'লে গচে বে গ

িউঞ্জিত চৰৰ ও ফালে ভিৰ গৰাই প্ৰস্তাহ প্ৰাক্তান ৷

্রষ্ঠ গর্ভাঞ্চ

মধ্য মিলের কক।

্পিতৃপ্ৰান্ধোণ্ড মওস্থিত ও সুৱৈহিত। ইপ্রমা নভশির নারিকেলাক হতে মুক্তিতনতক

ও কখাবারী বিরাচাধ্যের অবতরণ)

मधन। य कि विश्व। सारट जल्ला भगान्य-प्रजल कार्याव्हा मुखिनमञ्जक ८०० । १८७१

अक्रत । व्याशमाद को हक अहर अवस्थानाई र्म अक्रमण्य शतिका श्रीतार निर्माण ।

अभिन्न अपने स्टाट छटि छा। के स्कू বিস্ত দেখাত স্থানতের ক্লাস করাবহন হরতে शहें।

नकत। किन्न द्वायोक्त भूतनायुक्त अहिं। िवृद्धिमार्थ <u>चात त्वाव शत</u> काम्राठ**े गर्भ**र ারপ কৈন্দ্র ভারণার-মুহুনে অক্ষয় সেইক্লুপ নির্ভিমার্গ টোমানের বংশে অস্ত; বি निभिन्न नाती-स्मवात अन कर्य शहर करें निथा ७ यटकाशवीत है खिन्नेश्वरात आर्थित क (तक्षा)

भंखन । ইয়া ইয়া, লোকা সেছে, বোকা গেছে,— ক্ষীর ভরণগোষণে অক্ষম হয়ে জাকে পরিজ্ঞান ক'বে আসছ ৷ এ দিকে শিব্য করেছ, প্রশিষ ভার বহুন ক'বে লোককে ব্রক্ষিষ্ঠা বেশীদে गथत । जात दहाराज्ञ कर्यनिहा कर्युकाक प्रतिर অনার কিছু বাকী নাই। **ব্যুচ্থ্য পরিত্যা** क'रव 'छक्टमवाब व्यवम इर्घ खीव त्वता बद्धा धानहः, जान भारत गारता किकिए पुक्तारिंग ক'রে কর্মবীর নামে আপনাকে প্রচার কচ্চ 🌬 🦠

मधन। आत्त कुछत्र मूर्थ, जीत्नात्कत्र शर्छ तीन কবেছিদ, ক্রীলোকের মারা পালিত হয়েছিদ, আবার সেই স্ত্রীলোকের নিনা কচ্ছিণ্ অন্তক্ত পামর গ্

শন্তব। সার ভূমি পভিত। স্ত্রীলোকের গুরুপান াবড়, শ্রীলেণকের গরে জন্মেছ, অশ্বার জীলোককে ভার্যাকপে এহণ ক'মে ইতির-ब्रोबमा ५थं कछ।

মধন। ভূট রাহ্মণ হরে হারী তাগি করেছিল, শার্মতে এতে ইক্ছডারি পাত্র হয়, ডা ক্তানিদ্ ?

नवता सामि हेन्द्रशाहि शासकी हेर्ड भावि, কিছ আনহত্যার অপেকা মহাপাল কার পানে नारे। एमि अवस्थान-गाउँ किरो ना क'रत जाबनादन अनुस् स्टांस, कृषि जाबरा है। त आवर्षकी, उति वस्रशंकरमागद्र लादक 不是要让

म अन्। देवे कात, दूर शातवानश्व आठाविक करेंद्र द्वादित छाउँ व क्रांतन क्रांति । শক্ষর প্রত্তির অরে জিক্লেকর আবে আবে भणनः। भारत गण्डा निधानामः वरकाशवीकः तथ । अवि किम्नकरकः विकार कर्मनात अवविकासिकः আবৰ্ধ রাপো এক চোহের ভার কে ভিকু ব্যের ক্লংশ ভক্ষণ করে। ।

। দ্ব হোক ইমি আবাদ ব্ৰহ্মবিং নেজে ছেম। কোপায় বন্ধ আবি কোপায় তৌনার নত মুখ । কোপায় সন্নাস আব কোপায় কলি। পরিপাটা ভোজন ক'বে বেডাবে ব'লে ক্য়ালী নেজেছ।

শশ্ব। কোপায় স্বৰ্গ জান কেথায় তোমান মত হুনাচাৰ, কোপায় অগ্নিহোত্ত বহু আৰু কেথায় খোর কলিকাল; তুমি নারীন সহিত বিহার করবার জন্মে কপার ভাগ করেছ।

পুরোহিত। বংস মন্তন, আমি ভোষার পুরোহিত,
ভোষার হিতার্থে বল্ছি, ইনি মুক্তিবেশ্বারী
ভোষার গৃহে আগত, এ তেকের স্থান নূপতি
হ'তে সামান্ত ব্যক্তিরও করা কর্ত্তরা। ইনি কপট বালি হ'তে পারেন, কিছু ইনি ঘিনিই হোন, িত্রান্ধের দিনে সমাদরে ভিন্নাগ্রহণের জন্ত ভোষার অন্ধরোধ করা উচিত: এরপ কট্তর বালি ক্রান্ধিন সমাদরে ভিন্নাগ্রহণের জন্ত ভাই বালক সন্থানী—পরিহাসজ্লে তোমার কথার উত্তর প্রদান কচ্চেন ভিল্নাত্র বিচলিত নন। তুমি হ্রোধ, ক্রোধ পরিহার ক'রে এঁর অভ্যর্থনা করো। আমার অনুমান হয়, ইনি সামান্ত ব্যক্তি নন, এঁর ব্যঙ্গপরিহাসও শাস্ত্রস্কত; এতে বোধ হয়, ইনি শাস্তক্ত।

মওন। রামণ, আপনি যথার্থ আক্তা করেছেন। (শঙ্করাচার্যোর প্রতি) ছে যতি, অন্য আমার গুহে ভিক্ষা গ্রহণ করুন।

শহর। পণ্ডিতপ্রবন্ধ, আমি নামান্ত ভিক্ষার জন্ত আপনার নিকট আগত নই, আমি সৃদ্ভিক্ষার কামনায় সমাগত। আমার স্থিত ভর্কে প্রবৃত্ত হোন, এই আমার প্রাথনা। কশ্বনাও আপনার প্রিয়ন কশ্বনাও আমার ব্যক্তির কারে আমার ব্যক্তির কারে আমার কর্মনাও সিংধ করন। করি করি করি আমার ব্যক্তির কারে কর্মনার প্রভিত্তবন্ধ, বিচারে প্রবৃত্ত হোন, নামে ক্যমার নিকট আপনি প্রাভিত্ত শীক্ষার ক্রমনা, বাজিত শীক্ষার ক্রমনা, বাজিত শীক্ষার ক্রমনা, আমি

প্রাদেশে থাগত। বদি অনপ্রনের, কণাণ্টা প্রাক্তন প্রকৃতি থামার পৃথিত বাদাপ্রাল ক্রুবার্টা আমি পরান্তিত, এরপ বাদ্য কথন ক্রুবার্টা কিন্তু তৈ নিংসত হবে কা। ক্রুবার ক্রুবার্টা তার্কিন, চিরদিনই তর্ক করি। বাহু ক্রুবার্টাইত তর্কে আমার ভূপি ক্রেবার্টা বোগা নিউত উপন্থিত ব'লে প্রকৃত্ত বেক্যার্টা বি, তা প্রতিষ্ঠিত কর্বার নিমিত্ত আমি কর্মান্টা বার্ল্য। মধান্থ তির কর্মন সামি নিবাহের প্রভাত।

পরাজর হবে, তিনি নিজ মত পরিতাগে ক'রে বানীর মত গ্রহণ কব্বেন। বনি আমি পরাজিত হই, জামি গরান আশুম পরিতাগেপুর্বক শিখা ও বজেগেবীত পুনর্কার ধারণ ক'বে আগনার ভার গৃহস্তাশ্রম গ্রহণ কব্বো। আর বনি আগনি পরাজিত হন, শিবামুগুনপুর্বক আমার নিকট দর্লাদ আশুম গ্রহণ কর্বেন। বে বাহিল পরাজিত হবেন, তিনি অগবের শিগাল-এহনে কৃত্তিত হবেন না, এরপ প্রাক্তির ক্রেনে।

মণ্ডন। নিশ্চয়। আপনি বালক, অন্তিজ্ঞতাবশতঃ
কলিতে নিমিত্ত সন্ত্ৰাস্থৰ্য অবলম্বন করেছেন।
আপনি মেবাবী দেখছি, আপুনাকে সংসাবী
কর্তে পাব্দে সমাজের হিতস্থিন করে। ছয়ে।
কারে মধ্যন্ত হির কর্বেন বিবেচনা করেছেন।
করে। অসিনার সৃহিনী।

মণ্ডন। উত্তৰ-উত্তৰ। আপুনি করে আমার গৃহিশীর গুণবাধো করু আছেন ?

শহর। হা। তিনি সাকাৎ ধর্মতী, আমান এই রূপ ধারণা।

मधन। विहाद्भव मिन हित करून।

नुष्टत् । 'वार्षि नर्जनाई विकासक्र क्रम्म असर जाननीत वर्षियक दक्ष, कगाई विकास प्रोत्स द्राक ।

স্থান। উত্তম। আহন আন্ত কণা ক'রে ভিক্

िनक्षत्राहार्गा ७ मध्य मिटलेंब अक्षान ।

मध्य । यदिवत, अप्रताम रहे स्थापनि कथार अवस्थित के कि तर कि अवसाहारी र स्टान

नकताहाया अबर अकारक नताक्षेत्र कराज ममर्थ। तक लारम, विठारतत कन किकान देव।

প্রিস্থান।

বৰ্ণনা কৰ্টেন, ভাতে এরপ মই স্বাংশ কিপ্ত হৰ্ণন তো কেন্দ্ৰ সম্ভাবনা নাই। ২য় পণ্ডিত। আছে।

দ্রেম গর্ভাঞ্চ

। বনপথ।

(তুইতন পঞ্জিতের প্রবেশ)

১ম পাউত। আৰু কোথায় বাচচ - কি দেখ্বে :
মণ্ডনের গলদেশের মালা ককলায় । মণ্ডন নিশ্চয় প্রাজিত হবে।

২ৰ প্ৰিত। মালা ভৰূপায় কি ?

্ম প্রভিত্ত। মতনের গৃহিণী উভয়ভারতী মধ্যস্থা निश्चक इस । जिनि ऋएगेशा मधास्त्रे वर्टेन। মতানের ক্রী বাল্ন বে, একপক্ষে ভেঙাপুঞ্জ খতি ি নারারণস্করণ, আব অপবপক্ষে স্বামী সতী সীর সাক্ষাৎ নারারণ: এই গ্রন্ত কবি জয় কবি প্ৰাক্তয়--তিনি মূথে প্ৰকাশ কৰ্তে অসকত ! ' পতির গলার এক**টি মা**লা প্রান্ন ব্রেছেন জানীৰ গুলাল আপুৰ ধেষটি জালান ফাৰ-াছন ৷ বাৰ গুলামালৰ মাণা আগ্ৰা শুক হবে, ति विदेश वालिक का द्वाप्त होत्तम । आणि मध-त्मन शनकारणा माना क्षत्रकात काय दानांह। समिष्ठि शर्वशाम शिका, कड्या राज्याना प्यात স্থান নাই, একজন বাক্তৰ এবে সমত প্রবেশ জয় ক'রে বাবে, এ মতি অস্থ বিশেষ মণ্ড নের প্রাক্তার জানকাণ্ড প্রতিষ্ঠিত হবে ; ডা হ'লে আৰু আবাদের স্থান কোপায় থাকুলে গু स्त्र भिष्ठ । ह'ता धालन दकन १ हनून मां, प्रथा ধাক -শেব কি হয়।

হয় পজিত। তবে কি উপায় ।

১ম। পেৰি কি উপায় কৰতে গাবি। বাদি গোল-কলে এক পৰীৰে গালে আমিল কলে, ভা হ'লে ভিনাত্তি হৰে। বাতে প্ৰক-ক মান-জনিত মহামাণে দিয়া হয়, ভাগ্ৰ এই তাই এইবা এপেতি।

শ্রু প্রতিক । **জাপুরি**গ্র**্থ যতি**ক বিদ্যাবৃদ্ধি লেরস

(निष्की ६ निष्ठेनियोत् अत्वन)

শিউলিনী। আরে **মিন্সে,** এথানে তো **চার্টারের** দেখ ছি নি, তবে কোন্বিগে গেল রে ? ভৌকে বঙ্গু, আমি ফুল্কো বানাজি, তুই বাছার সকে ধা। 'চুই গেলি নি—'চুই নড় তে লাছনি।

-ম পণ্ডিত! আরে ডুই কাকে পুঁ**অহিন** 🕈

শিউলিনী। আমার চাদাকে ব্**জছি। ইনা বাবা** ঠাকুর, হলে বৃদ্ধিতে কোন্ বিগে বিবেছে, বল্তে পার ?

১ম পণ্ডিত। প্ৰিতীয় পণ্ডিতের প্ৰতি জনান্তিকে। কাকে পুজছে জান ?—শঙ্করাচার্য্যকে। (শিউ-লিনীর প্ৰতি ; চাঁদা ভোৱে কে? তারে পুজছিদ্দেন?

শিউলিনী : বাবাঠাকুর, সে আমার বাপ্ধন আমার পরাণের পরাণ, সে চাঁদমুত্তে আমার না ববেছে গো, আমার গরাণ জুড়িরে গেছে ! আমি তার গর মৌর ফুল্লো কানিবেছি, মে থার নি ে আমার গরাধ কং কং কচেত।

২য় প্রতিত। সে তোর ছোল না কি ?

পিউপিনী। ই গো, লে জামায় টাদম্ভ মা বলেছে, আমার বুক জুড়ানো টানা।

শিউলী। বাবাঠাকুর, আমি হু কেঁচের রূপ সেবো, সমযার চাদা কোবায় ব'লে লাও।

শিউনিনী ৷ আরে চাঁনা রে নাদা—থেসে আত, থেয়ে তবে ধেলাতে নাবি ৷

স্<mark>ম পণ্ডিত। তে</mark>য়ার চাঁদা কো লোৱা নাই।

শিউনী তাৰে কোন বিগে গোল বাৰাঠাকুর— কোন বিগে গোল ভোন ভুলি ভুলি গোল বাৰাৰ অভিযাদি গোনি মানে গাকে নি ১) ৮

ুন পণ্ডিত। তোৱা আনার মঙ্গে আর, তোলের ইংলাকে দেখিলে দিই গে।

শিউলিনী। চলো বানাঠাকুর—চলো। মিন্দে তোনাম হ কেঁড়ে রম দেবে। আমি তার টাদমুভে দুপনা ফুল্কো ডুলে দিয়ে প্রাণটা ফুড়োব।

্ন প্রতিষ্ঠ । আয় । (স্বগত) শঙ্কাচার্য্য, এইবার ভোষায় নুধে নেবো। ২ম পণ্ডিত। (স্থানাজিকে) এ আবার কি কচ্চ?

এদের নিমে কোথার থাবে?

১ম পণ্ডিত। চল লা, জোনার বলছি।

[সক্লের প্রস্থান।

অন্তম গৰাহ

মণ্ডন নিজের বাটীর বিচার মণ্ডপ। মণ্ডন নিজ, শঙ্করাচার্য্য ও পণ্ডিতগণ এবং কাণ্ডার-অভ্যন্তরে উভয়ভারতী।

মন্তন। মালা ভদ কঠে মন প্রত্যক্ষ নেহারি,
প্রাজন বুনিয়াছি অন্তবে অন্তবে।
ভর্কশান্ত-দিক তুমি বেদজ পণ্ডিত,
প্রতি ছতে খুকি মন করেছ নিরাস,
ভাগে ভাগে করি মন তর্ক-বিলেবণ।
মহাগন্ত, জেনেছি নিশ্চন,
সানাত মানব তুমি নও;
মান হত, দুজ নিত্তিভি
প্রভাবে কোমার ধর্তীশ্বর।
শক্ষর। কহি আমি সভাত্বলে হে পণ্ডিতবর!

তর্ক দৃত্তি-শক্তি তথ অতীব প্রথন,
বিষ্ণাপ্তিক শক্তিতানে অধিনীয় তুমি।
পান্তিতসমাধ মাথে কহি সভ্যবাণী,
পরাধিত ৭২ কোন মতে;
তর্ক-মুদ্ধে জিনে ভোমা নাহিক ভ্রনে।
কিন্তু —
যন সনে তর্কদুদ্ধে থাকু বিশ্বহিত;

বুন চিতে পণ্ডিতপ্রবর,
তর্ম-বৃত্তি—-বৃদ্ধি শক্তিবলে,
তর্ম-বৃত্তি—বৃদ্ধি শক্তিবলে,
তর্মন মাত্র সনহের ধন!
ক্রান—দীপ্ত নহে কদাচন,
বৈরাগ্য না করিলে আশ্রর।
বৃদ্ধিবলে বৃদ্ধি পরাজ্য—
দিত্য হের শত শত হয়;
কিন্ত দেনো বৈরাগ্যের জনোদ প্রতাপ।
হাদি-মানে ধরে বে বিবয়-অনুরাগ,
তর্কবৃত্তি বালে গাহে করিতে স্থাপন:
শেক্ষামাত্র বিধব অর্জন।

ৰাৰ্থ ভাবে কৰে প্ৰভাৰণা—

মাগ-হজে মতি বর্গস্থের কংমনা;

স্মুক্তি-সত্তে অন্ধ গৃতি তার।
বিক্রে আগ্রেহে হুই আর্থ বিদ্রিক,
করে সভা প্রত্যক্ত সম্বর্ধে।
সুক্তি-বলে প্রত্যক্ত না হর প্রার্থ্য,
বৈরাগ্যে বিজিত তন তর্ক-বৃত্তি-বল।
প্রান্ত্রন্থ ইইবে নাহার,
সে করিবে গ্রহণ আগ্রম স্পরেব।
নান' ধনি পরাজ্য ইইবাছে তথ্য,
পরে তুমি বাধ্য মম আগ্রম-গ্রহণ
কিন্তু পণে মুক্ত কবি তেমি বর্ণৰ সন্মুধে।

मखन । ग्वित्त !

হীনজ্ঞান কোন হৈছে করহ আনার ? পণে মুক্ত কর বনি তুমি, কেন ভাহা করিব এবে ? নিরাশ করেছ, আনি বন্ধ আছি পণে, এথনি প্রস্তুত তব্ব আশ্রম গ্রহণে।

শতর। হে পণ্ডিতবর!

স্বাংগ্রি স্বভাব জেনো এতই প্রবল,
পরাজ্যে অভিযান নহে বিদ্রিত:
অভিযানে পণ্ডে মুক্ত না কর গ্রহণ;
কিন্তু জেনে:—ম্মাগ্রম অভিযান্ত্রীন :
অভিযান্ত্রীন বিনা নাহিক জ্বাহার

বাং পছা নক্ষাক্ষরত্ব অবিকার।
মঙ্কা তারীখন, কট কাহি হও মন ভাবে।
পত্ত অভিমান পূর্ব নেহারি ভোমার;
পত্তে মোরে গলে কর নান,
অভিমানে মন সনে হর্কে সামী ভূমি,
অভিমানে মনাস্থানে করহ ভ্রমণ,
শিক্ষানান অভিমান ব্যোহ নিশ্য।
শহর। ব্যাসি ভানিতে ভূমি অভিমান কিংক,

অভিমান স্থান বা লাইত আৰ।

স্বার-প্রসাদে—

তুমি আনি সমজান জন্মছে আমার।
বাধা পাই হেরি ক্যা অজ্ঞান-তিমির,
গাই তথা বোর তম হরণ কালে।
গাই হেতু তব সান দক প্রয়োধন।

হিরাইনে এক মতিমান
স্কারত লখন কান্য মতিমান-

कर्पाधक वर्तनांड मध्य निष्म्य । ा कियम वर्गा जेला जोट किया गन। বে টেকয় **সহে বৃদি** লোগ শেব হয়, হুতথ ক্রমিন্ডা -ানরার কার্য্য-প্রযুক্তনা सर्गता ह सर्गक र भूतः भूतः रहे-ভাস স্বীৰ স্বশাস্ত্ৰতা প্ৰোতেৰ প্ৰভাৱে। कि इ अनिनी खि शाहरत हानता, দেই জ্ঞান আনৱিত মারার প্রভাবে, र-वद्ग भार मन्त्र ৰভৈ ভাই---गिलामन अगटन निकास। दल शांकि हाट प्रति उत्तर. कर मध् साध्य अक्रम भारत माहि योग्न, खोरम गाँउ छ । विकि मीत एक करा। सरितिकी हन, भार्थ जान्द्र करद आकाहन स्कित्य सङ्ग्रमम्। কিন্ত কে ভিড,পলংকে निविधादह भटन गोरिकांड दिना माहि व ना शुंकरन, त्रहें (ध्हें नहां- हि। १११) ধদি ত্রিভাগ-জালার 111 11 BIR-কর বিবেক আলা। यार्थ श्रुट कहा, া আৰম্ভি জান-লোভিঃ হবে উঠালিত, शांकि तनी कांमित्वन भूनदा रहायांत्र। मध्य। अग्- वज्ञान्तः। व्यदिकुकी कृशाह छावाह। कड कुन्। गुड़ांस को बाद ? ্ শহাক্ষ্ট কৰি **অন্নীকা**র, महि जिन्दानात, **७८न६ मञ्जन। जो मण्डन-अनारम।** 50 %, भारत गाउँ भारतियह शास : বন গণ্ডিত। যিলা ভুনি কুহবনীর কুন্তক কেন एर्ड २००१ मनाहारी एउ त्रमामी लावनिष्ठा-भाः छ। यो। अश्रीका करत्छ। धार्यने भागक

ति: " अश्वाको विकि।

मधन। ही, क्हली वर्तन। जिल दूशक ज्यम हे दूर कि द्वा कि हो कि द्वा कि द

रोधत। रश्म, ध छामविकारमन भूट्ये धक्छि কার্যাস্কানের অয়োগন। দে কার্যা কাহারও নিবট অতি সুহক্ষাখ্য, কাহারও প**ক্ষে অতি** कछर। कांदा- अक्रवारका विश्वाम। उद्दर्शन टांबा, श्वक्ताक। मश्राविभाग वाछील क्रांह ধান্ত্রণা বর না। জেনো, ভব্সংলারে ভারতী একদার মার বস্ব। জান্দাতা, মুভিদাতা, প্রত্যেশ্বর্ণদাত্য -প্রক্র প্রতীত আন কেচই मार्डे । अनुसारक केशनांक दर हा, श्रामि भूक, বস নই: আনি বস ও জননামাত, নুক ক্ৰেছাই আল্লুল স্বল্প **স্বৰ্তা। ও**ক্ৰাকো धारे भारत कारण नरीत रण । बामानत रिकार्य मांवातीन क्रेयत, निष्यात्राय नदल्ट शांतपशुक्त धनचारत मध्यादत विष्ठत्र^त करनगा अदिवेख-अधि-निकारमञ धकर्माः डेश्रांब खालास्त्रा विश्वामः व्यक्तिक-छोन्दिकाः स्व 24 137 অভাইত হন। এম মোচন করা ওকর কাক। टारे कर्णियनगांक निका मका निवलन अकलाव তাঁর স্বস্থানে অবস্থান ক্ষেন্ শিষ্ত তথন ধৈত অধত্ব প্রক্রিয়াগ ক'রে স্কর্প-मनीत व्यक्तिक छक् छैनात्रकि लहत।

্শিউলী ও শিউলৈনীকে গ্রয়া প্রমণ প্রিন্তুর প্রবেশ)

ংম পণ্ডিত। জারে মাগি, এই দেখ্না, তোর চালা ব'লে আছে।

শিউনী। ইই যে-সাৰ টিকিবাজ ভট্চাৰ দেশতি না। তা দেখ তাকুল, আমাত বড় কিছু নেই, শামার বড় কিছু নেই, শামার বড় কিছু নেই, শামার বাছে কিছু পাবে নি: তথে জনের কেডেটা, ভেলের ইন্ডিটি আর মৌজর নীতি কর্নার উদ্টেট। আর দেখছো তে পাত। শিয়োনো কালড় প্রনে। জোমান বউ বিটিও গেই নে, তোমানের পূজো কর্তে নেরে। জা উধানকৈ আর কমনে নিয়ে যাতঃ গ

১৯ গ্রিড । জারে দেখুনা - ১ট ভোব টাদা ছেলে।

শিউনিনী। জাবে ছ—হর্ট বতে বে—হুই তো চালা ব'লে বটে! (নিকটবন্ত্রী রুট্রা) জাবে নাপধন—এ বাম্নগুলোর ইপানে এলি ক্যানে দ আহা বালা কালা সেতে তো কিছু খাননে, লে এট বলেডে একটু গলা ভিজো,—এতে খেনী নোনা হবে নি, এক এক দুমুকা লে আক গলা ভিজো। বাল দে—নিক্ লে কালি রেতে ভাল করেছি রে—

শক্ষর। কেন বা: ব্লি এত কট কবেছ ? আমি তে বিশা করেছি।

मराद । अपा शरी नरे, जामि नग्रामी !

শিউলিনী। ওবে বাছা, জালানিবিতে তোর কাছা নাঁই। ছেলেবছনে জাদাট্যালা করিন নি। এই স্থাধনা—মিন্দে জাদা ক'বে ভোনা মেরেছে, কালকাং পারে নি।

শন্ধর : মা : তেনোর আর বাবার পুশিবীতে তো জার কাল নাই! তোমানের কর্ম করদান হয়েছে .

শিউলিনী। দেগু দেখু।মন্দে! ছেলেন্দ্রি - কি
বলে শোন্ ? বলে, কাজে কাই নি : কাজকদ্দ
কর্বো নি বাবা তো পাও কি বল্ ? যতে কি
পোতা কড়ি আছে ?

শিউনী। নে মাণি! বকৰি না থাগোৰি: ছেল্টো কা'ল রাজ থেকে কিছু খায় নি, তার ছ'গ বাখিদ্? আর আমার বস্ছিদ্ স্থায়া থায়,— স্থাসা থাস ভুই।

শিউলিনী। আ আমার পোড়া মৃ। মউরোর
ক্রকো ঠাওা হরে যাচেছে। নে বাছা औ।
(শক্তকে পাণবরণ) ও মিন্দে—ও মিন্দে
গব দাক হয়ে যাচেছে। তুই আমি আমি

পিউনী। জাতে মাজি –কোণাল কে রে—কে প্রার্থ কে ৪ (নিউনিনীতে প্রকরণ) আরে নিই নেই বে । ২০০ জন সভি ।

সম প্রিক্ত। এইবরে নের কোনতেরে এইবছৈ দ তোমার প্রজ্যানাওরা নিরে দ্ব **এইবছে** দেশ্ছি— ইনি পাও। বোধ হাচে, তোমার আতীয়।

শশর। প্রম অন্থিত। নেল হেন না প্রাস্থ্য স্থাপনি ইনপানি ইনপানি । গুরু বাক্যের প্রভাবে— ৯ড় নাবি বাক্যের প্রভাবে— ৯ড় নাবি বেল মুক্ত করনত ক'বে আমার মধুনের জালছে উপস্থিত করেছে। মিশ্র ভূমি আক্ষার হলেছিল, দারবানেরা কেন আমার আল্ডেইলে, দারবানেরা কেন আমার আল্ডেইলে, দারবানেরা কেন আমার প্রায়ত্ত বংলা দের নি। তোমার গুলুগর্ম্ব নারিকেল্পুক্ত মান্তক করেছে। তামার পার্কে আমার উপস্থিক করেছে। তামার উপস্থা আমির উপস্থিক করেছে। তামার উপস্থা আমির উপস্থাক আদি এই গুরুর কুপার জাপি হলেছে।

শিউনী। অবিতীয় অধ্য সচিত প্রথকণ।

নিউলিনী। নিলেহছং শিংবাগ্ছং এই তো ধরপ।

সমাগতিত। একি ! একি কোনে বুছক না কি !

নামাগত নিউলি-নিউলিনীর মূপে এ কি উকি দ ভাবে তে এই মহাপুরুষের অহিত-ইচ্ছাত মহান পালে লিও হরেছি। ওছি, প্রান্ত কানি বিশ্বত কানি ব্যাতন :

হম প্রভিত। জরতের, জামার পারে ঠেন্দেন না।

কামার কার মহাগাপীকে উদ্ধার করাই আপন্

নার প্রশংলা। জন্ম—আমি বিক্প প্রপান্তর

জাপনি পিউলীর নিকট যে হুল জ্বানত কর
নার মন্ন পিজা করেছিলেন, তা জানি লান্তর
পারি। থবন মন্তর পরারক্তরার ক্তানে

তবন এই শিউলীর উল্পোশ পিয়ে—এই পিউল

বীকে ল'রে এমেন্টি। আমার মনে মনে ক্লানা

ছিল যে, এই ব্রাহ্ব-শভাসনে আপ্রি এই

শিউলীর সন্ধানি করতে পাব্রেন না। গ্রাহ

শিউলীর সন্ধানি করতে পাব্রেন না। গ্রাহ

শিক্ষারি সন্ধানি কর্মিন আন্

শিক্ষারি সন্ধানি কর্মিন স্থানি স্থানি

শ্রম্মারী স্থানি স্থানি

্রারা ক্ষেত্রফৃতি—শিউলী-শিউলিনীরের কর্মিত। বন্ধ আপানার বিজ্ঞানাতা— ৬৪৭ এর সামান্ত নন—এ জ্ঞান আমান এতার নি। করণে আমার নায়ন উনীলিক। ত সমত প্রাপ্তার কুসা। যথন কুসা করি নামন বির্হেন, তথন পালে স্থান নিন। (প্রধানে) সক্রো। অর শ্রুরাচার্যের জন্ম। প্রধানে স্থানার

भश्चन्। १९६५, स्रोपाण धर्ण कोइन १४०, व निराक्त कदम्म।

ু প্রধান ভ্রমণের, সকলে একজে প্রমণের উপরেজন ার্লি**করি।**

श्रकाल । श्रद्धिसम्बद्धाः । १८० ००० । एकेनामनः निर्माणकारः

(উভরতার জীর ৪০০ :

किछ्य। गडीबद्र । कामान यापीक सिट्य कार्याप्र - वास्त्र । अंश्राहक किट्रा मुख्यारी

শক্ষর। (প্রচাত) দিব প্রিয় নামনী সম্মন্তরী বিহ উৎপন্ন ক্ষমেন।

উন্তর। বতিরাও হাণালে জানী, আমার স্বামীক পূর্ব পরাছর পালে নাইও স্থানার স্বামী প্রাণ্ডিত, বিভ শার্মত স্থানি উরি মন্ধান্ত, ভারান গানাজন ক'লে নামার স্বামীকে থ'তে ধান।

শন্তর । ইয়া মা নবার্থ ব্যক্তেন। বিনি মারিত-নতের ঘানী, তিনি থ্যুস হন কার স্থী হ্যা, তার নত্তি আমি তর্কে প্রসত। অংগনি প্রশ্ন কল্লা, আমি বর্গাসাথা উত্তর প্রধানে ন্যান ইট।

डेखा जुन्द्र गांक रतन १

नक्त । अक अधिकामसङ्घे अभव । ६४०० अस्य कि १ डिडम । अस्पीरक कि मोनस्य सार्र १

শ্বৰ। দেই অতুস নে দ্যাল বিদ্যান বং সেই উচৰই পাচাৰে কৰ্মান। বি, মেন্দ্ৰা, নাৰুণ্য, সমপ্তেই সেই বুহুই নাৰুণ্ড মানান হাজ নাৰ্বা, সমপ্তেই সেই বুহুই নাৰুণ্ডানান হাজ ें ५३। তবে नाजीत शापकाय-नाजीत सीलपी किश्चरें डिल्मिक करतम गाह १

নাৰ। সামান্ত বিষধ—এর উপলানি তো বিশেষ প্রধানন নাই। একেন উপলানিতেই ত সমান্ত উপলানি হয়। আন্তান কুবা সমন্ত ব্যথ কন্তি। কোপনাৰ কি শান্ত্রীয় প্রশ্ন আছে—— কাপন।

উল্লা সনোৱ সামীর সহিত বিচারে আপনি রে নমন্ত শাস্ত্রজ্ঞ, এই ধারণা আমার জ্যোতে। তথা কামণাস্ত্রের আলোচনা আমার সহিত জ্যানি। বন্ন-কামকলা কিকপ ও কর প্রায় এক তবি আধার কিণু নর-ন্রীতে ভার কির্গ স্বস্থান

শবর। (প্রয়ক) স্থানিস্থাবন কর্নাক্সাছ প্রছার।
কিন্তু গাল বাগে বার্য্ত, একে নিরুপ্ত করা
ক্রাবঞ্জন (ক্ষাক্যেডে) দেবি! মালাজে
আপ্রনান প্রহের উত্তর অব্যান ক্রাকা। আমাস ক্রাফাদ কাল নুম্ব প্রধান ক্রাকা। আশিন আন্তর্ভ আন্সান ক্রাক্ত্রাকে আপ্র প্রথা প্রচন্দ্রনাস্থ্য

উচ্চ ' ভাল, আপনি দময় গ্রহণ কদ্ধন । (পদ্ধপান্তবিধিক প্রায়মেশ্রম)

ম ওন ; গুলু, ম প্রান্ত্র ভূল্বেন না ; প্রভা : চিহ্না ভূল কবো, সকলই সমস্মাণেক ; সমঙে দেবলের ভোষাত মনোবাহা পুর্ ক্ষুণ্ডন

अकाग ।

চকুৰ্থ ভাষ্ক

প্রথম গর্ভান্ত গর্মান্ড শুস্ক।

শক্ষরাচার্য্য, ননন্দন, শান্তিরাম পেতৃতি শিষ্যগণ।
শক্ষর। সর্যাস ভাপম, মণ্ডন মা করিলে এইণ,
জ্ঞানকণ্ডে হবে না প্রচার!
ক্ষিম মহাবিশ্ব তাহে যাগ্দেবী!
মণ্ডনগৃহিণীকপে দেবী সর্বভাতি

কামশার লয়ে হন্দ মন দেবী দনে।
কিন্তু কামচিন্তা বোশিদেহে অতি অন্তৃতিত্ব
হয় তাম সম্যান-শতন।
কনি পরকার আগ্রেগ্রহণ
কামশান্ত করিছে অর্জন,
পরাজিব মন্ডন-শ্রমীরে;
ভাছে হবে মিশ্রের সম্পূর্ব গ্রাহ্ম।
কর্মকান্ত করিলে থন্ডন
জ্ঞানকান্ত ধরামানে ইটবে প্রচার।

্নেপথো দৃষ্টপাত করিয়া)

গোগদুঙ্গে করি বিলোকন, আরি ওই নরপতি মুগয়া কারণ— মহা প্রমে হইরাছে ত্রন্তাগি তার ৷ ওই দেহে এখনি প্রদিব। छन द९रा, खार्बङ शर्कक-कमर्दा, বাবধানে একা কর ষ্ঠি-দেহ ম্ম। মাসাজ্যে এ দেহে পুলঃ করিব প্রোবেশ ! * সনন্দ্র। প্রভু, গারকার প্রবেশ-শ্রণে হয় মম কাতক উদয়: পশি পরকার---स्वितिहर्वा सीमनाथ मुख ६म छ। ह. कांगक्षभा कामकवा अधिक लेटन । যোগীৰৰ শিষ্য ঠান গে, ব্ৰুনাৰ নাম, विस्मय ध्वयारम भूकि नार्यक अकरन्। শকর। ভাজ ভদ, না ক্রা সংগ্র प्रां नो रव कप्ताहन। वाशा भग विका-डेमालक, কমিতৃপ্তি-বাসনাব জিত চিত। থেই জন বাসনা-গৰ্জিত, क्माहिर ना इद्र आहिए; जनभारम इकनीना मृष्टीख जाशांत । गनगन। थड़, अरमिष्ट औष्ट्र, महा वर्णवीन् काम भाक्षणां कति। कामका काम-आलाभरन जाना मरकात्र, বছ জন-গ্রহণের হেতু তার হয়! শবর। শাস্ত্রনত বাকা তব হে তীর সন্তাসী। किंद्र न्थन, काह अन्न,-क्त-वार्वाक्राम मय तता सांगमन, कात्रमानादाका मिक्र की देश कुणान !

करवृत्ति छेक्ना. निक्षित देवन-विक्षान **दकांसजारम** दिश्र इव यस, যদিশলি গ্রকার, নংকার প্রনে জামাছ, नुविव् अञ्चल, দেবকাৰ্ব্য উদ্ধারের ভাবে — 🗣 করিবারে মানবের ছিড- – महि राषां हिन्न सहायां थी। अना-श्रानात । अम नरम, निष्ठ शर्थ हिंद रिटर्कत, त रूप ल रूप, काम-िया को वर कर्नम । দেবকাৰ্য্য-প্ৰাধনের তাবে ना इव शन्द्रार्थम आञ्चितिनक्रीत । र्य वर्ण, श्रमस छेन्द्र দেবদেন-পদাঞ্জিত আমি: সংস্থাৰ কৰু না লালিলৈ, কাৰ্য্যদিকি হবে ; নির্মিন্দে পশিলে পুনঃ এ যোগি-শরীতে, বিমল অধৈত-পদা করিব প্রচার। এশ বংশ, গুপ্ত হানে রাথিব শরীর, गांवधारम शोदरव तांथिछ मत्व मिनि।] * ননন্দন! সদিকত্প হয় প্রভূ সংকরে তোমার! नकर। हिन्डा कत्र प्र, इन शर्कक-गञ्ज्रात ।

ि मकरनव श्रेष्ट्रीय ।

ৰিতীয় গৰ্ভাশ্ব

বনস্থা 📳

গজিত চিতা-পার্শে অমরক নৃপতির মৃতদেছ। উচয় পার্শ্বে সরমা, অমাসিকা প্রভৃতি রাণীগণ, সমুখে মন্ত্রী, রান্ধণ ইত্যাদি।

সরমা। (মন্ত্রীর প্রতি) বাবা, তুমি স্থানগা মন্ত্রী, রাজাভার তুমিই গ্রহণ করো; আমি রমণী, বাজাপরিচালনা ভো আমাতে দত্তব নর। আমি উবাহের দিন পণ করেছিল য যে, আমি জীবনে মরণে মহারাজের সঙ্গিনী। মহারাজ লামার ছেড়ে যাবেন, তা ভো কদাচ হবে না! আমি বহুনেরণে যাবোঁ, তার উল্লোগ করো।

हामांसद क्रिंड वाड वा ।

श्वी: १८३ श्रीप: कि क्र्याप्य मेशीवाड, ५१४:
श्वा करविष्टलम ।

भवता । चाता, शांडाकम्ब शिमिन्द्य निर्हात निर्हात विद्या । विद्या निर्हात निर्हात । विद्या निर्दात । विद्या निर्हात । विद्या निर्हात । विद्या निर्हात करताह । या व्याना । विद्या करता । विद्या करता ।

ব্রান্ধ। মন্ত্রিমহাশয়, আর কেন-শ্বনের চিত্ত

সর্থা। ব্রো, অপেকা করো, আনি সংশ্তা হা । ব্রাক্ষণ। মন্ত্রিসপায়, বা হয়, বীর করন। ঘাদণ গ্রু অতীত হয়েছে, আর বাববেহ রাখা উচিত নয়। বিক্যাহ'লে প্রেড অন্যান ব্রতে পারে।

मती। (সর্মার প্রতি) মা, বেখুন দেখুন— মহারাজ মেন চকু উন্ধালন কাজেন। কেখুন দেখুন— মুখের ভাবের প্রবির্ত্তন কেন্দ্রি। মা, আপনি মুখে একট্ট জন দেন তো।

সংমা। মাত্রী ছ্রীনিম্বিন্ন, ১, রজা রাজা রাজনেহে শহর। তা কি ভালার আমি — হব। কে গ

भन्मः । सङ्दिलि, यन-्यः क्लाग्यः प्रमालकोतः इत्राप्तः भागी ।

শহর। মহামানের কি প্রভাব। কি ছিলেন জ ভো আবিবিধান নয়। নিদ্যাবলা বিধ জালত অবলা। (প্রকারে) তোমক কেন্দ্র

সরমা। মহাপাত, চিন্তে পাজেন না १ আমব: শ্চী। শহর। হি. শহ্য সভা আমি কে १

সরমা। মহারাজ, তিব জন, ভাগনি নুগ্রনে এনও হয়ে মুফ্রীগায় হয়েছিলেন।

শকর। ত্র্রী, রাজকানে রাজা - চারা, গুছে বাজ। জীবের গর্জনাদের পর স্বাতি থাকা অসম্ভব। চলো চলো—আহো, মহামালার কি ভীষণ প্রভাব।

* (মৃতরাভার প্রেভার্যার প্রবেশ)

কে তুমি গ মত রাজার প্রেতায়া। এ দেহে আব তেমার অধিকার নাই।

भवमा । यहाताल कि वलाइन ह

শৃষ্ণ । না, কিছু না। (প্রেছান্নার প্রতি) সেহের নমতা এপনো পরিত্যাগ করে। নি। কাও, দেক দেবের কুপ্রে প্রেডদেহ প্রিছাগ কারে নিব্যদেশ ধারণ করে। । এক দিন তেমার দেই ভোগ করি, ভত বম ভূমি স্থর্গভোগ করে।। কি হ'লো—কে মাফি পু আমি জালা, এই মকল প্রজী। এনে। -এনো জ্যাস্থা, গৃংধ্ যাই চলো। (উপনেশ্ব।)

সর্বা। সহাবার, প্রির ক্রান্--বিংহ কেন।

শ্বর টিকাবরোনা শামি মুর্গ হরেছি এমে। প্রিয়ে (গালোখানকরণ)

অপ্রতিকা ৷ (জনাত্তিকে সংখ্যার প্রতি) দিনি, এ কি খোন প্রেত ক্ষাশ্রু করেছে ?

শ্বর ৷ বা বা বছর প্রক্রনতা ভাগে **ক'রে** স্বর্গান করেছে ৷ জি

[সকলের প্রস্থান।

ভূতীয় গভাঙ্ক

শহরাতারেরে বাটার সন্ম্প । ^{*} জংজাপ ও মহামারা ।

প্রান্ত ই তে, তুই কেমন প্রেপ্পাটি বল্ছ মাণার আবটা দেগছিদ্ছ তবু তোর মনে ছাগু হয় াবই হু মহলার আগে এক দিনকে খুলে-দাহতেক বিজে সাম।

মহামটি। সেএখন রাজা হয়েছে, তাকে আন্তা কিক'তে /

্রের। ভবে তুই কিনের পেশ্লী গুড়েই বে ব্রি, মারের কাছে মানবে গ

মহা: সময় হ'লে আসবে গ

জগা তোদের জাবার কেখন সমর সুমাণী ম'লে অনে কি কব্বি সু

নহা: আনি থাক্তে মর্বে কেন १

জ্প। ভূই থাকতে বদিমরে নি, তবে ভূই মাল কিনে প

गरा। आणि त्यां मति नि, आणि बनाति।

জগ। তুই ভো ভারী মিছ**মতুরে, ভোর কথার** প্রস্তায় জাব ধাক্ষে নি।

गर्श । कि क'रत कान्ति- चामि नदाष्ट्र ? 🐣

क्रा। जांच गांचर बाव के काशीय शकी द्य ?

মহা। ক্লামি লোপেন্নী নই।

জগ। হোৰ বাণ পেত্ৰী।

हि। आयात (डा वांश मारे।

का। ना बादन (नहें, आवात क्या अवली क्विति ?

हो। कियम १

া প্ৰেদ্যল কোন্তালে ছাতে, গ্ৰেম্যায় প্ৰাক্ত দে।

्। तम् व्यथन जायनक सः । वः विकादकः।

!। ভূতে চিন্তে পারে?

া। কাপ্রে।

। **তবে** ধর, জ্যামার বাড়িন মন্ত্র গারে মেরে ফেলে ভূত কারে ৮ ।

है। यम-पुछ इस कि कर्नत् ?

র্গ কি করতো, ভা ভংল ভোকে ভানেতা। ব্রেদ্যানকৈ এনে ফালিকে দেখালো।

मिश हिः हिः, एक शोरह पारा

্ত্রিপা। তা তোন কি বল না – পাধার বলি এনন দথ হয়। তোগ জি জিজালে আর বাজ নেই। আমার ছত ক'বে দে, মাণীর হংগু আর আমি দেখতে কান্দি। আমি গ্রে-দাণাকে বাড়ীতে আন্বো।

মা। তোৰ কপায় পে আসনে বেন ।

জগ। এখনে, এখনে, —আমি তাব কাছে চিষ্টে বংগুৰা, "সানে তোৰ জনাদাদা, আনার কাঁৰে চেণে সেলানে এছবাৰ বেড়াৰি চল্।" চাথাচিথি হ'লে যে আমাৰ কথা আৰু ঠেল্ডে নাৰ্ডে। ধৰু গণ্- বড়েনা মৃচুতে ধৰু।

মহা। আগরাথ, তেশাবাহ গ্রেম ভূমি স্ক্রাকা।, তোমার উপর আর জামার ভাষিকার নাই।

ন্ধা। থানে, তুই ও সব কি ব্রিস বল্ ভো ? বুদে-দাণার কাছে শিখিদ্না কি ?

মহা। সে না শেখানে আমায় কে শেখাবে এন্। স্থা। আজা, তাৰ মানাগীৰ উপৰ তোৰ দৰ্শ হয় নি কাংনে ধ

গ্ৰা না ল'বে আনি সেবং কৰ্তে আস্বো জেন । লগ্ন তোৱ ছাই সরং! নাগীর শাকারটা দেখ-ছিন্ তব্ একবার ছেলেটাকে এনে দেখাতে শার্ষি

परा। त्वन जानियां कार्याः । य मिन दश्रातः नत्य मानीत्र प्रशा रतन, ति मिन मान नतीत्र शाक्तत्रमा।

क्षा मा आफ मा बाक्टर और जात कि

करात्र, गाँ रूप, अपनात कार्यास्थानी विदेशी मन्दर्भ ।

मही। जमत भी है है। एक हार लगे ह**ार मे।** सर्व।

युक्त है

বিশিষ্টা । মন তুমি বেপ সামার এক প্রক্রেনার ব্যাকিরোমা। তুমি সামালা নপ্ত নিব ক্সেন্ট কারে রশান বিচেত্ত প্রকার কিন্তু কথাই করে।। মহা। কোন্দা, আন্নি তেওঁ ডেপ্নান বার্লান, কামি নির্দ্ধ কোনার মেনে।

বিশিষ্ঠা । যা মা: আমান ৮ ডিও ন । আমি স্থান নেপ্তি, ত্মি আমার শহরের অক্তর । আনি ক ক বাল ধ্যলছে, আমার শ্যার আবি কুমি ভিন্ন মণ্ড । গতিতে না লাগ, তান্ত ক--সভাই কি সেক্টেৰ শ্যামান এইরে জন্তর্ভ করেছেন দু মধা । মা, ভেল্ডের এটা আল এইটার ও করা ব্যাহারন ।

নিশিষ্টা লাব কোন মা, কাম্যার পান্ন কামে জ ব্যাহার জানি কান কামি আন চলায়ন একদণ্ড ভূপতে পানি কান কাম লান চান্টি মহামানক আছেছ গুলানি কার বিকেন্ত্র এন আনু আমি কোনের ১০০ প্রক হার্মি, জান বিকারের ভেড়ে ব্যাহ্য পান্তি

মহা। মা, এচামার যে বামনা, ব্যামার গুলের হাতে অভি নিত্র, এবং ভঙ্গ কর্ম।

বিশিষ্টা। সভাই কি সামান বাসনা পূর্ হতে । মহা। দেবমনিবে চগ যা, কেবলেন ক্ষম তেখেন। একটা কন্ত্রেম

বিশিষ্টা । তা মা, তে, তে, তা কথাতেই কাছাত, তেইমাই কথাতেই আন্তাত কথা পত্য কছাত কথা কথা কথা কাছাতেই কাছাতেই আন্তাত হুনীয় মত্ উন্দীনিক হুনীয়ে। আনি মাত তাই কাছাতেই আন্তাত কাছাত কাছাত আনি কাছাত কৰাই কাছাত কৰাই কাছাত আনি কাছাত কাছাত্য আনি কাছাত্য আনা কাছাত্য কাছাত্য আনা ক

মহা। ভূই প্রেক্তী পেক্সী কবিগ একটি স্থান কৰি ক্ষেত্র ।

्रा सामा, यो यो **-पूरे (पञ्ची** वम्। वि**निष्ठा ७ म**नक का (टाइक्ट)

1 1817 1

দত্ৰ গৰা

ক্ষমরক রাখনি অভ্যস্তর সংক্ষম উপ্রয় । অমহক বাল্যকোরিড প্রত হিছে।

শহর। নিজ্যাল আতিপুত আছ
শ্বনিজ্য রচেতি কোথায় গ

শ্বিনিনি কি নেন কেছি তুলে।
কালানিনি-নাক সমান।
কালা কাল আতিপ্তি কেছি নিদাসান,
কয় কাল আকুল অনুবা।
কাছি কেন স্নাব্দ নিজ্যান।
কালে প্রাম্নার কালিকে।
কালে প্রাম্নার কালাকিরে,
কালেকে ভারা কালিকে।
কালিকে কালাকে প্রাম্নার
কালিকে কালাকে কালাকিরে,
কালেকে ভারা কালাকিরে,
কালেকে ভারা কালাকিরে,
কালেকে ভারা কালাকিরে,
কালেকে ভারা কালাকিরে,
কালেকে বুল এই জুল কালা।
কালিকে বুল এই জুল কালা।
কালিকে বুল এই জুল কালা।

(সরমা, শেষাণি না প্রান্তি ভানীগণের স্বন্ধরন শহকারে প্রবেশ)

সরমা। এ কি মহাবাজ, এইপানে পাণিয়ে এনেছ ?
তা যাও—ভার ভোমার সঙ্গে কথা কব না—
আমারাও চন্দ্র।

लंकत । ्रथम ऋरति, श्रेष्ठी मो मानिति, वामकला-विशासकूर्यना, गानि लेकिएक, मुस्याना गांकी छत् महे । িশ্রাম কাবণে, এনেছি এ স্থানে দীকা প্রমা কারিব গ্রহণ। প্রাক্তিবা নরেক দেখিব বলিপি। দেশ দেখ হাতেজে অরণ — নোধা— একাথা — এ কি হোত আবলন।

ন্তবা। (জনাতিকে) বেনি, কোনা সংগ্রাহ্বকে শিষ্কে উপ্রধন কা। আনি মন্ত্রিনহাশ্বকে ভাক্তে গাটিকেন্তি, মহাবাজের বনে মুচ্ছাভাব হলে। কোন অন্থা হলেছিল, এখন মাথে মালে আন্তাৰ সেই অবহা দেখ্ছি।

জ্ঞানিকা। দিদি, দিখাৱাত্র অন্তঃপুরবাদে হয় তো মহারালের মন্তিক জীগ হলেছে। ব'লে লাবে। মহাবাঞ্চল রাজকার্যে প্রাঠান যক্তি

গ্রমা: না দিনি, এর বিশেষ ৩৬ ফালে। আমরাই প্রাজিত, এতে মাজিম বিবাশ কি নিমিন্ত হতে দু অবস্থাই এব এলান গুল্ম কবিল আছে। মন্ত্রীর লক্ষে ব্রামণ কর্বার প্রয়োজন।

শ্বর । তথ্যজন্মন্তর নিচ্ছে বিশ্বর । কুটা- রোগি-জনি জন্মন্ত ।

িশন বাটাব্যের প্রকাশ ।

প্রাথ পিক, । এ কি ! এ যে কোন বোগীর পূর্বন্ধতি। শেষ হকে !

সর্থী প্রমিবিও সেইরপ অর্থান হয়। বাঁও, গৃহ উদীপক ব্যা আমার ঘরে সংহঠ, নিষে প্রমাপ্রাধা।

পোলিক। জাতেই বা কি ফল **হতে,** দুঝ্তে পারি না। স্বাগ্রভাবে মহারাজের ছে। ক্রণিক চঞ্চলতাও কথন দেখি নাই।

रतमा ! योख पाल, में की धान्तह ।

अश्वित्र अश्वीत ।

(भश्रीत्र खाद्यम्)

यही। अनमी वास्तानि, दांकरनेत्र आसीक्ष्म धारत

পরনা। মরি, মহারাজের প্রতি লগে করেছেন ? বে দিন সহারাজ মুক্তিগাত্তিন, ভার পর হ'তে মহাবাজাক কি প্রবিত দেখ্ছেন ?

মন্ত্রী। মা, সামরা রাজকশত বিগণ মিলিক করে। গোপনে এই প্রামর্শ করেছিলেন। পুরের রাজকাল্যে মহারতে একধ লাকদ্যী ছিলেন না,

শারালাপে প্রক্রিক্তনী শরাবিত আগনি কিন্তুপ লক্ষ্য করেছের ? मि । यह देनि भूक नुनेवत । -- विश्ववस्य ভাই কৰি গান্তিবর লাজ পরিইবি-विलंड विनारम मध मिक्न गामिनी, त्रवान-रहोड्क-कनार्थ तड, কিছু কোন আগতি হেরিনে কড়। शृत्मं नुभवन गाथिक इरडन ठाक करें। क- अशादा । এবে বেন শিকার কারণ, শিক্ষা প্রিষ্ঠ বালক যেমন, অনিচা কটাম-ঈশণ করে! অঙ্গলাপে নাহি শিহরণ, श्रुक्तय-डिहिन मार्डि आर्टीर उपन, মুগ্রচিত নহে জুরাপানে ! चानकि।वंशीन, कामिनीत ५र्स २३ वीन, भर मात्री बेर्गाहीन छंडात राष्ट्रात । माप्र कूलाकी, १९६५मी मुक्ती, श्रीमान्द्र रामनीमा विश्वातन श्राप्त. मांत्री मान तिशंब जोकातः खान झान मानि श्वाउष्ट : ঈশ্যানেতে লা চার বুব্রতী গ্ৰহণৰ প্ৰতি, পূর্বমনোরণ দবে রাজার সেবার। কভূ নৃপমুখে শুনিয়ে বচন কাপে প্ৰাণ মম ! वन क्षान श्रवाति व्य छेतीलन, বিশন সভত হেরি । ,ভেঁই জ্ঞান হয়, বুঝি ৰতীৰর কোন মহাশয়, পশি মৃত মুপ্তির কায় ८ छोड है कि करतम असम । मधी । वृद्धिमणी मुख्याणी मम पूर्वि जाती, करत्र वक्ष क्षेत्रमान। তবে কি উপায় एगानिवात सामक ब्रामित्क नुगानाव ्रियोग्य सचि के स्थान (क्षा) अनुसन्ति

ভোগি করে নিজদেহে।
সরমা। করা কংসা উপার্বিভাল,
আত্মহারা মোরা সবে।
নিশিদিন কাশ্যাম বিকল এডব।

মন্ত্রীর মা কোরের মন্ত্রণ ক'রে চতু নাকে স্ত প্রেরণ করেছি, বধার প্রকেচ পাতে, তথ্নই তা দক কর্বে। প্রতি প্রকেচের গ্লা প্রস্কৃত্রা, কার বোগীর প্রকেচের মূলা প্রস্কৃত্রা ঘোরণা করেছি। উপস্থিত এ উপার ভিন্ন অবাধ কোন উপায় তো লক্তিত ক্ষেত্রনা।

সরমা। বাবা, ও কার্ব্য আমাদের প্রেই করা উচিত ছিল। যেকপ লকণ দেখ ছি. বছসিন যে ঘোণীশ্বর এ দেহে অবস্থান করুবেন, একপ সন্তব নয়। পূর্বাশ্বতি জাগরিত হ'লেই যে, গিবর নিজদেহ গ্রহণ কর্বেন। ওংপর হউন, অস্তাই দত নির্ক্ত কণ্ডন।

মন্ত্রী। ব্যা মা, সম্বন হওলাই কর্ত্রা। ক্ষদিন করেজজন যোগিপুক্ষ মহারাজের অভ্যন্তান কজে, আমি তালের প্রাজপুরে আনা নির্বারণ করেছি; বোগ হয়, এই যোগিবরেরই তারা শিশু, শুকুর সন্ধানে এসেছে, যেরপ গোবক্ষনার্থ মীননাথের অমুস্কানে এসেছিলন।

সরম।। দতর্ক থাকুন, কোনকংগ না রাজদর্শন প্রায়ু। [উচ্চের উভ্য দিকে প্রায়োগ

পঞ্চম গৰ্ভাক্ত .

নগরপ্রাম্থে পথিপাহন্থ বটবুক্তক।
শান্তিরাম প্রভৃতি প্রবাচাধ্যের শিয়গণ।
(স্বপতির প্রবেশ)

শাবি। দেখ দেখ, আমানের কেই সহাব্যারী গণপতি
নয় । প্রহে গণপতি—গণপ্রতি—
গণ। (স্বগত) এই মঞ্জানে। নেই শাহে বেটা
শাবি। কি হে গণপতি, চিন্তে পাছে না লা কি
বাব। ভূমিও চলেছ, আনিও চালছি, চেনাচিনিতে

শাস্তিত ক্লেমন আছি ৷ বাংক কেমনা কেমন আছে ৷ বাংক আমি সাহ বুনো চ'লে **এলেছি, কিছু** পেনে ? না জল ডোলা আৰু পা **টেপাই পাৰু!**

শান্তি: তরপুর পে**ছেচি, গুরুদেবের স**ংগ্রান্ত জভাব কিনের ?

গণ। তা তো বটে, অভাব অনব্যের। শাস্তি। ভূমি কোথাও কিছু পেলে না কি ?

গদা। কোণাও কিছু নেই—বুন্লোর বৃদ্ধিব কোরে যে যা পারে নিতে পারে।

শাষ্টি। তোমার্জে বৃদ্ধি কিছু কম নয়, কিছু
বাধানে ?

গণ। বাণাবো কি, তেমন বাগমাজিকা চেলা পাচিছনে, নইকে এখানে যোগাছ ৩২ জিলা

শাবি। দল মা, কমেবাই না হয়, জেনার তেলা হতি।

প্র। জাই তা জি হও, **তা হ'লে বা**পের কাজ করে।

मान्ति। वि ,तशा उते हे बदला :

গান নেয়, এ গেলেন রাজা বেটা মারে বিজ্ঞান্ত মন ক'লে ভিতের তড়াতে বাছিল, পামকা প্রত্যে উঠেছে। এই না-নলেরে দিলারাক্র জ্ঞানল চলেছে: সমার্থিয় লালের প্রত্যান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত বালিকে কাজে পরিছে লেতে প্রত্যে কালে কালে প্রত্যান্ত কালে করাই করাই ক্রান্ত কালের ক্রান্ত করাই ক্রান্ত কালের ক্রান্ত করাই ক্রান্ত বালিকে ক্রান্ত ক্রান্ত বালিকে ক্রান্ত লালের জ্যান্ত বালিকে ক্রান্ত লালের জ্যান্ত বালিক ক্রান্ত লালের জ্যান্ত বালিক ক্রান্ত লালের জ্যান্ত বালিক ক্রান্ত লালের জ্যান্ত ক্রান্ত ক্র

র্বান্তি। তা অমিকা নির ২০ কেন, তুমি কেন এমান ি কে**র নি**য়াইও লাহ

গ্রীপর আবে শেশির না, আছিলে তেনন তোমাদের মত মন দিয়ে ছবিজ্বলো লিন নি। তাই মনে ক্ষিত্র, আনি প্রক্রে। মৌনী, গ্রেমরা স্ব বৃত্তি আছিলে। তুই এক পাই প্রস্থা বেশী চাপু, ভার্ম্বানিক।

শান্তি শাস্ত্ৰার সঙ্গে আক্রাপ ২০১১২ স

श्री का को नाहे चार्च । तामा पानि पानतः

রাণীদের নিয়ে আছেও দিনরাত সরাপ চল্চে— আমোদ চলচে—গান চল্চে।

শান্তি। রাজার নঙ্গে কেউ কি দেখা ফনতে পারে না ?

গণ। ত্র্থকটা গাইছে গুণীকে কথানা ডাকে।
সন্ত্রানি-ককিরের রাজার কাছে বেস্বার বে
নাই; মন্ত্রী বেটারা শেশিক দের। বড় মজার
দেশ -বৃন্ধা, একটা মড়া -একশো একশো
লাকার বিকোল, সন্ত্রানী-মুন্দেরের দাম হাজার
বিকোল

नाञ्चि । यूटकांव मिरा कि करत ?

ল্প। কি কানি, বেটা বাংপর পিণ্ডি চড়ায়! তিপাল স্থর মার্চে রাজপের চিত্তের মত চুলি স্থল্চে, পুপিল বাংগা ক'বে দিনবাংর মড়া এনে কোল্চে।

(नमन्धरनतः । धार्यम्)

শাস্তি । া সনন্দরের নিকটবর্ত্তী হইর। ফন্যাতিকে । সনন্দ্র ওচায়ের এই স্থানে নিশ্চয় প্রায়েছে ।

নেকন। (জনান্তিকে) আমারও তাই অনুমান হল: নজন দমণ ক'লে নেথ্যেন, পুরুবাদীনা দিবসেন, জানান মণ, নকে'গাও লোগ, শোক কৈজ নাইন অতি স্থানজার রাজ্য পানি-চালিত। লালানে প্রপান ইপান্ধেনম্জিত, লোল এক প্রিন্তি হলে লোক বাদ কচ্চে। প্রান্তিক দলপুশ জলাগাগ্রনাল ব্রন্তি উইপান্দ কারেছেন।

গণ। (স্বগত) কি লোবনি কজে। (প্রকাঞ্চে) কি হে, ভোষাদের স্মাতার্থ্য এখানে এনেছেন না কি ?

সনন্দন । তিনি কামজপী পর্বস্থানেই বিরাজমান।
(জনাজিকে পান্ধিরানের প্রতি) এলো, রাজার
গহিত কোনজপে সালাং করা প্রয়োজন।

গণ। 'প্রহে সনন্দন--- ওতে সনন্দন। না--- পদাণাদি না বলে বি উত্তর দেবে না 👂

সনলন। না, তুনি পত্ৰপাৰ বলো নাই, তোমাৰ গৰে আলাপ করনো না। (ভনান্তিকে শাঁতি বামের প্ৰতি) এপো, রাজার সহিত সাক্ষাতের কিল্লা উপায় হয়, দেবি। বেলি হয়, মহাপ্রদ্য বে সাক্ষান্ত প্রবেশ করেনে, কোক বিচক্ষ बाह्न करके। बीख श्रुक्तरमायत्र वन्तिहरू मा धाठाश्यम कड्डा विनात जानक जारक

্ৰাপতি বাতীত সকলের প্রহান।

ব্যাটারা কি বদাবলি কর্লে, কি পাঞ্জ কিব্ছে। এই সেই তাত্তিক ব্যাটা, বে বাটি। नेक्षतिविद्यात उव करता खक्ति, (मारना त्नारना-

(উণ্ডেরবের প্রবেশ)

ध। কি বস্ছ?

। যদি ছটো একটা বিঞ্চে ছাড়ো, ভূমি বা ् बुंक ह, आभि व'रम भिरे।

। आमि कि श्रुक्षि १ कि व'ला एति १

- । স্বারে, আমার চিনতে পাচ্ছ না ? কাশীতে তোনার মঙ্গে দেখা। আমি শস্করাচার্টোর শিষা हिलम, एगि उन्नी यहेर निरम् । उरा ্রোনার <mark>কাছে চং-চাটা শিথে নি</mark>রেছি বটে, ভাইতে একরকম চ'লে বাচ্ছে।
- ।। না, আমি আর ভার অঞ্যন্ধান করি না।। । বাধা, আমার চেয়েও সাফ্ মিথ্যা ঝাড়তে জালো ! তা শোনো, শুস্করাচার্য্যের শিষ্যেরা স্ব এসেছে, এইথানেই শক্ষরাচার্গ্য কোথায় আছে। । আছা, তুমি আমার নিকটে কি বিস্থা চাও প্ এ ভেল্কি বিখা--গুলোকে সোনা করা (Ma) (3 9
- [।] হা, শেখাবো। ছুমি যদি আমি কেকপ বলি, নেইন্নপ ক'রে আমার কার্যের সহায়তা ₹Gi I
- । কি করতে হবে, বলো ?
- । কিন্ত দেখো, যদি আমার সহিত প্রভারণা करता, कि बामान मन्ना अनान करता, छ। इ'रन তোমার নিস্তার নাই; সরং শিবও জোমার अको कर्रा शांतर्भ म। जामात्र भक्ति प्तरथा—(ध्निम्डि नहेश मयूयक नहेंबुक्क নিকেপ ও বৃদ্ধের জলিয়া উঠা, পুনয়ার দ্বি-নিকেপ ও বান্ধর প্রাবহাপ্রান্তি)
- । जूमि आमात गतम-वादा, जूमि के तम्हरू जानि छोडे कन्दर्व।
- ी भी शेला जाता कार्य कार्य कार्य

राष्ट्रि जो भरूमान केरहरून, मेरे कि नेरहरू क्रिकेट वांची, नेताब त्ज हरून मिटन, जामात्र हुक्त (बद्द दक्न १

্তির কোমার নতাকে সিদুরের **টিশ** দিন্তি ক্ষেট ভোমার নিবারণ করবে ম।।

(छिन (माउन)

গ্ৰা (বগত) বাবা ! এ বেটা আছে। ব্ৰহ্ণক তে । বেটার কাছে থাকতে হ'লো! ভবে মল-মুন্ত্রী घें। तो, मड़ा थाप्र, अरडहे तिज्ञान कार विस् স'রে পড়েছিলুম ৷

डिश्रा कि जावरहा ?

গ্রণ। বাবা, ভৌমার গোলাম বাবা, ভোমায় তাঁপ সঁপ্ৰুম ব্রা। আমি মোনা করা িছে-টিছে **जोर मा-धि मिन्द्र-श**ङ्गि भिनिद्य पित्र । দেখানে দেখানে যেতে পার্নেই वाभि एक-রকম চালিয়ে নেব ৷ এখন কি করতে হবে, বল 🔻 উত্র। রাণীকে এই কুলটি দাও গে। (পুস্প প্রদান) -तत्ना,—धरे दून दालांदक अंकृत्क मिल जाना তার বশীভূত হবেন, আর করেকটি রমণী তাঁর নিকট পাঠাবো, তানের অষ্টপ্রহর দেন পাজার দলে পাক্তে বেন । বলো, তা হ'লে আর রাজশরীর জাগ ক'বে যোগী নিজশরীরে যেতে 🚈 भारत ना।

श्य । यांबाई।कुत्र, याांभावधानां कि १ উত্র। পরে জান্বে, শও—আজ্ঞামত कर्नः ।

্পূৰ্ণপ্ৰির প্রস্থান।

নিশ্চয় রাজশতীরে শ্রুরাচার্ট্য এবেশ করেছেন। রাজাকে বলি দিতে পারলেই যোগিবরকে বলি প্রদান করা হতে, আমি অইদিনি লাভ করবো। एशन **साहे. क**िशन महिता न कियाना क काष्ट्राने क'रत दाक्षमधील (४२० ভারা অমাব্ছা পুর্যান্ত রাজাকে মুখ্য ক'বে আয়ু কে निन्छत्र भागत्व।

शिक्षान ।

(मनसन, नार्किवास ६ निरागर्गव शानन)

गमलन । जोरे मर्नमान । काम श्रेगात । । में मिल्लिन शांख्यों दर्गन ना । अधारीय वासाव THE PLANT STATEST PROPERTY SECTION

তো দেখুছি, মহামালার প্রভাবে ভার্থনীরে আযান্ধ হরেছেন। এ দিকে তো শবদেহ লাহনের আঞা প্রচার হরেছে। কি জানি, যদি কোন ফলডুর দৃত ভার্কদেবের দেহের সন্ধান পার— তা হ'লে জোলদেহ দল্ল হবে। আযাদের মধ্যে বারা দেহুরক্ষার্পে নিয়ক্ত আছে, তারা তো রাজ্ব প্রতিরোধ করিছে পালুব না। বিসম্পদ্ধী উপস্থিত। গুলুদেব বহুল লা উপায় কর্লে তো উপায় দেবলে তো উপায় দেব ছিনে। লাভ, আহিল লাভার্নি প্রতি বিরূপ হলেন লা। প্রত্য, ব্যাহ বিরুপ্ত তালের প্রতি বিরূপ হলেন লা। প্রত্য, ব্যাহ বিরুপ্ত তালের প্রতি বিরূপ হলেন লা।

্ মহামারার প্রবেশ)

মহা।— (ही छ)
পর্বে পরে সাধের বীখন, গুল্বে পোলে ন
কানী দিয়ে কাঁটা লোগা কথায় চলে লা।।
সোনায়- নোহায় গ'লে ঘ'ষে,
তবে লোগাব শেকল খনে,
যাত্র গড়ে গোনার শেকল কিন্তে মিলে না।।
সো শেকল শক্ত লোগার, আতে আতে বাধুনি চাব,
হাব ব'লে পরেছে গলে, অমনি ফেলে না।।
লোহার পেকল, মনে হ'লে,
কথন গেয় হা শেকল, মনে হ'লে,

শ্বন্দন । দেখ — দেখ ভাই এ তো দান ছা রমনী
নার ! সনীতের ভাবে বেতে হছ, ফো দান্য প্রথা
শংস্কৃতিটিক অধ্যত । সনীক্ষ্তের আন্যাদের
উপদেশ প্রদান কর্তা, মেন — নিজামান্তার সংক্তি
বিস্তামায় ও অবিভামায় প্রস্পার ন্বান হ'লে
জীবের তৈতেলাভ হয় না । (মহামান্তার
প্রেডি) মা, ভুমি কে গা !

अहा । स्टामात्व मा।

रमनेम । यनि या, बै. बड़ा विश्वास आधारनंत्र छैलाव करूने ।

भरा । को एक क्रिक्ट एक तार्य हाअवर्यन भारत मा । क्षेत्र, ट्यामात्त्र भारत ও रही माजित्त (महे।

গ্ৰাহন। মা, জামক তো ব্যাবিষ্ণা ও সঙ্গীত বিষ্ণা কোন বিষ্ণাই অবগত নই

पश : काम जाम कामाजन निरित्र करने ।

[সকলের প্রস্থান।

वर्ज गर्शक

স্মারক রাজার বিশাস-গৃহ। সর্মা ও অস্বালিকা।

ন্বম। রাজ্যকে দুল্টি উক্তে দেবোঁ কি নি।
লাব চি, লি জানি বনি কিছু অনিষ্ঠ হ ।
আনার মন্যানাকে বিখাস হয় না।
অব লিকা। দুল উ কে কি আর অনিষ্ঠ হবে
সর্মা। শ অবস্থ কোন অবিস্থাপতির প্রভাব এই
স্লে আছে। এ সন্ধাসী শতিসম্পন্ন, আমার
নারণা হলেছে; কিন্তু এ শতিক সংসারের অহিজ্
সাধক। হদি কোন যোগিরাল মহারাজের
শবীরে সভাই প্রনেশ ক'রে থাকেন, তিনি রাজ্পদেহে অবস্থান করনা, এই আমাদের কামনা;
কিন্তু ভার কোন অনিষ্ঠ না ঘটে। গোগীর অনিষ্ঠসাধনে মহাপাপের স্পায় হয়।

ভাষা নিকা। দিদি, যে পথে চলেছ, দেই গথেই
চলো। যোগিবাজকে রাজদেহ হ'তে থহির্গত
হ'তে দেওৱা কোনকপেই উচিত নয়। তা হ'লে
অংমাদের বৈধবা ঘটবে, রাজ্য ছারখারে বাবে।
গনি উপায় থাকে, কেন না কর্বে। প তোমার
গনি তব হয়, আমার লাও, আমি হল পে কার্যিটি।
সহমা। কিন্তু প এই ঘোগীর নিষ্ট কি প্র
করেছি, জানো প বিনি আমাদের কার্য্যসিদ্ধি হয়,
মহারাজ্যক নিয়ে প্রেষ শ্রণানে উপস্থিত
হ'তে হবে। দাসনাবী হার্মেও স্থে নিজে

মখা। সে তথন দেখা বাবে। শঙ্গা। তুল লে। কাতে চাই লে বিলাই । কিছে ইবাই ব্যালা কাপানিক। হাপানিক। নাল্যনি, যোগিবলি প্রায়েকন কর। নালা, ভোমার ভাই সকলেই স্কর্ম। প্রায়েকেন কেটে গরেছিলুন, তাই জালাপের প্রতি রূপা করেছেন। মা। আছো ভাই, ভোমার কথাই ভনি, ফুল

(नीटकाटवा ।

(অমরক রাজনেহাপ্রিত শইরাচার্য্যের প্রবেশ)

র। দেখ দেখ বিশেব সংসার,
বাল বিনা কিছু নতে আর!
তোজবালি প্রায়
এই আছে এই কোপা ধায়,
নির্ণ লা হর কিছু তার!
বুঝ কিবা স্বপ্লের প্রভাব!
বুঝ কিবা স্বপ্লের প্রভাব নার বুল কল কল কল্মা তপ্ল,
সন্ত লনন্ত বিশ্ব স্বপনে স্ক্লিন্ত।
বার বুল—

াগ নহ কর বৃহ্বি স্থপন সকলি !
ত্য কিবা কে জানে সন্ধান !
কবা জ্ঞানবান্
ত্য তাহ করিবে এটার ;

न्भरम अ बन्नाधात हरत विक्रिक !

মহারাজ, দেপুন, কেমন হুলর ক্ল— মন হুলুব আহাণ !

(ফুল লইরা আন্নানপূর্বক) কে বলে - এই তো, এই তো সব বিদ্যমান— এই স্থিনর সংসার।

মহারাজ; ছুলটি জুনর নয়?
কুল নহে স্থানর প্রশানী
করপেনে প্রশার কুমুম,
মার অধর-রাধে রঞ্জিত প্রস্থান,
মার অধর-রাধে রঞ্জিত প্রস্থান,
মার অধর-রাধে রঞ্জিত প্রস্থান,
মার অধর-রাধে রঞ্জিত প্রস্থান,
তিন্তে বিশ্ব না সম,
স্থার আশে হৃষ্তিত এ প্রাণ,
য়ে অনল থেলে কুটাকে ভোমার.

का निर्मात कर प्रशिष्ट । काम करा - या ग्रहा - अहुत कमन, कार्यक्षा-स्नादन रहेस् धनन, ट्रांशमात्र मात्र तस मानव कीवता !

(मिंपरण मनी उस्ति)

মরি মরি! বামাকগু-বিনিঃস্ত কি জন্ম গান। জনিলে মিলিগ দেন।
সঙ্গীতনিপুণা কেবা গহচরী তব ?
বিমুদ্ধকারিণীগণে জান সহিবানে।
অহালিকা। (নেপথো দৃষ্টিপাত করিয়া সম্মার প্রতি
জনাগুকে) দিদি, বোধ হয়, সন্মানী কাদের গান
কর্তে পাঠিয়ে দেবেন বলেছিলেন, তারা

(উপ্রভৈরব-প্রেয়িত অবিদ্যা-সঙ্গিনীগণের প্রবেশ)
(নৃত্য-গীত)

आंग्रह्म ।

চাদ উঠেছে ফ্ল ফুটেছে, বইছে মলন্ত্ৰার।
সোহাগে গাইছে পাথী, চকোন্ন উধাও ধান।
অবশে এলোকেশে, ফ্রল-আমি চান্ন আবেশে,
ত কাঁচলী পড়ে হ'লে, কাঁচর পিশাসাম।
তব পালগু-ফলে, তল্পে রুক্লে চলে,
হিরোগে কমল পোনে, উব্লে মধু বাছ।
শহর। মাত পাণ, কর পান আনন্দ্রহরী,
গাও গাও, সুরাগাত্র দেহ বিশুম্বি!
তোল তান—মত কর এলে—
ব্যে বাক বিলাস নিবরি।

(বিন্যাদান্ধনীগণ সহ মহাসায়া ও যথহন্তে বনন্দন, শান্তিবাম প্রভৃতি শঙ্কাচার্টোর শিধ্যগণের প্রাদেশ)

(গীত)

কা তব কাত। কতে পুত্রং, দংসারে ইয়নতীববিচিনাঃ।

ত্ব ঘং বা কৃতি আয়াতভাং চিন্তির তদিনং লাতঃ।

মা কৃষ্ণ বনজনবোহনগর্মাং,

হরতি নিমেবাং কালঃ সন্ধন্।

মানাময়মিনমথিকা হিছা,

বজাপদং প্রবিশান্ত বিদিবা।

নিনীদলগত দলমন্তিত বলং,

ভদ্যভীবন্মতি শ্বচপ্রথা।

ক্রম্মিত সজন্মক্তিরেকা।

ভব্যতি ভ্রাব্যতরগে নোকা।

शिविन-श्वापनी

বাৰ্জনন ভাৰ্যারপং,
ভাৰ্জননী-জঠনে প্রাণ ইজি সংগাৰে পুট্ডর প্রেণ, কর্থাইই মানব পুর সংগ্রাহণ। বামিতো সাফ্ট্রান্ড, শিলিরবস্তে প্রথারাহণ। বিং জীজতি গুড়ভোগ্রুজবি ন মুফ্ডাশাবায়।। স্বৰ্গমন্দিরতস্তলবাদ্য।

শ্ব্যা ভূতনমন্তিনং বাদঃ ।

স্বাপরিগ্রহ-ভোগতালাঃ

কন্ত ভূপং ন করোতি বিরাগঃ ।

কাষ্ট কুলালোঃ সপ্ত সম্বাং,

বাবপুর্গরাদিক ধ-কুলাঃ ।

ন হং নাহং নাহং লোক
করাপ কিমর্গং ক্রিল তে শোকঃ ॥

বিশ্বতাব ক্রীভাস্কর্বপ্রান্তর্যারক্র

্ষন্তাৰ্কিন্তালগ্ধ: প্ৰথে বন্ধণি কোছণি ন লগ্ধ।
কৈন্তা বোধ অনিজ্য প্ৰপ্ৰে।
কি যোগ ছল্ডে—
ক্ৰিক্তাৰ্য এই স্থানে।
বিব্যাপী আন্ধাৰ্থ এই ক্ষুত্ৰ মেছে।

(স্বিদ্যাধ্যমিনীগণের বীজ)

ন্দ্ৰী ক্যাপকুশলা।

করে প্রা পেচার ভর নম্ব নির্বালী,

শিক্তর আবেশভবে গ্রুত শিকার ।

গাই আর মাধুরী এ গীতে,

জানাকণে বিক্ষিত চিত-শতদল;

বিদ্যাত আবিভা আগার।

আর বন্ধ রাখিতে নাভিবে।

কেই হ'তে পৃথব ভো আমি।

কিন্ত কোঝা পথ।

কেই কোঝা পথ।

কেই শিকা হব বাইগাঁত।

अधिकारिकीश्वर्गः महातानि, महातानि, जारमत आधिका क्षेत्रः, नरेरमं गर्समान हरनः । भहायात्राः (अतिमानिक्षितीशानित शिक्षिते) धारमाः (सामान्यानात्र नहीरतः, क्षात्र कात्र माहि अधिकातः।

काम शंख, श्रुमिन जानार,

ामा विष्णाताल हरे गतिवंड ত্যক্তি স্থান নাহি ধ্থা অধিকরে 🖔 विका ए अविमानिभिनीश्रद्धत एक भेड मिनिक হইয়া মহামাগার সহিত প্রহান । শারর। সভা সভা, এই ভো নেহারি-यन निष्ठ कान भेत्रियंति ভ্ৰমে শুফ-লিগ্ৰ-না ভিছলে, শাসপুর্ন স্থান,--পাশবীর ইচ্ছার প্রস্তি। क्षे कल्विस शास सम मन । भागान मकिक। यथा भूतीय-अशामी, मिहेक्ष निम-भगवान अस्य मन् জড়গ্রার নাহি কোন জ্ঞান। क्रम्य-यथा दक्रकािक मीसिमान्-वाद्यक ना छेड़िवादा ठात्र ! উঠ বন ৷ তুমি নধুমকিকার প্রার, अः शर्षा दिन (श्र উদ্ধেপিয় কণ্ঠমানে রাজিত যোড়শদনে, তন ওন বন্ধগাথা হয়ছেছে গান, অন্ত শব্দ ক্তর সমূদ্র ! উত্ত উচ্চতৰ—জ দৰ্ম-মাঝে,

महि अस्य मामाद अञ्चय भार

কিব। বাবধান

কুনি আর সহস্রার পদ্মধারে।

কর ধট্পথ ভেদ,

রক্ষরতে হের স্কিপথ

বেশরতে পথ—ওজরক্ষে গ্রথ।

বেশ প্রাণ্ডি—

বিষ্ণান ভেদ করিয়া শক্ষরাচার্যের ক্ষমরকরাজদেহ
পরিভাগিকরণ এবং শহরাচার্যের শিশুস্থণের প্রস্থান।

त्तरांत विषय-ांग मांगिनी-अठिंड दान,

জ্যোতিগায় স্থান। ২৪ স্থির! হের মন—

অহা। নর্থনাশ হ'লো, সর্বনাশ হ'লো। কে আছ, বাজ্বৈদ্যক সংবাদ দাও। ব্যুমা। কাৰে দ্বাদ দেবে? বােসিরাজ বাজ-দেহ প্রিক্রাণ করেছেন। এদা, সাম্বা গ্রুম্ব ক্ই, চিত্রামাল বৈধব্য-যালা নিবারণ ক্রুমা। চাক্রা, রাজদেহ তুল্লীমানে প্রে বাই। मुखन। अङ्गिन अक ख्वार्ड वहिङ नमत्र, अस्टत्रत वन्त्र मम ना छित कथन ; এবে সন্ধিৰণে উপনীত জীবন-প্ৰবাহ। *[অজানিত বিভৃত সন্মুৰে পছাৰ্য্য, वक्तिरक छोटन दोननात्र, व्यम्भिक देवताशात्र व्यक्षण। আঁকৰ্মণে ছিন্ন হৰ বাসনা-বন্ধন, किन्द्र वाटक दिशना समाप्त । সত্য জান করিভাম বাহা, ত্রশোভিত ত্রন্দর সংসার, বিবেক দেখাৰ তাহা প্ৰপঞ্চ কেবল ! মহা বৰ্ক-হর তাহে আকুলিত মন! সত্যমূর্ত্তি হেরি হয় ভয়ের সংগার। अंभक्ष मक्ति। ক্ষানালোক-ঝলকে ব্যথিত হয় প্রাণ। मठा मृद्धि मत्नादत विरवक-मध्रत, বাসনা-জড়িত চিত করে নিচলিত।]+

(উভনভারতীর প্রবেশ)

উত্যা কি মিশ্রমশার, আমার ছেতে তেতে চান—
বাবেন, তার আর ভাবন কি? কিন্তু আচার্য্য
আমার না পরাজিত কর্লে আনি ছেতে দেব
না। আমার সৃহিত মাসাস্তে বিচার কর্বেন
বলেছিলেন। কিন্তু কই, একমাসের অধিক ছো
অতীত হরেছে। তবে আর কেন, এসো—নেমন
ছিল্ম, তেমনি থাকি।

মণ্ডন। আমার ইচ্ছা বটে, কিন্তু ধেমন ছিলুম, তেমন আর থাক্যার উপায় নাই। ইচ্ছা হয়, আবার বিখাস করি সকলই সত্য, কিন্তু উপায় নাই। বুখন হিন্তু চিন্তায় রমি, আচার্য্য মরণ ক'রে চিন্তাপ্রবাহ যে কোথার বার, তা নির্ণিয় কর্তে স্থামি অসম। আনন্দ্রমন্ত্র করি কর্তে স্থামি অসম। আনন্দ্রমন্ত্র করি করে আভাস যেন চকে নিপতিত হয়। মনে হয়, আলি ভুক্ত ক্যমনা করে ক্রিপ্রান্তি ভিলেম। তেবেছিলেম, কর্মাই স্কর্ম, ক্রিপ্ত ক্রমনা করে ক্রিপ্ত

কানার কথ কি ; কিব নেই ভারার ভোগার কঠবর তন্তে পাই কার্যাই নর্ন-পথে পতিত হঙ্ক, তথনি ব কার্যাই ক্রম, এই তো ভোগোর ক্রম, এই বো ভোগোর

*

কৈছ তামার কাছে পাক্ষো না। হার রে:

কিছ তোমার কাছে পাক্ষো না। হার রে:

কি ভরই দেখাবুম। আমি চ'লে সেলে কে

মঙন। তোষার পাছ এ কোড়ক-ক্লাণ কি
নিমিন্ত? দেখ ছি, ভোষার চিত্ত অভিন ;
বোধ হর, আমার প্রতি দোব দিয়ে, তুমি ইচ্ছা
করেই চ'লে বেকে চাছো।

উड्य । कोशांत ठ'रन यात ? ज्यामात वाल्य हैक्स ? এতদিন বিচ্ছেদের আশকা ছিল, সে আশকা ज्यात शोक्रत ना।

स्थन। राजामांत कथात छात छ आनात स्वरूक्छि हरक ना। राजामांत सूर्य कमांठ व्यक्त कथा निर्वेष्ठ हरत ना। छूमि ध्येट युक्तूत क्यांगांत स्थारत वन्छ—हित्रमिन व्यविष्टरम थाक्रा १ विष्टिम ना हत, त्र राजा स्वरम सत्रभाविष्ठ।

উজা: জীবন-মরা আমাদের তো নাই; আমরা পরম্পর প্রেমে আবজ, সে বন্ধন মৃত্যুতে ছিড্তে পার্বে না। আগ এই অনিজ্য বন্ধন-মূক্ত হয়ে সেই চির-বন্ধনে পরম্পারে এক হবে থাক্বো।

* মেওন। উভ্ৰতাৰতি—উভ্ৰতাৰতি, তুমি কি আমায় হেডে বাবে ?

উভর। দিন দিন জুনি ত ভারি পণ্ডিত হচ্ছ ?

অবিচ্ছেদের নাম বুনি ছেড়ে বাবে! জুমি
দনে ৰচ্ছ, বুনি সন্মাস নিবে আমার ছেড়ে
ছাগাবে? তা ছাড়বো না—পালাতে পার্বে
না। আর পালাবেই বা কোথান? ভোমান আচার্য্য আর আমার সলে বিচার কর্তে ভানুবে
না। আমার অভি কঠিন লাজের ভর্ক, এ প'ড়ে
লেথে না, ঠেকে পেথে।] । বিহা, মিশ্ব—তজ্ঞান
উপ্তিত, এই বে ভোমার আচার্য্য।

(मक्षत्रांठार्यात व्यवन)

यांगा, भावि लगाउ :

শক্ষা মা, তাৰ বৰ দেন যে, যত দিন জানার বাধ্য প্রচলিত পাল্যে, ওড়া দিন আগনি কানার মান্তমিনী ছবেন। মা বিস্তারশিনি, জুলি না সংসারে বিস্তমান থাকুলে জানার ভাষ্য গৃথিবীতে লুপ্ত হবে।

উজা। বংস, তোমার কার্য্যে কামি স্বাহনাত, তোমার ইচ্চা কদাত অপুর্ণ বাদ্ধে না।

মন্তন। উভয়ভারতি, উভ্যান্ত প্রতি - সুমি কে ? এত দিন তোমার চিনি নাই। এত বিচাতি প্রিক্ত দাও নি । পরিচাদ - তুলি ফা । কি প্রে

উ

- শৈনে বি একটোকে স্থান কেলাই

কাইব, আমি চতুল্ খেল পার্ল ছিলেন। খবি
শ্ব কৈবলৈ খনিত হওলাল কানি লাল লাই।

নে নিমিত সংগ্র লাজিত হন। চতুল্ব জ্ব হলে আমার আভিশাব প্রচান করেন লে, গাননা

ক্যা ধরনীতাহে অবভীন হও। ভাতিবালে আমার
আনন্দ হলো।

भवन । जारा महिनात मारा

MOR! WARE CIT!

শ্বাদ্য দিবাজকে জ্বান করো দেশ দেশ এই মা ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰ সামী কৰিছিল জুমি মঞ্জ লাম কৰিছিল কাটে অজ্ঞানিত স্থাপেৰ নগৰে আজি ইছি চোডিল বাং বুলকুটিছ স্থাপেৰ নগৰে আজি ইছি চোডিল বাং বুলকুটিছ

পট-পরিবর্ত্তন কমলবনে সরবতী। (কলাবিস্থাগণের গীত)

কবি-রবি-ছবি নথরে টিকরে।
বাগারদ শুজরে করে, মোহ-নাশি বেধহাসি অপরে।
বাংলাতি বেত-মুর্তি, দিয়ামরা **বেত-জ্যোতি,**ভূপদিত জ্ঞানভাতি সহস্রায়ে বিহরে।
হতাজিনী ভারতী, শেত-স্বোজে আবতি,
ভালোধিত লাভি-রাতি, বেত ক্রিপনিকরে।

পথ্য তাঙ্গ

---- °*

গ্ৰহ্ম গৰ্ভাক্ক

্লী-প্রান্তর গণ । ভাজাবত বাদকগণ।

प्रभावानकः। बुक्ती शताकः है देकी है। भावानकः। वल, मन्त्र जन्त्र नां कुल्लान नां, गुक्के इस इस कंस्त्र वेस्टर स्विक्टर

তর। ওত্ত প্রদে<u>শ ই হার। সাধ্ছে ও</u>কে সাধ্য

সমাধাৰক। মা, মা লগু ইচ্ছে হয় বন্ধে নই. উটে সোধা চ'লে ব্যব

্যু ব্যবহার স্থান্ত ভাই, ও অমন কেন্দ্র একনির প্রেক্ত সাম না।

১ম প্রক্রন তেবে আর হাবা কি । তব মা থাবার দিনেছে, ভাগি কড় দিন ওর **হাত থেকে** কেড়ে থেছেনি, কিয়াবার না।

रा भारक , ३३ महि अकर, भारती।

्य र्वावक । जिल्लास्य मह बाहे श्रास्त्र छ । कति ।

रा वाव हर या अहि, इत्य स्टाइन केंग्न भी।

ক্ষ ব্যালন : ্লাল, প্রকে গ্রেছা কর্ষি 🛉

>র স্থান্ত না, সা --কেন ধার্মের গিওঁ ১ গুলা স্থান্

১৯ ব্লিড ছি. **(১**১**৫ জায় না), জায় না—-ও কারে** ভিত্তবভিষ্ণ বেছালে এখন চ গুরু বালক। মা ভাই, এখন তুমি গোর হয়েছ। থেলা দাও।

(থাবার হত্তে হাবার প্রবেশ ও চুপ করিয়া অকস্থানে উপবেশন)

धरे होता क्ला बरमाहा ।

১ম বালক। ('অক্সান্ত বালকের প্রতি) 'ওরে, খাবার নিয়ে এসেছে, থাই আয়।

२४ त्रांगक। त्कनं अत्र थातांत्र त्करक् थाति ?

তম বালক। তোর ইক্ছা না হয়, তুই খাদ্ নি।
(ধাবার হস্ত হইতে খাবার লইমা ২ম বালক
বাতীত সকলের আহার) হাবা বুড়ী হোক,
নাও চোধ বোলো, চোর হও।

১ম বালক। এই হাবা, চো'থ টিপে ধর না, কিসের বুড়ী হলি ? ধর না চোথ টিপে,— (মাথার চড় মারিয়া) এটা পারিস্ নে ?

২য় বালক। কেন ওকে মার্হিস্? নে পেল।

(বাৰকগণের ক্রীড়া ও গীত)

ভ্রেছে টু দিরেছি, লুকাবো না, ছোঁ দেখি ? ডাড়া দাও, তা হবে না, চোর হয়েছ চালাকি ? ছাই জানিন লুকোচ্রি; ছুনি গ ডে;র নুরোদ ভারি,

্রক ছুটে হোঁৰ বৃড়ী, ভাঙ্গুৰে তোৱ ছাঞী, সাত চাঁৰ গায়ে দেব, কাড়বো মাধায় চকুনজি :

্তিয় বালকেব প্র**টিয়া** ফাসিরা প্রথকে হাবা [বুড়ী]কে স্পর্শকরণ এবং তংগশ্চাং ১ম বালকের তব বালককে স্পর্শকরণ)

১ম বানক! আমি তোকে ইরেছি, ভুই চোর ংয়েছিন।

তয় বালক। আমি বুড়ী ছুঁলে, ভার পব তুই আমায় ছুঁহৈছিল।

১ম বাৰক। মিছে কথা বলিস নে, আমি আগে ত্ৰুমেছি।

প্রবাশক। তুই বিছে কথা বলিন্ নি, জামি জানি জামি

১ম বালক। আছো, বুড়ী বনুক। হাবা, বল তো, আমি আগে ছুই নেই দু আমি আগে ছু বৈছি, তার পর গু, তোকে ছু বেছে। বল না বল না বেটা (পালুব্যুক্ত)

[ি] ২য় বালক। কেন ৩কে মারিস—কেন **ওকে** মারিস?

১মাঝালক। ওরে এর মা আসছে— পালাবি চল্ ্বান্ত্রাপের প্রায়ন।

(अस्तास्य क जरशहीत अस्तर्भ)

প্রভাকর-পর্নী। দেশ বেনি ল'দে ব'বে মার থালে। থাবার হাতে দিলে নেরিবে কানে, কার ছেলে। গুলো কেড়ে নের। তুমি তো ছেলেগুলোকে কিছু বল্বে না। মেরে হাড় গুঁছো ক'রে দেয়, থাবারগুলো কেড়ে থার।

প্রভাকর। আমি কিছু বলি নি, নি এতেও চৈতত হয়। এদের নকে হেন্ডের ইচক হয়, নি রাগ হয়,—তা হলেও মুখ্বে। এ জনিকখার হচেচ।

প্রভাকর-পত্নী। আর তোমার মার থেকে জানে কাল নেই। পোড়ারমুখো ছেলের। তানি আব বাছাকে বেরতে দেবো না।

(জনৈক প্রতিবাদীর প্রবেশ)

প্রতি। ওহে প্রভাকর—প্রভাকর, এই দিছ্

দিয়েই মহাপুরুষ থাবেন। তুমি একেবারে

পামে ধ'রে পড়—আন ছেলেটাকে পারে

ফেলে দাও। ক্ষমতার কথা বল্বো কি হে,

ভামি স্বচকে দেলুম, মরা ছেলেটাকে বাঁচিয়ে

দিলে।

েভা-পরী। ই্যা জ্যাঠা,—সন্ত্যি ? প্রতি। ই্যাগো, মরা ছেলে কোনে ক'রে মা-মার্গী কার্চে, তাদের ভাগ্যক্রমে পেই তান দিয়ে মহাপুরুষ যাচেনে;—দেখে দ্যা হতে, বল্লেন, 'কান্চো কেন, তোমার পুত্র ত মবে নাই।' ওমনি মৃতপুত্র বেন মুম ভেলে উঠালা।

প্রভাকর। আমার প্রতি কি নরা হবে ? প্রতি। অবশুই হবে, উনি দয়ার সাগর।

(শঙ্করাচার্যা এবং সমন্দ্রন, মণ্ডন মিত্র, আনন্দ্রণিবি, চিৎস্কুপ, জোটকাচার্যা, শান্তিরাম শ্রভৃতি শিধ্যগণের প্রবেশ)

শহর। হরেরর, এ কোন্দেশ গুলে জন মহাপ্রারের আবাসহল বোধ হছে। দেখ ছেখ ; — মাধ্য-মান্টী প্রশ্ব আহি কিছ ও প্রিড, েন শাতিবেরী বিরক্তি কভেন, প্রান্তণ কর-লালিনী, পালীকা সমস্কৃতিভিত্তি মন্তব্যেশ নিকট বিহার চাতে বানি কভেন, তেন হিংদানেলক ক্রা নিক। তেলার নিক্তর কোন মহাপ্রত করেন।

व्यक्ति। (श्रेष्ट्राहरतत्र शक्ति कर्ताहरूके साह मोड--अरिश परद्याः

প্রতা। (হ'বার হক ধরিলে) মে ওবং 🕫 (नेमजोठरेकीन संन्यारङ तका करिंहा । १३) १ ক্লা ক্ষণ্-লহেদিন অধুঘৰ হিংবৰ, ১০০ **प्यत्योग और श्रीमाश्राम गांड रह**े किस गुरुशारा আমার ও ভামাত এাপট্র কর্ণা শতভাগে বিভিত্ত। পুলেশ বন্ধকন অমোদশ বংসর, কিন্ত অভাবৰি একটি থাকা নিগের করে নাই, দিনা-রাত্র প্রথম। প্রেজাবন্ত মুখে দিলে কথনো আছের ওরে, শরিধের তার নার্মময়তে করিদেশে बार करा, ७६९ घटार कात सहि, शब्दांगती ह ् अब्द इंग्लि १८०० ए जोत लोड क्या महि। शगवंत्रहाइत महिता एथन गोड़ी जनतामा, द्वारा हरे नामक बंदि अन्तरमा १ एवं ५, अशक्य क्या है। दर कारत, ভাতে কোন প্রকার বিবাজ ধ্ববাশ করে জাত भागिक्त ५ व्यादमोद, किन्नु काउन छोत्। सक व , জানু, জানালার কুপার গ্রাহ্যবাহক জীক্ত পেয়েছে, —गामात 😅 अउ तान्यक छेपाच करून। দেখুত ত্রাষ্ট্রাই আই নিংক শৈতকো পজিত রয়েছে, য়ে অবস্থার রাখন, এই অবস্থায় পাচক।

্ষার : সংগিমি শ্রন্থ বিশ্বেন, কিন্তু আংগতি কামার প্রায় কর্মত বিশ্বেন, হা এবং বুক্তন স্

প্রভাতর। বিছুই টোনে নাই। জানি জাপনাত পদপ্রান্তে নিশ্লপ করলেন দেই অব্যাহেই প্রতিন্ত রয়েছে ৷ পাতৃ, জাপনি নালকে প্রাণনি কান্তন। বিছয়। বালক, পুনি চেন্ন কোই বা এই দক্তিন , জানি অবজ্ঞান কঞ্জাপ কিন্তু স্বাস্থ্যকৈ ধীনে বিশ্ব ২৬পেনি)

क्षां। सङ्घ्यस्य नव सम्बद्धाः। सः अक्षाम्यविक्षेत्रः गृहः।। सः अक्षांनी सः। विस्ताः।

्रे े.स्कृत होस्य । संस्तापिकाः । तब्दे (क्षेत्राकासम्बद्धाः व्यक्ति) एतः दिकारः, १५ - ११ कामक क्षितंत्राभौतिष्ठत्र विकारः होता। जगन हिन्द्रान यथा प्रान श्रकांभ, अहेका सम्बद्धित पित्र पि ক্রিয়াব'ন গ্রাই প্রভাবে, আৰ ংশেই জুকা শ্ৰেদ্ধ কিন্নজন কেই— निराक्षात्वर्भाग ७६-साम आपि। > ्रिय ^{संस्था}ठा यथा तरिष्ठ सन्नभ, লিনেজান শ্বরূপ যাহার, এড়ঘাত প্রকৃতি যে বিশ্বটি আপ্রয়ে দাৰতা কাৰ্যো পৰিনতা, শবিত। দ নিতাজান-খরপ অহম্ : ২ বন্যাৰ প্ৰতিবিশ্ব দৰ্পণে বেমন वनम स्ट्रेडिंग मार पृथक् कथम, বুদ্ধিৰণ যুক্তে বিশিত আশ্বা তথা জীব-ভাব করিচে ক্রন্ত, ভিল ভাবে জা শ্ৰাল প্ৰশাস্ত্ৰা হ'তে— নেই নিত্র গৌধন্যৰ প্রমান্ত্র আমি। ত अडिस्थि गारि राह मुक्त विश्नन, महेला बाधार्क रहेल निर्मान, প্ৰমাত্ৰা বিভিত্ত হাজাতে, सद्भ कमल भौषा पट्ट निष्याम, ारे भवमा श्री सम भागूनभ दिला । उ মনের পে মন, বিনি চফর মধ্য, ইলিৰ বাহাৰে নাহি পান দৰ্শন্ত শাহি সাই মুক্জান আয়ার স্বৰ্গ । ত বহু স্থান এই বহা জানুন বিশিষ্ট अपि है। विकास अपिट असकान — লাবা করি ন কলেপে জা বিভয়ান, অনি সেই বিজ্ঞান সাখার বজা। এফ স্ত্রি এখ স্বাদ প্রকাশ কারণ, ৰং চন্থ কৰে কাহা কাছে ব প্ৰকাৰ, ্ব স্বৰণ কৰা কে বন্ধিকে প্ৰকলে, रू, भाग रह गुरू धक का रहत रह रहा दिएक जा जिला खाका वासि। १ पर्यापाल्येके रहे हैं। मुद्यास्त्रस् शहरीम कर छात करत पूछ्यन, ारिका विद वक्ष भाषा-**व्यावना** वक नहांन करत जाननाइ, GR जिला विश्वता स्त्राण **अस्तित**ी के क्शंटन ममल तत्र गाराटन अस्ति। वर् र ए द्रावक्र यात्रक्र कर्म

A5 1 60

প্রচরপ বর্ষাত কাকাশ ঘেমন ।

সেই নিত্য জানরপ প্রবর্গ জানাব।

স্পান্তানী সহ প্রভু, লাক্রিড ভোনার,

যে গুল, হে বিভার-বিহীপ মহায়ন,
কালিকর পার্লে ব্যক্তরা সাছাপ্রে

আরক্ত প্রতিক ব্য জান,

চল্ল-প্রেভিনিত ধ্যা চপ্পর স্থিতি

বহু চল্ল হয় লান্তমান,
প্রমান্তা প্রস্কারের মান্তার প্রকট,

কুলা বর নির্বাহর কান।

শন্তর । তে বানক, তুলি কীনপ্রতা লগতে, ব্যাহত আমানকী থেলার ভাল লগতে বা নাল ব বেংডা তুলি হতাত লগতে কুমি হতামলক কালে দলতে বা লগতে বাহিছিল তুলি নকলাকী মহাপদ্ধান্ত কলে নাজালে অব্যাহন করো। (প্রভাবনের প্রতি) কভিছিলেই, প্রভাবন প্রতি) কভিছিলেই, প্রভাবন প্রতি। কভিছিলেই, কাল লগতে করাই । কভিছিলেই কাল লগতে করাই । কভিছিলেই কাল লগতে করাই নাল লগতে করাই কাল করাই । কাল করাই । কাল করাই লগতে কাল লগতে করাই লগতে প্রতি কাল কালি কেলেই লগতে কোল কালিই কাল কালিই কাল কালিই কাল কালিই কাল কালিই কাল কালিই ক

শালর। সা বাবে পুল বন্ছ ? শারণ করে। জুমি
কোলার পিড়-পুল বানে মন্নাম সান কর্তে
গিলেছিল: অনুনাম পতিত হলে তোমার
শালন ন্যাম নির্গত হল। এই সারু জোমার
লোচনে ন্যাম চিত্ত হলে তোমার নিজের নানীরে
প্রেণ করেছেন। জুমি তেবেছিলে, লোমার
প্রে মুইাপিন হলেছিল—কা নয় জুমি তেই
মহাপ্রেকি গুনে বানে এলাছ। পাছে সংকার
পর্যা করে, কেই নিমিন্ত জড়েন্ন ভাম ইনি
অবস্থান কর্তেন। এই সায়ুর প্রভাবে ও
ভাসেশ শান্তিপুর্। যা, ভোনার গ্রাহ্
নার্লিং আইফন, প্রভাবে ভাল কর্বে।
বাশারির প্রায় নারামানপুরে বাল করেন।

প্রভা ৷ লাক্ষ্মিত এমে শৃহীর আবাদে নোগাঁর প্রমোহন মাই প্রক্রানে এক দিন রে এই

শ্রক্ষবিদ্ মতাপত্রাসর প্রেন্ড তরতার স্বাধার্য ব্রাপ্তাস্থ হরেন্ডি, কে আন্তর্ভ প্রতা ভারত্তমে দ প্রের মনাতা তথ্য সেন্ডিন্তর প্রক স্বর্গনি

প্রভাগরী। মতীকে একেং ক্রেক্স গ্রুম ছারী
কর্ম বিজ্ঞান স্থাতি এড নিম বিজ্ঞানে বিজ্ঞান করেছি প্রক্রেক্ত বিভিন্ন করি বছে ছার্থনি মতি, আপনি কি ছান্ত্রনত্ জ্ঞানি প্রভাগনি

শ্বন বি না ক্রি, কলি প্রাণিনী, ম্ভাগার ক্রের কলেছ – স্থানির বিদ্যালী করিছাল করিছ ক্রেইলালা ন লাখনা ক্রেরণ প্রাথ স্থান । লগার স্থানির, ম্বানার বাহ স্থানির প্রাণ করন, ক্রেন্ত স্থানির স্থানির স্থানি হালে হতে। ভ্রেন্ত স্থানির ক্রিক্তি) এলো ক্রেন্ত গাইন

आत्राव एक शासायकान कारावे।

। उन्हार अस्ति।

প্রতি নি । পত্ন আমার লকটো আছার কর্মা। আয়ার কীন্য স্থল ক্রেক ত্রাপ্তনসূতে আদি প্রভান শ মহীন হছ বাহিন্দ

(শলবালিটোর গলপের্ল্ করিন্ধ প্রথায়করণ) শলগ : বেলগোলন ভাষাতে অভিনে দিবাজ্ঞান

কাভি কৰ্মৰ । প্ৰতি । প্ৰাকৃ, আজ অসাৰ প্ৰম জাগা, দ্**তীৰ্ত্তিৰ** দৰ্শন, শৰ্শন ও আশীৰ্কাদ লাভ ক্ৰেম ।

্ শুভিবানীর শ্রহান।

শ্বর । এসো হস্তামণক তোমার কার্য্য মন্ত্রান হয়েছে। আমাসের এবনও ব্লকান্য অনুনার । (আনলগিরির গোন্তি) আমুনারিনি ইনি ১৯০০ তোমার ভাষা জনসমাজে পুজা ৬ বিভাগ হবে। স্থানন, চিৎস্থেত, জোগাতের বি গাঠেও জানি পর্ম ভৃত্তিলাত কর্মনি

সমস্থা, প্রাক্ত, নামি অপরাধী, প্রাপ্তি ৩ ৬ ০ । ব্যান ক্ষেত্ত করি আন্তর্গ প্রত্যান ৩ । অনুষ্ঠা ক্ষেত্ত বিজ্ঞা ক্ষেত্তি না ব্যাপ করিব। করে তেওঁ কর্তি ও শিক্ষ বিজ্ঞা ক্ষেত্ত লাভ তিওঁ । ভিত্তি বিজ্ঞা ক্ষেত্ত লাভ তিওঁ । ক্ষিত্তি বিজ্ঞা ক্ষেত্ত প্রাণ্ড ক্ষেত্ত ্টিটা স্থাপন্ত, প্রান্থ ব্যবাস্থ গোরকে টুমি সগর দেই ধারণ ক'লে লাচপ্রতি মিল্লমাণ ভৌমার কাফা সম্পর্ণ ও গো কপন আনার ভালোর জিলা ্র হবে। ফালমার, স্থানি কোম আভাগে লেভ বিত্ত টুমিক্

সংখ্যা ক্ষান্ত ক্ষেত্ৰত । তালৰ আহাৰ ক্ষান্ত ক্ষান্ত হৈ সংগ্ৰহণ ক্ষান্ত হৈ

শার । দার্য করে এর পর্যামিরণে দর্শন করেছি। দেগা সংস্কৃতি ভোসার প্রাক্তি আবদ্ধ ভিত্তি সংস্কৃতি ভোসার সাজনী, লাভে প্রকৃতি জালেছ আছি) হলামালক, ভোসার ভোজার করেছি করেছে। ভাজার জিলা ভাজার জালেছে আছি সংগ্রামালক, কেনার ভোজার ভাজার জালেছে আছি জালেছে করিছে। ভাজারার জালেছে করিছে ভাজারার জালেছে করিছে ভাজারার জালেছে করিছে বিভালার জালেছে করিছে বিভালার জালেছে করিছে বিভালার জালেছের করিছে।

्रे ने व्यवस्थात । श्री द्वार ।

ামনীয় গৰ্ভাঞ্চ

सिंग्डोपिति कलातिकाला संस्थानिक केल्डी वस । स्थानिकार

ছর। এ কোন ৮.৪% প্রকৃতি সেন কোন গৈশটিক শভিতে আন্তর। সর্কতা মধিন, বিংফ ববহীয়,—দেন গোন্তির ্জাবাস্থান।

(कारिक स्पन्न । धारवन्)

ি কি বা**প, কি বুক্তে পারে**। না প ডি পাই পান্ত বা**নেন,—অ**হিডীয়, অসল, অব ও, স্টেড্যান**ল এক বুলুই বিশ্বমনি—আর** স্বারেচ নীয়া । আর দেবদেবী, নেড়াছড়ি যা যেথানে দেখেন, অম্নি ছলে-বলে তব রচনা করেন। গদা, নদার প্রেনি ছলে-বলে তব রচনা করেন। গদা, নদার প্রেনি নালা বাদ যার না, তার প্রব প্রায় না, তার প্রব প্রায় না, তার প্রব প্রায় না, তার প্রব প্রায় না, তার প্রব পর প্রকার। বলেন। বিস্ত বৈজ্ঞাং এলে তালেও থ ক'রে দিছেন। গৈব প্রবাহ ভাই,—নেগানে যে উপাসক আছে, গুলে গুলে গ্রেজ গিয়ে তো ভালের প্রাপ্ত করেন। এর বেশনীয়া ঠিক আরি ক্যোন্টা অনিক, আমি ব্যাহেণ্ড বল্ন।

শ্বন তে দিন লেহন কৈ রাং,
পুলা, তেব, নাগবজ্ঞ আতি প্রধ্যেজন।
মৃক্ত-আত্মা প্রভৃতি রহেন প্রারত

তে নিন কেহবৃদ্ধি রয়।

গমানি বালিত নতে দেহবৃদ্ধি নয়।
লোকত নতেন দেবদেবী-প্রতির সামল
ন্তেপ্থ হ্য নতেমত;
উপাল বল্পতে প্রতির সামল
ধানমুগ্ধ অঙ্নিশি রহে,
ইঠনুর্বি হেবে সে খ্যারে।
ক্রেম দিব্য জানোগ্রে
উপাল্ল স্বিতর সামল
ইপ্রার্বি হেবে সে খ্যারে।
ক্রেম দিব্য জানোগ্রে
উপাল্ল স্বিভি হেবে সে খ্যারে।
ক্রেম দিব্য জানোগ্রে
উপাল্ল সহিভ হেবে মানেন আপ্রিন;
দেবদেবী উপাদনা তেই প্রয়োজন।

শান্তি। প্রত্ আপনার কথা ভারি গোলনেলে, যদিও সর প্রচেত্তিন, ভবে দেশ গিনেশ সূরে ভর্ক করেন কেন ?

শকর। হাঁমগুরি নরে, বিজ্ঞানগভরে হাঁমজান করে মূচ ভিন্ন দাধকেরে। অহসারে প্রবি ভ্রান্ত পত্র সম্প্রানায়, সঠা উপ্রবিদ্ধি মাত্র কেবল তাহার।

গালি। আর জাপনিও জো তাই বলেন, বলেন— অবৈতবাদই মৃত্যু, জার দব দিব নাম। দে আ বলতে কালে, জন্নি মুগ পাব্ডে দিমে তো তার মত উঠেই দেন।

শকর ! দিবাজাত ভারে মনে বেই ভাগাবান, ইষ্ট ভার জগতেব ইষ্টের বর্মণ নিত্যানশ্যম বিভূ ব্যাপ্ত চরাচরে, ইষ্ট ধার প্রিম নিজ গম, कार अहे विवा अ परायम मत्मे । ... व कार मार्चि, विवा अ परायम मत्मे । ... व कार मार्चि, विवा कर्म कारावान, विद्या परिकारने कार्मिक कार । उन्हें विवा दिकारने कार्मिक क्यांग, कार्मिकारन भारत कार्य केर्डिंग, कार्यके कार्यक क्रिक्ट महन्त ।

পাছি। ও যান, আপনার ছেনো বধার জেতর আমি গোঁলোভে পার্বো না। আয়াও ব'লে দিন নে পর্যান্ত ভো বুর্তে পারি, ভাল পর আমার কব্যবাপ আবার কি ?

শকর। মন পর্যান্ত তো জানো ৪ কার মন বাগ দেখি १
শান্তি। বড় শোজা কলাট জিন্তালা কলেন কি
লা। কা সান্ধে আনাকে বিশ্বক কর্তেম
কি না আমিই মাতার্য্য ব'নে বেতেম। আননি
মরা মায়েয় বাঁচান, বোকা কথা কওয়ান,
জামার নকটু বুনি দিয়ে দিন, গাজে একটু
বুন্তে পানি।

भीवतः। दश्मः, माधमः शारविष्यः। माधमः करतः —

শতি। যা কর্তে হয়—সে আপনি ক্রন্ন সংগ্রন করে লো মন শে কর্তে বলেন প্রে আনার কর্পানয়। সে গ্র প্রপাদ 'এভতিতে করা জানি চোহ বুলে মন হির কর্তে লগুলে বস্লোন, মন নেটা বরং সোলায় জিল ভার টোহা বজুলেই, জয়নি স্ক্রিশ্যার মুন্তি চল্লো। এ মন নিরে—কি সংগ্র কর্তে বলুন ? আমি একটা সোলান্ত্রি বুরেন্টি, জামার মিটিও লাগে—

"गान्त्र्याः अत्रापृष्टिः शृयागृतः कातः सन्त्। मजगुनः कात्रातागः स्यामगुनः काताः क्ष्याः धरे गत अक्टिए अपि नमकात कत्रातः ग क्रापि - कत्र्रत्ये।

শক্ষা বংশ, পার তার তোমার উপলব্ধি হতেছে। বছ সীধনমালে এ ধারণা ছব্দে। বুজ্ঞান তোমার কর্মান্ত।

भाषि। समापा भाषाने मार्थ शास कार्यक

চিন্দ। কালি সকালে গদি প্রশ্ননান কা হয়।

তি কাৰে আবাৰ আপনান কাদ লেডাগালি করবো।

তই গলৈ রাখ্যেন।

শাস্থা দেখা আৰি কংকিত প্ৰান্ত এ বানে আন্ত্ৰিন করা উচিত করা প্ৰকাশন প্ৰভৃতিকে ভাকোর আনহা অন্তৰ্গ প্ৰান্ত প্ৰিভ্যান

िमाजिकारमञ्जालाम् ।

(উপ্রতিভয়বের ওপ্রের)

কে আপান গ

উপ্র। আমি কাপনার চরনাপ্রিত - ভিন্নালানা।
শহর । কি, আন্তঃ ক্ষেন্ত ।
উরা। আনি আয়োন্নতির ইছে। কৃষি।
শকর । আমার উপনেশ-এবণে ইছুক কি ।
উরা। না, আমার ক্ষুত্র প্রাণ্ড আইতে-প্রভা ক্ষুত্র
আমি শক্তির প্রভাগী বিভাত-মার্কানা আমান

শ্বর। তার কি নিষ্টির ও তানে স্মান্তি। উপ্ত। শাপনার রাজ্য দেই স্মিন্টি পাত কর্বো। শিক্ষা। কিন্ধা, অকাশ কর্ম।

উগ্র। আমি নহয়িন লৈয়েবর উপাসমার পর বিনি প্রাসম হয়ে আমার আজা দেন যে, বাদিতি কোন বালা : নির্মান্ত সাস্ত্রের মতক হৈছে। আছতি গান্তান কংলে াফিস্, গোর প্রাক্তীই সিদ্ধ হতে, স্কর্তিশিক বালে করবি।

শতর। মহাশ্য, সাঁও আত্তিকার। আবন্ধর করেন, অষ্টিসারি প্রভৃতি করে একে সম্প্রিত কারে আনন্দ্রামে উপনীত হয়েন।

हैं । भी, थामान नाम करें श्रेष्ट्रांच - श्राहत हैं। निर्मिष्ट वर्णि । ज्यामात्र निका, व्यक्ति हास्य रोगमा शुरू करेंगा।

শ**ৰ্কা। আমি কিলা** ছোণ্ডৰ কালা সূচ ুক্ৰা

डेंट्रा एकि सामात डेलका लोट्स केट्रा १८३० । स्वान स्टानिक स्टान्ट्रा अर्थनित प्रदेश । १८४५ कर्ष्ट्रा सारकत, त खिला क्लींट्रा स्टान्ट्रा नेप्ट्रा नेप्ट्रा क्लींत तामाहे कर्ष्ट्रा । स्टान्ट्रा स्टान्ट्रा नेप्ट्रा राक्ट्रिक क्लींक स्टान्ट्रा १५ व्यवस्थात ৰলৈও কৰি, মোৰে কুৰি চেই কাৰ্য্য কলে

नकत्। कार्या कि कन्दे बरतन ?

उता । तिरंक्षन करति । अक निर्माण गांध्य मछक जाहिक एक्षा आसात अध्याक्षन । जानि गम्छ शान आध्यम क'त्र भविष्य गांध् द्वांचीय अध्याम ना । तीच लाजिक करनक चाहिन किन्न के एक्ष किंद्र कामान लाच गम्म । करूप आभान गर्ने का नाव मछक जिला किन । अङ्ग आभान गर्ने का, आधानमात कविष्ठि नारे, भवकार्या मगीति वाभ-नाव अधि अभाग नद्विष्ट्यन । आया मछक असीन क'द्रा क्षाण देशीहित छात्र यनवी दर्जन ।

শবর। উত্তম। আমি এ তবুর দেহ ডোমার কার্ব্যে প্রদান এরবো। ফগার্থ বলেছ—পরকার্ব্যে দেই-ফর্পা মানবের উচ্চ কর্ত্তব্য। কিন্ত নির্দ্ধন কোন হাত ব্যতীত আমার শিব্যেরা তোমার কোর্য্যে ব্যাবাত উৎপানন কর্বে।

ত্রীর আহন আহন গ্রন্থ, এখন আপনার শিব্যেরা উপস্থিত নাই, সানাব আশ্রমে আহম-সে অতি নির্জন।

্ উভরের প্রস্থান।

(গণপতির প্রবেশ)

পা। কি কর্বো, কোণায় হাবো। গণ চিন্তে পাজি না, কেন এ ছয়ন্ত কাণালিকের কাছে ওবেছিলুম। আমায় নরবলি দের তো নিস্তার পাই। হার হায়—ইছো ক'রে আপনাব দর্মনাশ করেছি।

্র্বান্দন, মণ্ডন মিল, স্থানন্দগিরি, ডিংগুর হস্তামলক, শাস্তিরাম প্রভৃতি ি নিয়াগণের প্রদেশ)

সনন্দ । কই অকলেব কোনাম গেলেন ? গণ। প্রপাদ: শ্রাপাদ, লক্ষা করে।। সনন্দন । কি গণগতি; কি ইয়েছে ? গণ। উপ্রতৈজ্ঞ নামে এক ঘোর কাপাগিকের হাতে প'জ আমার প্রাণাজ পরিচেছন। গ্রামান বিদ্যালয়ে ?

প্রা । দেখা, শত শত কুংসিত কর্ম শাসায় ভ্রতে হয়—শতীকে ভূশিনে স্বান্তে হয়, কোণায় কোন क्षांक कार्छ, अध्यक्षांस करंद्र डिस्क द्विति व्याप्त कार्य क्षांस कार्य कार्य हिंद्र कार्य कार्य हिंद्य हिंद्र हिंद

मनक्त। दा कोशानिक क्लांशाम पारक ह

গণ। এখানেই থাকে। কিন্তু সে কৌন্তান— আমি চিন্তে পারি না। আমি ফোখান্ন রয়েছি, আমি বুনতে পাক্তি নে।

বনন্দন। তোমার কোন চিন্তা নাই, ক্ষরদেবের শরণাপর হও, আমাদের সঙ্গে এয়ে।

গণ। শোন শোন, কাচায়া এধানে স্নান্ধেন, তাই এই পর্যতে কাপালিক এলেছে। নে ওলনেবিকি গোন্ধে, ওঁরে বলি দিতে চাই। উনি কোন নাস-শরীরে ধথন ছিলেন, তথন থেকে ধলি দেবার স্বতে যুবছে। ভাই, ভোষা পায়ের খুলো দে।

(সকলের পদর্গি গ্রহণ)

তোরা কি জানিদ, এ কথা আর কাউবে বল্ডে গেলে কে দেন আমার গলা টিপে বল্ডে গেলে কে দেন আমার গলা টিপে বল্ডে, কিছ ভোলের তো বল্ডে পারলুম। আমি গুল্দেবের কাছে অপরাধী, তোরা ব'লে করে মামার অপরাধ মাপ কর্তে বলিদ্ । (চমনিও ইয়া) এই বে আমার ভুত নেবে নিরেছে, এই বে শামি প্র চিম্তে পাছি ? ও ভাই—ও ভাই —তোরা বংবে গ্রেমির স্বামাধ আর পাছে টেলিদ নি সমান্য জোদের সঙ্গে রেথে দে! প্রবাহ সকলের প্রশ্বী গ্রহণ্)

यनसम् । अत्याः, उति महात् यात्रकः दक्षानात्रं मार्कानाः कत्त्वमः ।

गण। ए जारे ६ जाए जाना कि जिलि, ज्यामावका कि है जान जमायला, निक जनाबिक ति (भवाद कि) शांद्य। লান্তি। ভাই লামান বড় আগাঁছ। হচেট, সংল তোমাদের ডাকুডে খাই একজন ডাঙ্গিক— কবার মানা গ্রাল, কবালে রক্তানন বেপন করেছে। বোল হকো আহমের নিকেই সাস্ছে। ভারতের কি বারই সংল গোলন । তিনি ধরাসর, বি শা

সন্দ্ৰন। জ্বা—কি স্কৃতি। শ তলো প্ৰাথীয় কাশালিকের জ্বান্ম স্থানে।

भन्। बत्ना-वद्याः

সন্দর্শ । চলো, সেই পাষ্টেই গুরুদেরকে স্ববছ্রতি। করি বি গাছোও পর্বে। উনি পরকার্থ্যে নক্ষক দিভেও প্রায়ন্ত প্রেরণ :

সক সর প্রার্থন

ডভার গর্নাক

ক্রিভারের আন্ত্র। লম্বভারে, ও উপ্রতিরের।

শাসত। তুনি গ্রন্থত হও, আনি ভোমার মন্তব্ দেবার জন্ম বানিক হচিত। উপ্ত। আদি প্রস্তুত, কোকা মন্তবিশৃষ্ট কুরে মন্তব্ গ্রন্থ করি।

- ैं शक्त योगप्रमादर्भ समा ।

শকর। মেনিনীতে দক্তিক মিলার মিল জনে দ্রবিল দেহের, অনিলে অনিল, তেজু সর্বতের, হট নানে দুটাফাশ জাকানে মিলাও।

(नमाविष्ट हतन)

(थर्जा नहेंस देवर बन्नाटर गुना व्यातः)

উথ। গুইবাৰ মনসামল নিক ক্রাই এইবার সাইগিছি

নাভ করবে।। এ ব্যান্ত ইন্দ্রা হ্র অপর

কর প্রায়ত জীবিত প্রাক্তবা। কেবল ভোগ—
কেবল ভোগ। ভোগ অবেকা মোলে কি ইন।
বহু কঠোর করেছি, এইবার কেবল ভোগ।
ইনাওেই অসাধ বন্ধ উপত্তেলল, ব্রহাণ হত্তবার
ক্রিনীর সেবা এবে, ইন্দ্রার সর্বাত ত্রমণ, ইভার

বিশ্বিক কৰে প্ৰায়ত এই ক কাৰ্চে কৰিছে। বিশ্বিক কৰে প্ৰায়ত এই ক কাৰ্চে কৰিছে। বিশ্ববৰ্গতি !

क्रिकाशाम अन्याका र प्र

शनका । कार इविधिः भावनः सम्हर्भ राष्ट्राः । (विकास कविशे भागमाना स्थान विदेश क्षाकान इसि स्थानिकार विशेषिकाः)

্মান্তন মিল্ল, আনন্দলিতি, চিম্মেল, শান্তিশাম, হল্পান্তক ও গণপতির প্রবেশ)

মাধ্যম । এ বিং : ওলের কি রুধিংহলেরও মাব। হন করেছেন ! । ওক্সেরের কুলার আখ্যা সকরে । কৃত্যার ।

প্রহর ! (মৃসিংহণেবের প্রন)
বিষক্ষর দক্ত, কেশরী উর্চেচ,
প্রেরট ভীম ভক্ত অস্তর বিরুদ্ধে
নম্ভে মৃসিংকদেশ।
বিশ্বশাকশিশ, নিগতি মধ্যে
শরুরপ বিভূ ভারিতে ন্যারে,

पुकि-जानावत धन

অনাৰি এক প্ৰীক্তানন্ত, প্ৰধান-ৰচনে সন্থৰ ক্তন্তে; ভক্তাদীন নমকে! নৱক-নিবাসণ, সন্ধৃতি হবণ, ভীত-নিবাশন-সন্ধৃত প্ৰশ

চরণ-বর্গপ্রা হস্তে। গর্জন-স্থান্ডিত অত্তর্গুলাদে, গর্জনিপাতিত তীবলনাদে,

গুর্জন কম্পিন্ত নাংল।
ন্যা প্রোধি, নিধি-সম্পন্ধান্ত।
নাতৃন পদ তব আবি-তাতা,
নীনতারণ তাপে
কাই ছিজিমান বিধানকারী
ভক্ত-স্থানৰ নিয়ত বিধানী

ন্ধানিক অৱন্তনালে। পদা-সম্ভূপ-নিভূবন আপত্তি, উপলিত পান্ধ —শান্ত মৃত্যুদ্ধি,

- बीनालिक सम्यासार ।

। तृमिश्हारयन अवकी

भारत । खेलु, त्यर्ग क्यून न्याः का हीन श्यापन भणायनात्र

শক্তা: পদ্ধণাদ-প্রথাদ, প্রকৃতিত হও, প্রকৃতিত হও, শক্তি

সনস্থা। প্রভু, জামি কোথায়। এই বে াই ছই নাপানিক। গুলুকে কে নিখন জনলে ? ওমানের — গুলুকেনের দিন তিনি কোথায় সেলেন ভিনি কোথার গেলেন ?

শক্র। বংক, কাত অন্নয়ন ক্ত —ন্তি কালেৰে ?
তিনি বাজ্ হাল্যবাসী, আনাৰ প্ৰত নট কৰি
তার সাল্যই প্রবেশ করেছেন।

নগুন। তুমি কোখার ছিলে ?

সমস্বন। ভাই, আমি প্রক্রেবের বিগদ জেনে
নুসিংফেবকে অলা করেছিলেন, তার পর আর আমার কিছু অলা নাই।

শহর। শাহপার, সাধারণ ব্যক্তির পদরক্ষার জন্ত গৃহ্ধবিকে পর প্রেপ্টিভ হয় না। ভোমার সাধন্যকে রক্ষা করা ফারায়ণ ভূসিংহরপে থামার

ৰীশা (সাষ্টাদ হুইয়া) গ্ৰেড্, আমাৰ ক্ষণুৱাৰ ি মাজেনা ক্ৰন।

মুণ্ডম। প্রান্ত, এই লগগভির হার। আমরা কাপা-বিকের সংবাদ গোলেম।

শিষের সংক্র তুমি জান না, এই জহা আমায় কত ক্রেশ নিষ্ণের, তা তুমি অঞ্জব কথাও পার নাই। তুমি শিষ্ণের গ্রহণ অবেছিলে, লনিহান হয়ে আমার স্থান ভাগি কবো। ভাগি ভাগি করেছিলে, কির নিয়তই আমার অধ্যাত্মী ভোগি নগলের শিমিও ভোমান সহিত অনস্থান কলেছে, এতে আমার কিরণ আনল জানো। করেণ কোন সংসারী ব্যক্তির আদার বংগর নিরুদ্ধেশ এক্যার পুর গৃহে প্রত্যাগ্রমন কর্মল তার হলর আননে পুর্ব গুহে প্রত্যাগ্রমন কর্মল তার হলর আননে পুর্ব গুহে প্রত্যাগ্রমন কর্মল তার হলর আননে পুর্ব গুহে প্রত্যাগ্রমন ক্র্মল তার হলর ভীবণ-মুন্দি

विकासक अक्षांस ।

চতুর্থ গর্ভাঙ্ক

কাপাণিকগুল প্রক্তের আশ্রম ক্রকত, কামকগা ও কাণাণিকগুল

ক্রচ। কে এ শমর ! কন্তান, আনার প্রিম নিরা উপ্তিরের কাপানিককের বধ ক্রেছে ! মধার যার, তথার পপ্তিভাগতে বিচারে পরাস্ত করে । অন্যাত দূত সংবাদ এনেছে যে, স্বাপানিক বিনাশে রাজ-বংলা হাল বাজা স্বাধা সনৈত্তে সন্তিত ! আন্তান কিয়া-বলে সনিধা শহর ও সনৈত্তে রাজা শুধ্যার বধ সাংন করা সহর আবশ্রক।

কামকশা। ভোমরা বকলেই বৃথিধীন, একেবারে ভয়ে অভিত্ত। সনিব্য শহরেকে ব' কি নিমির ফরবে প্রাক্তিক আমারেক বিকট অবমন্ত মন্তব্য হার ।

১ম কাপা। তুমি ভি মনে করেছ, শহর সামায় বালি, ভূমি কটাখে অভিভূত কর্মৰে 🖫 👉

কামবলা। কেন, শন্তর তো সত্ত্ব্যা, স্বরং শক্ষর বিচলিত হাছছিলেন। আমান প্রীলা করতে দাও। তানছিলেন অল্লাসস্থেতের মিমিত শক্ষর প্রদেহে প্রবেশ করেছিন, এ আপ্রাণ বে পেয়েছে, ভারে বুণ করা অভিস্কল। আমি প্রতিশ্রত হচ্চি, তারে বুণীভূত কর্বো।

ক্রকচা খাৎ, পারো উভ্ন।

কামকলার প্রস্থান। প্রকার উচিত্র নয়।

আনাদের আর নিকিন্ত পাকা উচিত নয়।
বথায় বে জৈন ও বৌন তাত্তিক,—বৈষ্ণব,
শৈব, গাণুপত্য প্রচুতি পকোপাসকরপে প্রান্ত্র
ভাবে অবস্থান করছে, তাদের নিকট সংবাদ
প্রেরণ করেছি। তারা নব স্থানজিন্ত হয়ে
আগ্ছে। আমবাও স্থানজিন্ত হয়ে অসুন্ত হট,
নাসানদী প্রস্তুত ক'বে রাজা স্থানজি ক'বে,
ভাব নাবণ-শক্তিতে সমৃত্ত নাই কর্মুবা। প্রদো
প্রান্থ অগ্রন্থ হট।

[नक्रात्र शक्रान।

नक्षता है। वी

शक्षत्र अवीक्ष

ব্যবৃদ্ধন ।

(दांपवलार शास्त्र)

কামকল । জকচ, তুমি জানহীন। আমার নাশ্ব ক'বেও ব্যাণীর কটাক-প্রভাব বোঝো নাই। তুমি কাপানিক, মন্তুই কামো, রহনীর মন্ত্র অব-পত্ত নও। সম্ভ বজাতে কে কোথার শতীর-চারী, যে নারীন কটাকে মা বিদ্ধা হয়। শঙ্কর তো পরকারে রমনীর আমাদ পেরেছে। সে আমার হাবভাবে, অস্বস্রভাবন দর্শনে, আমার লভাব প্রভাব, অস্বস্তাবন দর্শনে, আমার লভাব প্রভাব, নারীর নিকট তোদের দত্ত কিসের ? বুঝি আন্তে, স্থামি সন্ধিনীবেটিভা হরে মাধুরীজাল নিজার কর্বো। দেখি— গোসিদীন আবহু ছর কি না।

প্রথম !

(नक्काडांट्यात्र ट्यान्य)

শক্ষা বছকার্য্য এখনো সমূর্যে। দাজা, পাতজন, মীমাংদক, স্থান, বৈশেষিক দৰ্শন প্ৰাকৃতি হীনস্বোতি বেদাস্ত তথন-অভাদরে। পরাজিত শঞ্চ উপাসক, षाहिन निर्मनिष्ठ य भड़ी स्थात्र, ক্রিয়াছে শিশ্বর গ্রহণ, প্রধান সকলে রস্ত বেদান্ত-প্রচারে। একদাত্র অঞ্জিত কৃটিল কাপালিক । বৌদ্ধাণ প্রাক্তর হটুয়ে অদ্যাবধি নানাভাবে আছে নানা স্থানে। ষার্থপর পাবও দকলে भानर अधिक कार्या निगृक्त निर्मक त्म नगार विमान गा**डीछ,** भार गारि स्रेत श्रामिक शृह्हिल वहि वथा तक कटत शुरू, त्रदे गढ त नवाव मिकिनरिक गर्छ। विमानित्व देशभी हिक-हम्। (সঙ্গিনীগণ সহ কামকলাৰ পুৰু প্ৰায়েশ) (43)

हो त्रात मानुही का महिल अक्षत । कि कि मनि, बिटक अवस्ति क्षांत्र विराद करत করে না নারীর মানত, এত ভার বিসের ক বির কিনের এত ভ্যম নিরে থাকে গোলে ভ্যাতে ভার কাতে হৈতে কে চাহ, নেতে যে বাবে নো পারত ভার সারের হাজ্যা বি সর বাব ? ক্যেরসে যাব প্রাব্ রসে না,

ভিক্রিছে প্রাণ কোর ক'রে দ

কামকলা। আহা, মরি গরি। তেনার প্রবেবন, ধ্রেটীশক্ষ পরিত্যাগ র'লে নিলেদ কেন ব'দে আছে। তুনি শভিত, বিশাই করেছ, জুরেই প্রিভিটেন নিরাহ করেছে পারে!। বিভ অভানার বিনামে বালান আহ হয় না, হা বি ভান ভানানা হ কামরা সুমতী, প্রশেষ স্থানাত ভালার সেরার কলা এনেছি। তুনি ভোগের জ্ঞা প্রদেহে প্রবেশ করেছিলে। রাজরাণীরা অনিকিতা অসমা, তাদের সহিত কি আনিকা পাবে দ্ আযানের দেবার নর-শরীরে দিতানিবার আনার প্রায় হবে।

শহর। সাগত জননি,—
এসো এসো অবিদ্যান্তিপিন,
মাবাশক্তি স্কালিশি—
মহাকার্ণ্যে হও মা সহাব।
করে সংহারিও প্রভাব বিভার,
অনাচারে নাশ জনাচার,
বিদ্যাক্তার বিহর সংসারে,
এসো কুংলিভার্যনিনি,
হর্জনের শান্তিবিধার্ত্তিনি,
হর্জনের শান্তিবিধার্ত্তিনি,
হর্জনের শান্তিবিধার্ত্তিনি,
হর্জনের শান্তিবিধার্ত্তিনি,
হর্জনের শান্তিবিধার্ত্তিনি,
হর্জনির নালাগিনে কর্ম বিনাশ।
রূপ প্রিহর—নিজ রূপ ধর,
হুৎনিজা, বিনাশ করে। কুৎনিজ শ্রম্ভি,
হও নিজ সংহার-করিশ।

কামকলা। নেহে অমিবলৈ হনে লোহাই নহলথাৰাই শহৰ। কৰা কৰো। আমন প্ৰতিকা
ইন্দি ভোমাৰ শত্ৰাবিনাৰে সংগ্ৰহণ কৰে।
শহৰ। বাও মা বাও, হছতগণ্যে কাম্বিনাক কৰে।
কামকলা। শহৰ আৰু হ'তে আহি কোমান লামী
কামকলাৰ, ভোমান ক্ষেত্ৰ বাবিশালে আনি
শক্ষিত্ৰীয়া ক্ষেত্ৰ বাবিশালে আনি

সতক ২০। এই যে বোরতের ছবোনে দেখ ই —এ জারানিক মারাপাভাবেশ জুমি শিবশক্তি শক্ষে বাতীত এই উপ্রয়োম নিবারণ কর্তে পান্বে না। এখনি শত সহস্র বন্ধপাত হবে, সমৈত রাহা অগ্যা ও সনিবা তুমি ব্যাহিতে ক্ষম হবে।

পদৰ। আমি অগ্নান্তার আনিউচাহন কর্তে না।
নিক্শক্তি আমার আনিউচাহন কর্তে না।
আপনি বান, যদি আগার নাহাযা কর্বার ইছো
কারন, কাপানিকগণের তৈরব পূজার বাাপ।ত

না নামকলা। তিজাৰে কল্বো---সাংগ্ৰা গ্ৰেছ সম্ভৱ চাৰত গ্ৰন উভৰত-পূজাৰ নিৰ্ভ হতে, ভূমি যোগিনজিৰে গ্ৰহ গাধুৰীন হতে মনগ্ৰীকলা উৎপাদন বন্ধ; ক হ'লেই তৈৱৰ কাই হবেন। লি ক্ষেত্ৰী। কাৰা, লাফালেন উপাধ কাৰো।

শক্ষা শব্দেশ চার্ল সহায়তা করো, পেব-আর্ল্ডির সহায়েদ্ধা <mark>দৈলাসে ন্যোগিনীক্রে ব্যা,</mark> কাকে । শচির্লিন কপট ব্যক্তির প্রথমের কারে হলে।

্ৰিলান ভবিচা দৰালা প্ৰশ্নাম।

(मलकारव खावर)

সনন্দর্ম। প্রেন্ত, সন্মূপে সহলা বিপুল নদীবেশিত প্রবাহিত, রাজা প্রথম আপসার মহালা যে লক্ষ গৈছ প্রেরণ করেছেন, ভারা মঞ্জর হার কাণাজি-প্রদেশে প্রেরণ কর্তে গাড়র নাই । প্রামা যেরপ পোর ছর্যোগ উপস্থিত, ভাতে ভো

শকর। চিত্র গুরু করো, রাজাকে মর্নেগু আনার পশ্চাতে আস্তে বলো এ মাধানদী অনায়ানেই আন্নালান হয়ে যাবো। বিকলের প্রহান।

ষষ্ঠ গৰ্ভাক শব্দির প্রাক্ষণনগঞ্জিত হোমকুও। প্রক্রারক ব্যুক্ত।

আকচ। ছে কাৰ্ট্, তেই কাৰ্ট্ট বিকাৰ হৈওবা, কাৰিউনি হয়ে পূজা এইণ কৰে।। এক বিনাপ ক'বে তোমায় ভাৰসংগীৰ বিভাগানন কৰে।। (इम्ब्बिंक कांगवर के धारवन)

কি কামকলা, তুমি হেখার দৈন ? কামকলা। আমি জঞ্জনি প্রদান কর্মো।

ক্রকচ। আন কি মোহিনীকে। বারণ করেছ।
আন মান ভোমার সংসর্গে ইপ্রেক ইন্দ্রানী
উপলোগ অপেকা পরমানন উপলোগ কর্বা।
নানোকেছিনি, পুলা সমান্ত ক'রে ভৈরবের
ক্ষার অবল শ্বি বিনাশ করি।

বাজ্যলা। নীয় সমাও করো আমিও শিশানী। ক্রক্ত। অপেফা করো- অপেকা বরো, আমি পুর্বাক্তি প্রনাব বরি।

(শ্রন্ডাচার্য্যের প্ররেশ)

শ্বর। লাগালিক। জকচা কে তুমি ?

শাসর। কোননি শান, ভোমার নমত অধিকার বিভাগিত পরিবৃত্ত, কিও এবলো ভোমার জাব্যরকার উপার্বিধান কভিছে। ভূমি কৈরবের নামে গ্রেটিশাত হও যে, নামের অহিতকর বিশ্বে আর নিযুক্ত পাক্বে মা; শোমার দলক প্রকাকে হীনপার হ'ছে বিহাহ বার্বে। ভারতবর্ষে কাপোলিকগণের ভূমি একান, ভূমি আমার বহুতা কীকার ক'বে লস্কিতকর প্রেমিতপথা জ্বাপনের সহায় হও, অহ্ন নামের দল্লের বিনার করো, নচেৎ রুদ্ধে নিমিত প্রভাগ হও।

জান্ত । কৃষি মুড়াব নিষিদ প্রস্তুত হও ।—

আবে কান বিকটা প্রকৃতি,

কুজিবার যে আজি বগান, —

এনো শীঘ মহাকাবি, ব্যক্তেশাশান ;

এনো, হপ মহাবলে অশুনি স্পাতি
বহু বোর প্রবন্ধন,

উপন প্রাস্থাবি শানুর হুইতে।

[হোমকুটে সাহতি প্রদান

্ কেটাগণেৰ আবিদান)

म्यानीय

बहे बहु बहु हैं अपने करें कि कि कि कि कि कि

(বিকটাগণের অন্তর্জান)

কাপালিক, দেখ, মন্ত্র বিফল তেন্নার।
ক্রফ্ট। স্থান্ত দক্ত,
এখনি বুনিবে মন শক্তির প্রকাব।
ভূত প্রেত পিশাচ নানব,
হ্প আবিভাব—
ক্য প্রাভ্য এই হিংক্ক যোগীরে।

(হোমকুণে আহতি প্রদান)

(ভূত-প্রেভগণের আবির্ভাব)

ন্তাগীত

ल-लिया अलि ना श्ना। गार् मात् भाव् मात् वत् धत् धत् धत् कार, कार्ड, कार्ड, कार्ड, था ना था ना ॥ তড় তড় তড় তড় ভোৱে ভাছ, মাটা ফাড় পাড় পাহাড়, মেচিড়ো গাড়, जिया हो इ. खरम खरम लोड़ा मालग्रा ज्'नाक ज'नाक केंद्रक (वे ।व। তোল রোগ গওগোল শাৰাৰ ৰোড়া ছুৰান ভোল ; एक्स्ट्रिक्नी शस्त्र प्राप्त, क्रित्रा त्याच त्रान् वा विद्व এক গাড়ে - বিজ্ঞানে EX MICE - A MICE -

राष्ट्री स्ट्री भावा के

প্রতী। হর শাক্ত হে বনিক্তেখন, নিবশতি-প্রভাবে ভোষার।

ই ভূতপ্রেতগণের অন্তর্জান

কাপালিক,
এখনো করহ মিত খ্রুল সাধন,
কুমতি করব পরিকার।
ক্রুলত তিঠ তিঠ!
এস ্স বিকট তৈরব,
বিপক্ষের ৮ও চুর্ণ কর আবিভাবি।
করি এই হরের নিধন,
নিজ পুজা ভূমগুলে করহ স্থাপন,
রক্ষা করো আভিত সকলে।

(হোমকুতে আছতি আলুন)

(दागक्छ रहाउ देख्यत्व वाविहाव)

ভৈরব। সাবে ত্রাচার কালালিক, ভোষ এগনে।
ক্রানোদ্য হ'লো না ? প্রেডাক্ষ নেথ নি,
বিখবাসকারী অমকল শক্তিসকল জালাহন করে
ছিলি, সমস্ত শক্তি রার শক্তিতে নিমুগ্ধ হ'লে
এখনো তার পূজা না ক'রে বিশ্বাচনা
ক্ষিণ্ এখনি তোর বিনাশ-সাধন করি
বরার অমকলগক্তি মসলম্য নয়ক্রণী শক্তরকে
অবশহন হ'বে মসলশক্তিতে পরিলও হোক।
ক্রেকচ। আহি যে হই, জাশনার নিক্ট ভার্মি
অপরাণী নই, আপনার আমি উপাস্ক

তৈরব। ত্ই উপাসক দক্ত মাত্রতা আনীয় বিশ্বত বর্তী, এই ভোর কামকেরনা। কিন্তু স্বাংট তার বিয় উৎপাদন করেছিল, কামানত হয়ে আমার পুলার প্রস্তুত হরেছিল। তোর পুলা প্রতার মার আবি আধি নহা। বিনাশ প্রাপ্ত ৫। তোর বিনাশে পৃথিয়ীতে প্রচার ছোক বে, উৎকট কাম্যক্রিরার ববনে হবাল আবা আছে। নিদাম বাছিল ব্যতীত মহাপ্তি আবারে ক্রেনিন সংস্থান করে না।

(ভৈমবের শূলীখাতে কাংলাইকেই মুহূর)

८६ अपूर्व १८ व्यवस्था है, १८ १८ वर्ष व्यवस्था व्यवस्था । इतन, वेद १४६ वर्ष प्रकार स्थान इ. नगेना इतिहास स्थान क्षेत्र । इतिहास स्थान है । পুলিবীকদার ভাক ভৈরবদের উপরেই ভাপিত —মানধের মন্ত্রাবিধান করান।

ৈ বৈবাৰ । শিক কাজা শিৱোধাৰ্য্য হৈ প্ৰন্যান্ত কুম টলীপ্ত হয়ে কাপি শিকাপকৈ জন্ম কৰে। বাজন শৌকাৰ বিনত হৈছি, পুৰিবীতে সভীকাৰ, মানহাল পাছতি কানবীয়া কাৰ্যকোপ কপ্ত-শিৱণপোৰ সহিত ভান হোক।

(ेडब्रद्दत्र अञ्चलाम)

(भारिकां अहम)

শান্তি। প্রত্যু, প্রভ্যু,—কাশ্চর্যা বটনা। কাপাদিকগণ মহাসেণে উক্ত জনপ্রনান প্রথম ক'রে নৈত্ত-গামস্ত বিনষ্ট কর্তে প্রবৃত্ত হয়েছিল। নহসা বিপ্রদেবরণী এক বসল নেই মারাস্থোক নিক'-কা করেছেন। বহু কিপাতে উৎপাদন করেছিল সেই সম্পার কলেছিল বিসাল ক্ষেছে। সহসা ব্যুন মান্ত্রী হ'লে মহা-আনি উপিত হার কলেছিলকগণ্যা লকা। ১

শ্বরং জন বাস, জ্নতবন নিজ বৃষ্টিরাগ ক্ষমিতি শ্বর ব্যারে। উপাইত এ গুরে আমাদের কার্য বিহারে। নাল্যে কাহ্যাবে লাম্বিকাশ প্রালিক হ'লেই ভারেরবর্ণের কোন স্থান অপরাজিশ থাক্যে না। (স্যান্তি হইকা) না, গ্রান্ত

এবাছি। পড়, ভাকথাই একটা চঞ্চল চাৰ্যন কৈ নিভিন্ন হ

শিক্ষা । এ কামি বাজ্যপান ব্যন্ত ক্ষা । মা আমার ক াবাজন, জাবি মান তার কণ্ড-ইপের সামান গোটেছি । তোমরা সকলে মিনিত ক্ষা মান্ত সভাত আভিন্ত কলা। মান্তি মাত্রবাজন হলা ভাগ্যিক হলো। ক্ষি । গুলা আজন।

্তিক্ষিক্ত প্ৰস্থান :

ৰ্বজন্ত । এই, কাশ্বৰীয় দেৱা ্ৰাক্ষ্যান্তৰ কথা হোৱা নালগাই আনত ।

[अन्तराजि वक्य-आका अक्रम् [

गुस्त श्रेष

मक्षाराद्धित नाति ।

বিশিষ্টা । কঠ মা, এগানা তো আমার বিকা এলো
না ? আমার তো লে বলেছিলো, আমি বরণ
কর্লেই দে আদ্বিধা সে তো আমার মিলা
বালী নয়, চনে কৈন এখনো বিলয় কতে ?
এ জীর্ণদেহে নার অধিকরণ তো এলে খাক্রে
না—আমি জোর ক্রুরে হরে রেখেছি, আমি
বাছাকে একবার দেশবো বানে মারে জেবেছি,
সেতে দিই নাই। সে আমার মার্লি বানে
ভাক্তে, ওনে ওলে বাবো । তবে নেন না—

পুল। (মহামালার প্রতি) হাতার ভূমি যে হও বাছা, তুমি কিছু বড় জ্বালেন্ড),- আমালের মত প্রাণ্টা জোলালের লয়। তোমার প্রপাক थाङा म क्रीक-- अर्थे पुत्रशोकरे भ तदां । साय-राज मतन कारमा मि । निरंप धारी, मांगी धकाव स लाख महरू । 'छः--शुम्ब व्यवसाय मध्या दशस्य কানহটো রগুড়ে ধ'বে হি'চুড়ে আনত্ম। "ক্পা माध-अंगा नानां" कडेटडां, "नामि डांवज्य सान साब्ह । मदामाबान क्षेत्रं मित्र हरन साहै। क्य डो करना : डांड कोडका शीव मि, जानशास्त्रव ल्टब छान (भएँ) एड्स इन : जामात्र याने दक्छे হেলে হ'তে আদ্তোতা ভালা বৈছে তাড়া-তুম-ভয় কোনা দেকতা ৷ শুদি মাধানিয়ার মাধা ধারি, ভারে মাত্রে, ধরকে কেন ব্রিণ্সু গছে পেকে বুলে পড় কেনাই। তার শহুক নিবি নে, বাৰ্ণ লিতে হয় লে, মাথা মুদ্ৰতে হয় মুলো,---কে কোৰে কি বলতে বেভো।

निन्छ। नाना नकत, आभि व किमित जानामध क्रिय अवस्ता कीवन (अपि) नाम आभाव, शोष कि सारक स्तवा अल्ला नाम प्रिय क जानाब गागत-क्रिय नामक। जान राम मनम नेमक स्तवा स्ति। ताबी, प्रिम का प्रिया निर्मित

निवृद्धाः नृक्क विशिष्ठ स्थापना । नवन । उन्हें स्थानाना मि अस्ति । কৰ। থকা বলৈ তুই বি কৃত নাম। এনবাৰ চোথ চেমে দেখ নাগান কি হান করেছিন। এই তো উড়ে এন্তে পারিন, এত দিন একবাৰ এন্তে নার্নি, তা হ'লে তো নাগাব এমন বেহাল হয় নি।

মহা। জগন্ধাণ, এদো, আমর। একটু অপ্তর্যালে বাই, প্রদের মারে-বেটার কথা হোক।

का। भूत, धकरात्र भाव ला छाक्, -- मानीव आपणा नीजन स्वाक, आर्थि छान गोरे।

শহর। মা—মা, তুমি দে মুহুর্ত্তে শ্রণ করেছ, তোমার জনহুত্তের আসাদন আমার মুথে এসেছে। শ্রুগ। তুই কি ছব থেরেছিলি? মাগীর মাইরে ছধ ছিল না, পাণ্র-কুচি দিয়ে তোরে পেলেছে। আহা, হা হোকু, তবু মাগী শেষ দেখাটা দেশলে।

िर्शामीय ७ महोमांश्रीत ध्यक्ति।

বিশিল। ব্যান, আনার সময় উপস্থিত, পুজের কার্য্য ক্র

(निस्त्र का 48.3 नशास-निमानी-माथ निरोध्स्य নিশি রুজতনিভ ন্পর । निर्मामाथ नगतक्षिक मूर्फानी, नक्ष नीवशंग नाश्यत् ॥ नक दांत्र नरें। मज्ञाधमन्त्रम्, मृत्रु प्रिम्, নহেশ মণ্ডিত মানব-ভাগ। महामायाधत महिला-व्यर्गत्, নৃড় মৃতাসন করাল কাল নকারার নমঃ। শিব শুভলক্ষর শলধরশেখন, শক্তিমম্মিত শিগরবাদী। খেত-অন্থিদন শ্রীরশোভিত, ভন্মবেতীয়ত অনুদ্ধে হানি ! नकातात्र समः। नाचापद निष्टु विविधिन्त्र किंड, विद्वारत वत अख्यकत । (वाभित्वन उर्, दग्रवाम् सम्बद् रांश्नवृत्क विराध्या

नक वात्र नयः

তীপৰ বহু মাজি নোগ্ৰেশ, মোগাদন বন্ধত্তত । যোগমারা চিত গোটা যাগ্রত, মুশবিন্ থ্যা-মুক্তক্র ।। মুকারায় নুমুঃ।

বিশিষ্টা। বাবা, তমক ধানি গুন্ছি, আমি বিকবোকে ধানো না। শিবে আমার প্রকাশি
হরেছে, আমি শিবলোকে দেবদেবের পূজা
কর্তে পার্বো না। নারারণ আনাদের কুলদেবতা, 'নারারণ' ভাষা উচ্চারণ ক'বে তামী
আমার প্রাণ্ড্যান করিছেন, তিনি নারারণ
স্বেষ্ট্র নিযুক্ত আছেন, আমি তার সহিত্
মিলিভ হরে নারারণ-দেবার নিযুক্ত গাক্রো—
এই আমার সাং।

শ্বর। (নারারণের তব)
নত আশ্রিতা তাপিতা মাতা।
নরণে দেহি চরণ জাতা ॥
নারকবর নব জলধর।
রাধা-রমণ রসিক-প্রবর ॥
যজ্জেশ্বর জগজীবন;
শ্কার নিত্যানক্ষ্ কর্ম

, १७ भविदर्शन-विकृत्माक रे

শিষ্টা। এই বে—এই যে গোনোকৰিছাত্ৰী মূলী গালী! এই বে আমার সামী প্রিন্দন্তে ভার পার্ত্ত। আমি ভাগার্তী, সার্ণক গুড় গতে খানণ করেছিলাম! নার্যায়ন (মৃত্তু)

(পট-পরিবর্তন-পুনরার পুরার্ভঃ)

नकता यो मी,—रव करण श्राह होन निर्तिष्टिन द करण नामन्त्रींनन स्राहिश्ल, स न रवण कर्या विश्वयनीती श्रहानरक एल त्याको ना।

(অসমাপ ও মহামায়ার প্রংশ্রেন্ন)

भग। धरे वा—आशा, हिंदन तन्यात कहा मानित श्रेतिक हिन। आहा, सम्मादिनी हुए।—जन्म रूपिनी । मिल्ल मानितक दलहरू थात नि, जन्म सर्वाना श्रेत्र नि,—श्रेत्रत हलहरू श्राहत । भावि हार्यात हार्टन, मा तहन्दिन, जन्म क्रिक्ट हर्टन वह कर्षत्र भोगात हुए।ताहित हर भाउनीम स्टाम ।

有用: 引筒片四,一部原作曲。 对槽 交流证明。 अपन स्वेशेष्ट कांच संदर्भ जाणि । अस्त १० न् ा भागाव वाह-कि मित्रि मारीहर उक्तात **ार्थ ८५३म. मा व्हान** डोन्ड्य---१८९३, कुछ दुर्भ । आफि जन्म कि कवि-- एन ८४' लग्न १ नेवत । क्या गर्मा, क्या मामा- होंग हैन लाहे तथा. हिन्नम्बा श्रव शाक्रव ! "

अन्। स्रोत नातिरता कोक नि ! दवर का न रहि। इंदे अक अकवांत्र मारा वर्रांत भरत कतिए। ं ज्याकेल व्हेंबो) शे ता भूता हि त्वाकी ्राक्षांम (७ 📍 ५ छ), शाङ्भाली स्व (य मारू **रा**ज बोरक (ब। भूगा काम -रजारः हिला निस्त्रिह । (মহামায়ার এতি) মার্গা, মার্গা, জনেছি, পুই (क) शक्ति यक-कामि अस्तक। आहि -- मानि गरे, अंग्रे आमि- अहिरे मानि।

मुकार्शामा । आवश्च कि गेरार-- १ ८० कि शावाद्य १ स्य। जाने घड किन ध्याप्ती , कड किन बुद्ध ! ্ণ্ডনে ভো ব্লনেশ অপবাজিত, খেলে! তে আমার দ্যারে নার্ক প্রচার করে। মার : व्यवस्था हो। कान्द्रीता मालमानीकि विका नता-मान काम लाई माहै। यापि दर मात्र हैका-मीय, ट्रायाव हेक्क भूत मा में द्वा अली किस्ट किड र भएत।

. हेरो । जार कान-जायात्र भरत गरे कि । जानि खांकाल कर्ता लाहि ए लाहीस महे, दरेंग 1471 27771

(কামদাস ও ম্নারামের প্রেক)

िक्षीमहाने । अहे ता नवर, द्यांच कि भाग करेंद्र १ नकत । योजन होति कराताः

ेशायां वर्ते, त्यायान १९६० वर १६६६ अरु निवृ क्षी १ - मुन्ना १४ करन । १९५५ । १५ छित्र ক্রামী করে। কথার কথা বালে সিলেন্ডিল, 'मिलिट (डागाव क्यिर, भार भाषा जा 36 **图解 38**8

राज: वना भाग जा। जा। त्राम-जाक कार्यन श्रामक जाति सामि समामी, मेर्रामक (छ। श्रामी सरे। ब्रोम । क्लिब मुब्रामी कि मी, छाँदै ब्रुशानि कंन्द्रा ! ভার পর শ্রান্তর কবিকারী হরে, রাজাকে সংগ্ विषयः काएए दर्गतः हो लोखा महकात्र जुनि থকলা করো, আহর ও দেহ পশা কর্ম না। তোগার ক্ষরতান্ত তো কলেরা মানি, শিকতক বরে ছিল না, চেন্ডার বা গর্ভত্তী হয়েছিল। 🕒 म्श्राकाम । अस्ता थूटहो--करले अस्ता, --भर्यास्म থাকলে প্ৰামে প্ৰকল্মার কথাৰ।

িউভানে প্রধান ট

শংরা ৬%কাঠে মাহান্ত হোক আঞ্চাদিত, ্যাহ হোক চিতার নির্মাণ i आलि इरेड मुझाहाती थे हीन अरहरन भदरम्ह कई रवन रुव गृहसीरक ; जिक्क कार्मि जिक्का गाहि कतिरव धर्वा अधिएत, राज मम इंड खेळालिक, দগ্ধ করি মাতৃকাল।

> [সহসা ভদকাঠে প্রনেত আছোদিত ও অগ্নি প্ৰাত্তিক ছংল:

व्यक्ति शक्षाक

्र कामकथ--काशंखादभवीद गाँगिकि । অভিনৰ ওপ্ত, তৎৰিশ্ব ও গলা ঠি বৌশ্ব কাপ লিকগণ :

वस्तित । शास्त्र, नावकान चार्ष्ट् क्लात १ छन्। मर्ग सहस्त कहा। (क्षां? न्द्रहेताहै। तहा ८१ দিনকার জাজনাল এক্তি, শক্তি মানুবার চায় নি, প্ৰশীতে ঠেকছিলো । কামৰণ ভিনান্তার ্রার বাবিদ, গোন, নৃষ্টা ভোতা করা। করা क्रिक वशह्य ।

अमें दिश्य । योच, विनि देशन मुख्यमाद्वानी व्यवस्त विनि गांन मुख्या अव अविन-रेक्सन, भीत, देशमः चायः गार्थशङ्ग, त्य त्य मन्त्रीनारम् व्यापान वाकि ता शास हिने, मुकरत श्वालिक हरे শক্ষাবৰ শিক্তৰ প্ৰহণ করেছে। মাজা হুণুৰা कथाक्षीन करेल अथारन य लोच कार्यानिक,

জৈন প্রভৃতি আছা হাবে লাছে, জানেত, বিনাশ্যাধন কছে। আমন্ত্রা প্রায়ন ক'রে ভারতের এক প্রান্ত হ'বে অপর প্রায়ে এনে আপনার শরণাপর হয়েছি।

অভিনৰ। ভাশই করচ, মহামারীর প্রসাদ শান্তি থাহো, চক্র কর্তি থাহো, শৃষ্ট্রাটাকে আদ্তি দাও, তখন বোঝবার পার্বা—পর্যায়াম কেডা! এইন বাও — নিশ্বিষ্ক হয়। বাসায় ব'স ঘট্যা। জন্ডা কিনের ৪ দ্যাথবা এনে শৃষ্ট্রনা আইমা পদনেবা কর্বা

বেছিল। প্রাত্ত, আমরা আপনার শিষা, আমাদেব রক্ষা ভার আপনার উপর।

अञ्चित । १-र--वन्ति (य-निन्धि ह्या श्राप्त । [तोक काशांतिकशांव अञ्चल ।

শিব্য। কর্তা, আগনি শক্ষরার দাখ তর্ক কর্বার চাও না কি ? অমন কাজে বাইও না,
মান খোরাবা—কলান। মূই তার তর্ক দ্যাথ ছি,
কথার তোর উঠতি থাবে, টিক্বে কেডা! ডাই
বল্তেছি, একটা উপার করো, তর্কে বাইও না।
অতিনব। হ—হ—ভন্ছি বড় ডার্কিক,—ভন্ছি
বড় ডার্কিক।

শিষ্য। যা শোন্ত, তা পাকা জানবা। জাভিনব। তুমি কি কুষুবার সলা দাক গ

শিষা। জোমার নি মারণ আসে ? একটা রোগ চাইণা নিয়া শর্মইরার শরীবের মধ্যে প্রনেশ করাও।

অভিনৰ। ঠিক বল্চো—ঠিক বল্চো—ওই বগদর বোগট। চালমু, যথপার চোটে এ লাপ ছাইরা রর নিবে।

শিব। মারণ কর্বার চাও না ক্যান্?
অভিনব। তার বিল্ল আছে। ওন্তি বর বেলি,
তার মারণে বিল্ল অইনেই আবান মন্ত উপস্থিত
হইব। ওই কর্কচ কাবানিক বারণ চাইনাছিলোঁ, বিল্ল হওয়ার তারে তৈরের মাইরে
পেলাইটো ওই ব্যক্ত রৈণ চারন ক্রব।

निमा। जान्त्रको स्थानक जान्यक मानक नक्ष्येन वार्रकर स्थापात हुन किए। जन्मा আছি। আইন্ডা, তৃষি এহানে গ্রন্থ, বাল্যা কুর্যাটি আছি। কাইণ বাইবা বিচাৰ কৰ্ম। বিভান বিষয়ে জালো ভাগো—কাইল আগ বিচাৰ ক্যাইট কেডা। বসক্ষাের আগাডেই অভিন কর্মেই

(भक्रतां जारा । अ मधन मित्यत प्रतिन

শহর। জাপনি কি জাচার্য্য অভিনব শুরু ? শিষ্য। না, আমি তাঁর শিধ্য, চিনি এইন পুলার জাহেন।

শঙ্কর। আগনি আমার এই শিষ্যকে ঠার নিক্ট লয়ে বান, আমার মন্তব্য আচার্য্যের নিক্ট প্রকাশ কর্বে।

প্রিং। সাজ্য, চলেন। (প্রগ্রুত) এইনই ট্যায় পাইবেন অনে।

্ মন্তন মিশ্রকে লইয়া শিধ্যের প্রায়ান।
(কামাথ্যাদেবীর প্রবেশ)

শছর। যা, তুমি কে ?
কামাধ্যা। আমি এই স্থানে থাকি। শোনো,
তুমি রুগা পরিপ্রম ক'রে এ দেশে এমেই। এ
কণ্টাড রী বামাচার আদেশে দরল অবৈত্তপত্যা
গ্রীত হহলে না। তুমি পুনর্বার মধ্যেশে করা
গ্রহণ ক'রে বিফুলীলার সহায় হবে, তখন এই
বামাচার দমিত হরে অবৈত্যার্গ গ্রহণ করবে।
(অস্তর্বান)

শন্ধর। মা কামাব্যানেরী কি প্রভানকে ক্রুল্ দিনেন : হননীর আদেশ শিরোধার্য।

(अनमतं वराधिव अत्वन)

শদর। তুমি কে।
বাাধি। আমি ভগন্দর ব্যাধি, আজনত অপ্তের
অভিচাতে প্রেরিত ক্রছি। কিছ অধুমতি
বাতীত অপনার দেবদেহে প্রবেশ কর্তে

প্রকার কেন, দেহমাত্রই তে ছোমার অধিকার ৪ বানি হৈ স্কৃতি, নিজাপ শরীরে তেও লামানের

নিজাপ নিজাপ নই, আমি কগতের পাত-শিক্ষিক কাল করেছি তুমি আমার নাগি। প্রাকৃত থক তের পাপে গ্রহণ করেছেন দত্য,
কিশ্নের পাপে আগ্রেম্য অনুমতি ভিত্ত আপা
নাকে শর্ম কর্তে পাতে না। স্থান আমরা
আমি, অক্তি লাংগা ব্যক্তি জন্ম না লান আমরা
আমি করি নাই। আমার বিজ্ঞেন এই ব্যক্তি
প্রতিকে প্রথের প্রশিক্ষাকরে সাম্প্রতিক বিজ্ঞান করিছে।
বিশ্বিক্ষাকরে ক্রেম্বিক্রি জ্বেম্বিক্রি করি সাম্প্রতিক বিজ্ঞানির বিজ্ঞা

শাণে সা তাতে স্মৃতি বনবিদ্যা ব্যর্থ হবে। এ বিপ্তা প্রেল্ডিস, আমি প্রান্থ-ক্রমার্থে অনেছি, প্রেমিট বর্তন্য নাত একো কামি পাপকে অন্যান পরীর অভিকাশ কর্তন প্রাঞ্জিত জিল ভাগ ব্যাভীক প্রমণ্ড নাল হল না, ক্লাতের প্রেপ্ত ভাগ আমান্ত প্রীনেই ভাক্ত

বিয়ানি। প্রভূ জগতের সদক্ষ ধর বৃত্তু সাংগণি। সভাগ, আমি দের কেন জন-আনিতবারী স্থান করেছেন।

শীর্মর । তেন্ত্রের জ্ঞান্ত্রিক্তর নত, । তেন্ত্রের আনুষ্ক প্রশাস্থ্যদেশে কর্মবৃদ্ধি তেবেশ করে। আনু নেলের সাম্পন্ন সেন্ত্রেরেশ কর্মে। ভিন্তের প্রস্থান।

यर्ग शहाङ ४

在1000 对一 单20015时刻于 \$T\$\$\$ 1

সমস্থার প্রশ্ন জন জন্ম বিশ্বস্থার সংক্ষম । বিশ্বস্থার সংক্ষম ।
বিশ্বিক বিশ্বস্থার বিশ্বস্থার প্রস্থার ।
বিশ্বস্থার বিশ্বস্থার বিশ্বস্থার বিশ্বস্থার ।

্মক্তন। ভাগ, নগত আমানের পালার দেব-ফলা প্রজনের কাল) হয় পাপ প্রথা কবিব গাই ব্যাহিদিশা ভোগ ২০০১ত আহা, দেখ কাল-ন্তাহণার জালাল সভাগ দীন হয়ে-জালা সাহিদ্যালয় বিভাগ সভাগ প্রজন

্**স্ন**স্কৃত প্রভাগ প্রভাগ জুটী জন চলচন্ত্র চাল্লে**ড্রেন,** নিজ্ঞান্তর ভারতার জিলা**প্**র এই জনচ (হস্তামশক ও শ্রুরানেব্যার প্রবিশ একং হস্তামশকের ক্যব্যোগ্রে শ্রুরান্যব্যার সমূহে সপ্তামদান)

শন্তব : কি হস্তাননকে /

१३।। अक्, सामात्र कार्यना पूर्व कतन्।

শহর। তুমি আকালের **জান্ন** নিশিপ্ত পুরুষ, ভোনারী আবার পার্থনা কি দু

रखा । तकू, कार्चि व्यानमार्व माम, प्यामात नेत्रमां क्यादर माः

শংর তাহ, তোমরা শোন শোন আন্ধ মোনী গোমগণ আমার নিগট কি প্রার্থনা করে। আননা গুরুদের, গোপনার নিকট তো বছ বস্ত

শ্বর। এ বাড়ুলের প্রার্থনা কি জানো ?

আনন । আলানি ভত্তানী, আলিনিই আনেন।

শ্বন । আরে প্রার্থনা রোগ তোমাই কিরপে
প্রশান ক্রপে ?

ক্সা! প্রভু, আজা কর্মন, খনামি আকর্ষণ কারে।

শহাস। (বাজ্যভাবে) নানা হস্তামধার, ছেনির প্রীয় রোগগ্রস্ত হ'লে আনি বেরের বছণ্ড সংগ্রহা শক্তাম ধ্যাবা গাবে।

হলা। ভাই প্রাণাদ, ওরদদের আম, র প্রাণি বিশোধ । ওরদদের অভিচার-বিভারে সর্বাদ্ধন প্রতিক্রাইন প্রথের অভিচারে ক্রান্তর ব্রোগ্রন্তর হলেনে। তেন্তর টিকিংসকেরা আ বোল শাল্টি কর্তের অক্ষা।

শ্রন্দম । ভার্ন ভূমি বিসলে সংব্যা পেরে চু

হত। রাজনৈত্ত্তা সন্তঃ বলার আমি ঘাছিনী-কুমারবহনে সামোন করেছিলান। তাঁদের নিক্ট ধ্যাদ প্রান্ত হলেম, তার্কে প্রান্তিত হল্বে ভয়ে, অভিচার কাঁকে গ্রন্থদেশকে এই খল রোগগ্রস্ত ক্রেন্ড

শ্বন্ধন । কুসি এখন ও ছরাচারকে তথা করে। নি এ । হয় । গুলাবের নিমেন, ভাই স্থামি নিয়া শ্রীরে রোগ-এমনের প্রার্থনা ক্ষিত্র।

यमन्त्रमः । । १ कि. कुट १५ हवा मिह्नपाः सामि अञ्चलितः । शुरुषात समिति सद्दिशिकालेई वरुमः सन्दर्धाः कुर्वासिः ह কণটাটারীয় আগবধ কর্তে নিরস্ত হব ন। হে গুক্ত টেক্স মন্ত। ভোমার প্রভাবে থক রোগ অভিচারী অভিনৰ শুখের শ্রীরে তাবেশ ক্রুক্

্র (অভিনৰ খণ্ড ও তংশিকার থাবেশ)

অভিনৰ । তাহ তাহ— আমার অভিচারের বনচা তাহ —বুগৰুরে বেরে কেলেচে ! (প্রকান্তে) শক্ষরা কেডা ? মৌমি তর্ক কর্বার আইটি।

সনন্দন। হৈ শুলবাধি, যদি এই দত্তে ওঞ্চদেনের শরীর ত্যাগ ক'রে এই পশুশরীরে প্রবেশ না করো, আমি অভিচারীর সহিত তোমার বিনষ্ট কর্বো।

আভি। (অধীর হইরা) ওরে বাপ্রে—বাপ্রে— মইরাম রে—মইরাম রে—গালোম!—

শন্ধর। স্থির হোন্—স্থির হোন্—কি হরেছে ।
আভি। আমারে কমা করেন, আমারে রক্ষা করেন।
ওরে গ্রালাম রে—গ্রালাম । মইবে চড়্যা আমারে
মারবার আইদতেচে —কনে যাবু

शननान । यमान्द्र यो 3 ।

[সশিষ্য অভিনৰ গুপ্তের পলায়ন।

শকর। প্রথাদ, কি কর্লে? ভোমার বাক্য ভো ব্যর্থ হবে না, নরহত্যা হবে যে?

সনন্দন। প্রভু, গণ্ডহত্যা সামান্ত পাতক, আপনার দশনে আমার দেহে স্থান পাবে না। হুটের নরণে গৃথিবীর ভার লাঘর হবে, অপ্রেনেশে গভীর সভীর রক্ষা হবে, অভিচারীরা এই পণ্ডর পরিলাম দর্শনে ভীত হয়ে আর ছরও ক্রিয়ায় প্রবৃত্ত হবে না। আর আমি আপনার নাম ব্যরণ ক্রে ক্রেন্স্ন সমাজকে আমির্কাদ ক্রিচ, বে শ্রের্কীনা আলোচনা কর্বে, ভার প্রতি

निराभग । अत्र सत्रक्षी नेकतानात्वाक कर्

প্ৰত । বংশ, সকলে প্ৰস্তুত হও, প্ৰ প্ৰেক্তে আৰু দেৱ কাৰ্য্য সমাধ্য, আমন্ত কাৰীৰ সাক্ষ্যত ব্যৱহ কন্ত্ৰো। যেনন স্তৰীৰ প্ৰায় ক্ষমতা সংক্ৰম ক্ষ্য, অধুনীপে বেনুপ্ৰ জ্বান্ত ক্ষ্য সেইক্ত প্ৰায়ত্বৰ্গ মধ্যে প্ৰায়ত্বিক ক্ষ্যত नस्तिक्या अकानिनी यात्रमालनी विद्रायक्रीनी व्यवहें भक्षाण गममार्थ अवत २७।

ियागान्य अवस्

কত দিনে হবে মান কার্যা প্রবস্থান, কর্মভূমে কত দিন করিব ভ্রমণ ।
ধ্যা মহানারা—
ধ্যা এ ভৌতিক দেহ মারায় গঠিত, চৈত্যা আছের বার অন্তুত প্রভাবে !
প্রায় গঠিত দেহ না হইবে কর কার্যা অবদান বিনা ।
বলবান কার্য্যের আদালি অপ্তাব, !!
বিল্লা বা অবিল্লা মারা উভাতী প্রভাব প্রবিল্লা আরা অবিল্লার প্রচেদ বেমতি
বিল্লা আর অবিল্লার প্রচেদ বেমতি
বিল্লা আর অবিল্লার প্রচেদ দেরপ ;
উভয়ই বন্ধন,
কার্য্যে কার্যাক্ষ্য বিনা বন্ধন না বার ।
কে বলিবে কত দিনে কার্য্য ক্রাইবে !

(গোড়পাদের প্রবেশ)

ত কি, আমার পরম মৌভাগ্যের উদয়। 'ওক গৌড়পাদের পাদপত্র দর্শন করলেম। গৌড়। বংস, তোমার চিস্তায় আমি আক্রিত ; আমার পরম গুরু ব্যাসনেবের দর্শনিকাত করেছ, তীক্ত থাদেশে ভাষা প্রচারে প্রবৃত্ত হরেছ, তোমার স্বাধী সম্পূর্পার। তোমার ভাষ্যপ্রচাকে জবর্ম শার-ব্যাথা খণ্ডিত হয়েছে, প্ৰাকৃমি ভাইভের এক প্রাপ্ত হ'তে অপর প্রাপ্ত প্রস্থান প্রচান প্রচান রিত। তোমার বেদান্তভাষা রাজীত বৌদ্ধনন খণ্ডিত হতো না। ভগবানু নারাফ বৃদ্ধারীরে राम अशीकांत्र क'रत र्यात्रिमच चालन करत्रहिरतन, टिमित उपाउ के थेठाँद देवनगर्गामा तका स्ट्राइ ; বৌদ্দান বে বেবের অন্তর্গত, তা তুমি সংগ্রমাণ करतह। देखांमात यह कार्याहे अवसिंह या छ, न्याचीनग्रमस्य कार्याः भूगं इत्त । छथात्र राज्यम्यो বিশ্বভিদানন হাপিত। সেই বিশ্বভিদাননে উ र्वनन कंद्राः मध्यादा त्यातंत्र कदत्ति त्य, त्टामान व्यविक शक्षा टिल्म । দৰ্শজ বাজীদ বিশ্বা-क्रिंगितः फेश्रदमातन काला अधिकात गारे। मार्क्षक भागवाजिए ्यान्द्रियः

পতি গণাকে পরাজিত ক'বে অজাবনি মন্ত্রন্থাটিত
দক্ষিত হার উদ্ভাপুর্বার্ক আন্তর প্রহণ করে।
পতি ভবগের পরাজরৈ সকলের প্রতীতি জনাবে
ে তুলি গর্বাজ্ঞ । তোমার মতত প্রকৃত যোক্ষণার
ব'লে গৃহীত হবে। আমান নরে যোক্ষাকিতে
দলিয়া মান্তির স্থান অভিক্রম ক'রে আচিরে
৮খন উপস্থিত হও।

শ্যান। প্রান্ত, আপোনার পারে। কৃতার্য হলেম।
আমার আগ্যা শিক্ষণ নয়, আনানান আথাসবাকো
্ ব্রীতি হজে আনানান করণে শতকোটি
গুলিনার।

ক্রেট্র। ক্রে, বন প্রার্থনা করে।

বাধার। পাত্র, জাগানার পশাস লাভি করেছি, আমার আমার বর সার্থন। কি দু আজিন কর্মন, নিবার ক্রেক্টেরেনিম্ম বাহিছি।

গৌড়। ভথাস্থ

ি**প্রা**ক্তান্ত্র

(१७२ विस्तर सामा)

মণ্ডম । তথ্য রাজা তুপ্রা জ্ঞাপনার নির্দিত থা প্রে উপ্রসিত জ্ঞানেত

শহর ৷ বংব, মনাবাদী গ্রেম্ম ব্যাস্তীত তেও অসম স্বাহেম্বর ব্যাস্থ্য নাই ৷ চলো—বাজদর্শনে গ্রাম ক্রিং

সিভাবের প্রভান চ

দশম গর্ভাল

काकील-माता, तारे।

ধন্দির কো। এইদি দ কান্দীনের চৌরব, বীলালাই কান্দির কান্দের কার্দ্রের হালার স্থানী বালে কিন্তু হলে গুলাই সন্দিরের হালার্দ্র বিন্তু হলে গুলাই সন্দিরের হালার্দ্র বিন্তু হলে গুলাই কিন্তুর হলে কলে কান্দিরের হালার্দ্র বিন্তুর হলে কলে কান্দিরের কান্দির আন্দের কান্দির আন্দের কান্দ্রের কান্দির কান্দ্রের কান্দ্রের

প্রনত মন্তকে এই বালালের শার প্রিরোগ জক্তেন। শার মান কি মাছে কে প্রান্ত এই বালক কি নর্বজ্ঞ ? যার বিশ্বাভিয়ানিন কি অধিকার কথ্যে ?

(कराक्षम शिक्षतकत खारान)

সম পণ্ডিত। মহাশ্র মর্মনাশ। কে এ কুহনী।

এর সন্মুথে বাক্শক্তি বিজড়িত। বৈশেষিক,
নৈয়ায়িক, সৌগত, মীমাংসক প্রভৃতি কাষিতীর
পণ্ডিতগণ পরাপ্ত হরে বার পরিসাণি করেছেন।
গাংখা, দার্শনিক, যাঁর বিজয়-পতাকা এতাবং
কাল গর্গে উড্ডীয়ুমান ছিল, তিনিও সম্মানীব নিকট প্রাক্তর স্বীকার করেছেন। পিগুরুরপ্রী
প্রার্গি করেছেন, কিন্তু তার উপ্তম নিশ্চর
বিকল হবে। বালবের তর্কশক্তিতে কাহারও
গ্রনাভের আশা নাই।

হর প্রতিত। এখনও দেখুন—দ্ধিপ্রার কর্ম।
নিপ্রেরপ্রী সাধারণ প্রতিত নন, তিনি নিশ্চমই
বালককে নিবর কর্বেন। মা **সারদাদেবী—**নিজ সিংহাসন নিজেই রক্ষা করবেন, বিদ্যাণি
ভদ্রাসনের গোরব বন্দা নই হবে না।

দৈবৰাণী: না

্র পণ্ডিভ। বি লোন—দৈববাধী পোনো।
ম পণ্ডিভ। বি দেখ—দক্ষিণদার উল্যাটিভ।

(ছাৰ উদ্বাহিত হৰন -শক্ষরচাৰ্য্য ও স্মন্দ্ৰন, মঞ্চন মিশ্ৰ, আনিবৰ্গাৰি, তভাটকাচাৰ্য্য, হ**ভামনক,** চিংগ্ৰন, শান্তিকাম, গণপতি প্ৰভৃতি শিষ্যগণের প্ৰবেশ)

শিশাংশ। এম সর্বজ্ঞ বৃতীশন শর্মবাচাব্যের জয়।
মন্দির-রক্ষক। এই কি শুসরাচার্যা ও পরিক্র
বিজ্ঞান্তদ্রংসন কি এই বালক কর্তৃক অধিক্রভ হবে ও দিববানীন কি নিখা। ও প্রস্তাচার্যার প্রতি) পরিভ্রত্বর, জাপনি বিজ্ঞাবলে শুন্তি জ্ঞানিক পরান্ত ক'রে পশ্লিশ্রার উল্লেক করেছেন, কিন্তু মানায় নিবত করণন। বে ব্যক্তি কর্তৃত্ব পারে লা। বেশ্বন ত্রকানে ক্রিকাস করা ক্রেক্র পারে লা। বেশ্বন ত্রকানে ক্রিকাস করা ক্রেক্র শিরিক্র। ক্রিকান ক্রেক্সান্তি ক্রেক্রিক্র নো বশরশারী হার কাছি বে, জনমাগালর নিমিত জাপনি প্রকাষে প্রবেশ করেছিলেন। জন্মবে জাপনার আলকিবজিত চিত্ত মানি কিরপে অবগত হব ? সে গরিচর খা পেলে, এ শারলাপীঠে বিশ্বা-ভ্রাগানে আপনাকে হান দিতে আনি প্রস্তুত নই। মারের কপার আনি এই হানবকার নিযুক্ত আছি।

ভোটকানায়। আপনি সাৰবাদেনীর পীঠ-রক্ষার
নিষ্ক থেকেও কি নিমিত এরপ কমেভিক ভাষা প্রয়োগ কচেন। স্থাপি পূর্বজনে কেউ শুদ্র থাকে, পরজন্মে রান্ধণ হরেও কি তাহার বেদে অধিকার হয় না।

শ্রুর। হে মহারুন, আনি আয়ার আনু ভৃত্তির
ভল্প এই আসনে উপবেশনে ইচ্ছুক নই। আনি
দেবদেব মহাদেবের আদেশে বদান্তভাষ্য প্রেছত
করেছি। নারারগররূপ ব্যাদদেব ভাষ্যপাঠে
ভাষার উপর শৃষ্ঠ হয়ে ব্রপ্রদান করেছেন।
তথাপি জনস্নাতে সর্বান্ত ব'লে যদি আমি
প্রামাণা না ইই, তা হ'লে আমার ভাষ্য জনদ্যাজে গৃহীত হবে না। এই আসনে আন্যাভ
স্ব্বিভাতার পরিচয়। মাম দেবদেবের আজ্ঞাম্থবর্তী হয়ে আমার ভাষা প্রচারে প্রবৃত্ত। যদি
রুত্তবার্য হতে থাকি, সারদানেতী স্বরং আমার
স্থান দান করবেন।

দৈৰবাণী। বংগ, তুনি একমাত্ৰ এই আসনের যোগা, অসংহ্লান্তে কান্ত্ৰ গ্ৰহণ কৰো, জোমান্ত উপবেশনে আস্তান্ত নৰ্যাদা বৃক্ষিত হবে।

নামর। দার্শনিক থাইগতে।,
কুটবৃদ্ধি মানবের নিরাস কারণে,
দমিবারে চার্কাক সকলে,
দেশকাল অনুসারে কংরতেন দর্শন রচনা।
ব্যোগমার্গ কর্মার্গ আদি
বিরচিত সমন-উচিত প্রয়োজনে।
থাব মুক্তিপথা প্রসারিত ঈশব-কণার।
কোলাইরের অর্থ জগতে প্রচার,
আহার প্রকাশ, অবিভা বিনাশ,
বিশ্লেক জাত্ম-লব্দন,
ক্রিকার স্কানী প্রকাশ কুরনে।
নির্দিশ্ল কার্মানারে ক্রিকে গ্রিষ্
ক্রিকার ক্রিনানার

মা সারদে তব পীঠে

সমা কার্য্য হোক্ সনাধান।

(শংসালার্য্যার সালদাপীতে উপবেশন

লালির হজক। প্রাকু, প্রভানের সপ্রাব মাজনা
করন। আপনি চে কান জানমন্ত্র শঙ্কর,
মঞ্জানতাবশতং তা আমার উপস্থার হন্ত নাই।
স্বাজ্ঞ হতীর্ব্য, আমার প্রপাশ এইণ কলন।
এতদিন সাবেশমাতার গ্রান্ন-বক্ষর সিলেম;
আন্ত ত্তি আপনার কার্যা-বক্ষর বিশেষ্ট

শহর। পঞ্জিবর, আমার আসন নছ, জননী সন্তানকে ক্রোড়ে স্থান শিলেছেন মার । মণ্ডার আসনের আপনিই যোগ্য বন্ধক।

সকলে। প্রব নরশন্ধর শিল্পবাচার্ট্যে কর !
শহর ৷ হে নিরক সর্নাসিগণ, এখনো, প্রচারকার্ট্য
সম্পন্ন হল নাই। তোনরা দেশপেশার্করে এই
অহিল ভাগ প্রচার কলো। জানি কেন্যরনাথ
দর্শন কারে কৈলাস দর্শনে ইচ্ছুক। তোমানেও,
নধ্যে যারা আখার সঙ্গী স্বাব ইচ্ছা ক্রেন্-

् गक्स्यद श्रिश्मा ।

একাদশ গভাস্ক কৈলাস-সন্নিকটম্ব পর্বক্তপ্রনেশ। (মহামায়াক প্রবেশ) গাঁও।

कर करित्र आत मि विना क छोटन कि त्वहुना छाति विहरन वित्रह शाणा थरत थरत शाला त्रहिर्द नीत्रव विकरनः नग्रनशति मिमां छ नीहारत, थन शांन मिन श्रवरन, अमत्रकांश क्लान मिना छ, कान्य कांग्रा मिन श्रवित्रहन मुख्यांन श्रवरन विता शांनिशांन, आनि आधि नहे, आर्थ आर्थ संग्रह स्थान्यहे,

মিছার কেন বা সই— বিফল আশা ক্ষম-মান্তে রাখিব কেমনে যতনে ॥ (গশশভির প্রায়েশ)

গণপতি। (সাজ) ও বে বাপ রে। টেই কাপা-শিক বাটার ক্ষিতা। এখানে কি কব্তে মরতে এলো। পালাই—বেটা না নেখে।

মহা বাবা,--শোন-শোন-

গণ। কেন বাছা,—তুমি পরেব মেয়ে—পবের বউ, আমি সম্যাসী মান্তধ, কেন তোমার কথ। শুন্রবাণ

মহা। আমি গে তোগাদের মা, আমার কথা ওন্তে া নাহ

গণ। মা অছে মাই আছি, ভূমি ভাগ্য ভাগর পথ দেখ, আনিও ভাগ্য ভাগ্যপথ দেখি। আর বাছা, ভোমার পালায় পড়ছিনে।

महा। त्यांन मां, ज्ञांगांत अन्त मध्यांन निक्रि।

গ্ৰা কে -বাই ভোমার কাণ।লিক ? সে বেট।

অন্ধা পেয়েছে, তা জানো না বৃঝি ? তাই
আমায় ধৌকা নাগাতে এয়েছ গ

মলা: ভূমি কি মনে লগুল আমি লৈ তো নই, আমি যে একানকে নতি না। তোমার চোল সকা করেছে, আমি ওলানক ভাগ খুলে দিকে অসেছি। জুনি আমার কে নাম করেছ গুআমি সেনই, সে শোনার বিবালা, আমি তোমার স্ববিধ্যা।

গণ। বাহা, তোমার আর মনাণিবিতে কাজ নাই।
মহা। বাবা, আমি না গথ হেন্দ্র দিলে পণ বেব্তে
পাবে না। তোমার চোণের আবেশ এখনো
হোচে নাই। তুনি এখনো তোমার ওজাকে
চিন্তে পাবল নাই। তাই তোমায় বল্তে
ধ্বেছি, তোমার ওজ মান্ত্র নার, তোমার ওজ মাজান শহর। এই কবাটি মনে রেখ, ভা
হ'লেই ভূমি মোজপ্রাত হবে।

পুন। (স্থগত) না, সে বেটা তো নয়। (প্রকাঞে) ্তুমি কে. মা ?

भशं। वाता, आभि वास छ छ। उप एक भाइएत मा।
टक्त प्रति विस्ति के भावत है। आपि एक दिन सन्दर्भ,
दक्ष तिम किन्द्र ।]*

विश्वमिद्धान श्रिक्षास । ----

* [तान । তাহি তো—তাই তো, আমি বেদ কাই এক একম সব নেগছি। আমি নিজিত না জাগরিত। আমি কোথার, জামার প্রীক কি হলো। এ সব বি । গুলুকেব—গুলুকেব চরণে হান দাও।]*

(মণ্ডন মিশ ও সনদানের প্রবেশ)

সনদন। অন্তাব্ধি ভাবতবর্ধের সমস্ত প্রতিত্তি মণ্ডলীকে প্রাজ্য ক'রে কান্সীরের লারনাপীতি বালেনীর সিংহাসনে উপবেশন কর্তে কেব্ট সমর্থ হন নাই। 'গুলুদেব যুগন সমস্ত প্রতিত্তিন মণ্ডলীকে প্রাজ্য কর্লেন—অকস্মাৎ দেববাধী হলো—"বংব, আনার আসনে উপবেশন কর্বার তুনি একমাত্র বোগা। আমার আজ্ঞার আসন গ্রহণ ক'রে ভারতবর্ধে 'সর্ব্জ্ঞা' নামে প্রচানিত হও।" ভাই ত্রেবর, সমত্ত ভারতে অবৈত্ত মত স্থাপিত, পুণাভূমি জ্ঞানহর্ধ্যে আলোকিত। ভাই, তুমি জ্ঞানন্দ-সংবাদে নীগ্রনিখান ভাগি কর্লে কেন প্র

মঙ্গ। তন ভাই, অন্তর বিকল কিবা হেতু।

ভূষার আবৃত পোর পর্বাত-প্রদেশ,

নিত্য রঙ্গনীতে-
বামাকণ্ঠে কেবা করে সকরণ গান ?

যেন কোন নারী বিহেন্বিগুড়া,

মনোব্যথা কছে এই জনশুন সানি ?

দেখ দেখা, নারীমূর্ত্তি কে অগ্রথামিনী ?

সমন্দ। হতেছে শারণ,
পূর্বে ধেন এই মূর্তি করেছি দর্শন।
আছিলেন গুলাদের এবে পরকারে,
নাহি পাই কোনসতে রাজ-দর্শন,
অকস্মাং রূপা কবি আমি এক নারী—
সঙ্গটে করিল মাতা উপায়-বিধান।
ধ্রেরি অবয়র মম হয় অন্থমান,
অগ্রানী রমণী-মূর্তি সে স্থায়ী।
নহা হিতৈগিনী সেই জননীবর্ত্তপা,
তাহে কেন অনিষ্ঠ আশাহা কর তৃমি প
মণ্ডন। নহে এ সামান্ত নারী হয় অহমান।
প্রধান। প্রকৃতি।
নহাশক্তি ধরি নারী-কার্য ক্রমেন ধরার।

उँ। व वितर-मणीएक इस स्व हिएक

দীলা কুঝি অবসান-পায়; অভিয়ে বাঁ শিবলাক হয় সংমিলিও :

্শস্করাচার্য্যা, শালিসাম, ইস্কানকান, জনমন্দ্র্যারী, ি ইপ, ডোটকান্দ্রান উত্ততি -শিল্পান্ত্র ওলন্ত্রন

পাছি। পাছ, প্রান্ত দেবুল, অক্সাই নিটিপুর্ক তেল মাবে বলিল উনিত হতে। পানু, নিজন, তেথায় বিশাদ হ'বে গালে।

শক্ষা । মা বংশ, নগৰতী দিৱপ হ্ৰামেন্নী সোঁত তোমনা লাজুৰ শীনত ক্লিই ধৰ্মেন্ন, দেই নিমিত্ৰ এই উচ্চ এক্ষেত্ৰ বিনিত্তিৰ হ'বে উপিন্ন জবন্ধে। এই উক্তৰাক্তন ব'ব বিন্ধু ক্ষাড্ৰা বাৰ্ত্ব না গ্ৰহণ ক্ষাড্ৰা কৰিব। সাই ।

ন্নন্দন : গুজ্, সক্ষতি আন্দল্য করণী। গুলা বাবিদলবাবা, কুমি লিখ, জামি ক্লেম্ভি, শ সামায় ব্যৱহৃত্ব

নশ্বর ও প্রক্রের গদর্শক কি ক্রেন্ত্র সাক্ষর । স্বাহর সাক্ষ্য প্রক্রের বিশ্বর ব্যাস

শ্বিষ্ঠা বাংশা ও জান্ত্রীয়া এটা শে ক্রানির নাত্র ও ক্রানিক্ষার বাংশা শ্রন্তীজনাতি ক্রানির ভাতা ও

মন্দ্র হাঁ পানু, সামি এক দ্বতন চাই কথাই শাহিষক—্রাধ ক্তেন কোন ব্যবিষ্টি সুনে সুইপোচৰ হ'লো।

শন্তর টিনিই জালার গদাবে তানোলন ফাবার উনিই ভালাধ নাবাব গাঁল এবে নাবার জন্ত প্রশাহন । বংশ, আহ আমি কজাক ক্যাক ফার্ম্বন ক'লে ধ্যোক্তি

িবিক্ত আছে কি নিশ্বক জ্বল আন্তর্গত আন্ধান লেক বলিজ্ঞাপত জলিল আনন্ত আনন্ত আনন্ত নিজ অপেটিকটি নকন্ত্ৰিতেই আন্ধান স্বভাবক শক্ষর । বংশ, কারে পরিস্থান ক্রাক্তি । তেতির দেন ক্রানে আনার ভাল প্রাপিত। তেতির স্মানার দ্বন গণেকা বিষ চোলাদের সামি শেই জানার ধর্ণা লব্ড। সংশ চলোল ক্রান বেলা ক্রি চিন্তা ক্রো। গ্রমণ করি বিজ্ঞি কর্ণা বিশ্ব ক্রো।

यो भाषा करें

1.7本"物"

क्रियान विकास के अपने मिर्ट हरू होती।

প্রকর। ধানে, নরতীক। স্বর্গান মন ; ি ক্লিক্সার্গাত্ত্বান্ত ভোনের সকলে,

र कर **स्ट**स्ट्रान्ट

বেল প্রকৃতি করে বেল

क्षिं भरमात्न,

মন্ত্র করিও প্রা**রণ।**

१७०० १८५० भागानि **नीना मरतद्रा कर्रामन** १९४१ भागान्। कराण शताना ।

শ্বর । সংযা, ধেদ পরিত্যাগ করে। রে **ধ্রে** ক্রেন্ডেডা হবে, জোন, লাসেই **ক্রেন্**ই **জামস্থ** নুগান উপস্থিত হ্বা প্রস্থা**রে, নিয়ন্তই আমা**ন নের নগম কারে।

(न्यायह सर्वाण)

कुण सं प्रश्नित स्वाम (१००) अम्बन्धानी वार । १ वनक तर से पिति से १०० जाती के प्रश्नित । १ वन नार्गात स्वाह असी क्रमा क्रमा बालाय विकास से स्वाह की स्वाह क्रमा का विकास की से साम का कर पास्त्री, किया प्रश्नित कुमा स्वाहित । विकास का कर पास्त्री, किया प्रश्नित कुमा स्वाहित